सज्जन जिन - वन्दन निधि

सम्पादन

आर्या शशिप्रभा श्री जी

प्रकाशक :
मत्री,
खरतरगच्छ श्री सघ
साचोर (जालौर-राजस्थान)

वर्ष : 1992

संस्करण प्रथम

मूल्य . सुष्ठुपयोग

मुद्रक मै डायमण्ड कम्प्यूटर्स, जयपुर द्वारा कम्पोज्ड तथा
मै टेक्नोक्रेट आफसेटर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित।

संयोजन : गतिमान प्रकाशन, जयपुर-3

समर्पण

जिनका हर वचन जीवन-ज्योति को प्रज्वलित करने में समर्थ है।
जिनका पथ-प्रदर्शन मेरे लिए सदा वरदान स्वरूप है।
जिनका प्रत्येक उद्बोधन आत्म-जागृति के लिए प्रकाश-स्तम्भ रूप है।

ऐसी अध्यात्मयोगिनी, आगम-ज्योति प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया स्व गुरुवर्या श्री सज्जन श्री जी म सा की पुनीत स्मृति को सादर समर्पित ।

चरणरेणु,

आर्या शशिप्रभा श्री

परमश्रद्धेया प्रवर्तिनी
श्री ज्ञान श्री जी म सा

पूज्या प्रवर्तिनी श्री
सज्जन श्री जी म सा

पूर्वस्वर

पूज्या प्रवर्तिनीश्री की सदैव प्रेरणा रही थी कि बहिनो की सुविधा के लिये देववंदन विधि पुस्तक का प्रकाशन होना चाहिये लेकिन पूज्या महाराजश्री के सम्मुख पुस्तक मूर्तरूप नहीं ले पायी। अब यह प्रकाशन महाराज श्री की तृतीय पुण्य तिथि पर हो रहा है।

'सज्जन जिन-वंदन निधि' में आगम-ज्योतिश्री द्वारा रचित चैत्यवन्दन स्तवन आदि संकलित है। कुछेक अन्य कवियों द्वारा रचित रचनाएं भी है। चौबीस चैत्यवन्दन व नवपद चैत्यवन्दन आदि को इस संग्रह में विशेष रूप से लिया गया है, क्योंकि वह पूज्या आशु कवयित्री जी की अन्तिम एवं महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। ये कृतियां पूज्या महाराजश्री ने अपनी जीवन-संध्या में मौन एकादशी के दिन ही पूर्ण कर हमें सौंपी थीं तथा निर्देश दिया था कि इसे व्यवस्थित उतार दो।

आपश्री बचपन से लेकर जीवनपर्यन्त अध्ययन-अध्यापन लेखन-सृजन में अनवरत संलग्न रहीं, इसलिए पूज्याश्री की चहुँमुखी प्रतिभा दिनानुदिन समृद्ध बनती गयी व उनकी रचनाओं में आधिकाधिक निखार आता गया।

पूज्या गुरुवर्या श्री की प्रेरणा को साकार रूप देने का जो विनम्र प्रयास किया गया है हमें विश्वास है कि इस अमूल्य निधि की प्रेरणात्मक रचनाओं को अपनी आराधना के स्वरों में मिलाकर भक्तजन आत्म-विभोर हो परमात्म-स्वरूप पाने के उपक्रम को सफल कर पायेंगे।

इसी शुभेच्छा के साथ ओ३म् शान्ति।

शासन सेविका,

आर्या शशिप्रभा श्री

प्रस्तुति

'सज्जन जिन-वन्दन निधि' में ज्ञानोपयोगी अद्भुत सामग्री का सग्रह किया गया है, जिसकी आवश्यकता प्रत्येक तपोनुष्ठान में होती है तथा विगत तीन-चार वर्षो से जिसकी कमी महसूस की जा रही थी। क्योकि, प्रत्येक तप में देववन्दन करना जरूरी होती है। किसी मे एक बार और किसी में तीन बार। साधु-साध्वीजी की निश्रा में जो तप किया जाता है उसमे तो वे स्वय आवश्यकतानुसार सारी क्रियाये करा देते है, पर उनकी अनुपस्थिति मे देववन्दन आदि क्रियायें कौन करावे, यह प्रश्न सदा सामने रहता था। इसी का समाधान करने हेतु प्रस्तुत पुस्तक की आवश्यकता समझी गयी और आगमज्योति स्व प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्री जी म. सा. के निर्देशानुसार उन्ही की प्रमुख शिष्या मधुर व्याख्यात्री विदुषी आर्या श्री शशिप्रभाश्री जी म सा ने इसका सुष्ठुपकारेण सम्पादन कर एक बहुत बडी कमी को दूर करने का सफल प्रयास किया है।

'पुण्य स्वर्ण ज्ञानपीठ' के सभी सेवक स्व. प्रवर्तिनी श्री जी एव श्री शशिप्रभाश्री जी म सा. के प्रत्यक्ष आभारी है।

आराधकों से आत्मभावेन हार्दिक अनुरोध है कि वे प्रस्तुत पुस्तक का पूर्ण रूप से सदुपयोग कर तपोनुष्ठान के द्वारा आत्मविकास का मार्ग प्रशस्त करे।

इन्हीं शुभकामनाओ के साथ हार्दिक अनुमोदनार्थ प्रकाशन,

पुण्य स्वर्ण ज्ञानपीठ,
जयपुर

निवेदन

पुष्प की सौरभ प्रत्येक प्राणी के मन को आकर्षित करती है। शरद पूर्णिमा की शीतल चाँदनी सभी के दिल को लुभा लेती है। अगरबत्ती की मधुर सुगन्ध वातावरण को सुवासित बना देती है वैसे ही अध्यात्मयोगिनी आगमज्योति स्व प्रवर्तिनी महोदया श्री सज्जनश्री म सा का जीवन जन-जन के मन को आनन्दित करता था। आज भी उनके गुणों की अनुपम सुवास प्राणियों के रोम-रोम को दिव्य सौरभ से भर रही है।

पूज्या श्री के अलौकिक गुण-सौरभ से सुरक्षित हो रही है उनकी प्रमुख शिष्या मधुर वक्ता विदुषीवर्या श्री शशिप्रभाश्री जी म सा जिनका जीवन त्याग-तप-संयम से ओतप्रोत है। जिनकी वाणी में ओज है। सहज सरलता व मृदुता है। उनके गुणों से अभिभूत साचोर संघ के १५-२० सदस्य चातुर्मास की विनती करने हेतु पूज्या शशिप्रभाश्री जी म सा की सेवा में पहुँचे। यद्यपि हमारी भावना २-३ वर्षों से थी पर भाग्योदय के बिना पुण्य अवसर का लाभ सम्प्राप्त नहीं हो पाया। हमें प्रसन्नता है कि अब की बार हमारी प्रतीक्षित भावना ने साकार रूप लिया। पूज्या श्री ने आग्रह भरी विनती को स्वीकार कर हमें चातुर्मास का स्वर्णिम अवसर दिया। विदुषीवर्या पूज्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी एवं सहवर्तिनी पूज्याश्री शीलगुणा श्रीजी तथा पूज्या संयमप्रज्ञा श्रीजी को भेजकर चातुर्मास में चार चाँद लगाने का धन्य अवसर प्रदान किया। आपश्री के परम शुभाशीर्वाद से महाराज श्री का यह चातुर्मास हर सम्भव सफल रहा। चातुर्मास में विविधि प्रकार की तपस्यायें रविवारीय धार्मिक शिविर सामूहिक प्रवचन आदि अनेक सुन्दर व ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए, जो साचोर संघ की अविस्मरणीय ख्याति बन गये हैं।

महाराज श्री जी की सद्प्रेरणा से प्रस्तुत 'श्री सज्जन जिन-वन्दन निधि' पुस्तक प्रकाशित करने की भावना जागृत हुयी जिसमे पूज्या श्री ने एक अनुपम खजाने का, अर्थात् सविधि तप, देववन्दन विधि, चौबीस चैत्यवन्दन, स्तवन-स्तुति, प्राचीन स्तवन एव सज्झाय आदि का सग्रह कर श्रावक-श्राविकाओ पर असीम उपकार किया है। आराधक वृन्द प्रस्तुत पुस्तक का सदुपयोग कर आत्म-लाभ सम्प्राप्त करे, इन्हीं शुभेच्छाओ के साथ,

विनीत,

खरतरगच्छ श्री संघ

सांचौर

□□□

अनुक्रमणिका

□□□

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ सघ

साचौर (सत्यपुर)

(जालौर-राजस्थान)

ट्रस्टीगण की नामावली

सज्जन जिन-वन्दन निधि

श्री देववन्दन विधि

श्री बीसस्थानक चैत्यवदन

'इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि'

तीन वार इस प्रकार कहकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करूँ इच्छं --कहकर बायां घुटना ऊंचा करें और हाथ जोडकर चैत्यवदन करें

विंशतिपद आराधना करती आत्मोत्थान
सर्वोत्तम पद इस विश्व में, तीर्थंकर भगवान ॥१॥

इक-इक पद की साधना कर बनते भगवान
अनुपमपद अर्हन्त विभु अतिशयवन्त महान ॥२॥

सुख सम्पत्ति सम्प्राप्त हो दुःख दुर्गति का नाश
'सज्जन' पाते भव्यजन अनुपम ज्ञान प्रकाश ॥३॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए जाइ जिणबिंबाई-ताई सव्वाइं वंदामि ॥१॥

णमुत्थुणं

णमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवर नाण - दंसण-धराणं विअट्टच्छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं-बोहयाणं मुत्ताणं

सुख निधे भगवान हरिपूज्य हे, सुखद शक्ति कृपा कर दीजिए।
करम शत्रु हराकर मै करूँ, तव पादाम्बुज पावन सेवना ॥३॥

ज किंचि नाम तित्थ सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइ जिण विवाइ, ताइ सव्वाइ वदामि ॥१॥

णमुत्थुणं

णमुत्थुण अरिहत्ताण, भगवताण ॥१॥ आइगराण, तित्थयराण, सयसवुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवर पुडरिआण, पुरिसवर गधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाणं, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाणं, मग्गदयाण, सरणदयाण, वोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवर-चाउरत-चक्कवट्टीण ॥६॥ अपडिहयवर-नाण दसण धराण विअट्ठछउमाण ॥७॥ जिणाण-जावयाण, तिन्नाण-तारयाण, वुद्धाण-वोहयाण, मुत्ताणं-मोअगाण, ॥८॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयल-मरुअ-मणत, मक्खय-मव्वावाह, मपुणराविति, सिद्धिगइ नामधेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण जिअभयाण, ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले। सपई अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१०॥

अव खडे होकर ' अरिहंत चेइयाण ' वोलें

अरिहत चेइयाणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए वोहिलाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥३॥ अन्नत्थ उससिएण, निससीएण, खासिएण, छीएण, जभाइएण, उड्डुएण, वाय निसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अगसचालेहि, सुहुमेहि खेलसचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहि, ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं,

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का कायोत्सर्ग करें।
पश्चात् निम्न स्तुति कहे।

बीसस्थानक स्तुति

बीस स्थानक में गुणि गुण भेदा भेद
ध्याता जो ध्यावे निर्भय भाव अखेद।
तीर्थंकर पदवी पावे पुण्य प्रधान
वंदूं विधियोगे त्रिकरण शुद्धि विधान ॥१॥

कायोत्सर्ग पारकर प्रकट लोगस्स कहे

लोगस्स

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउविसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइंच पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपूज्जं च विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभियुआ विहुयरयमला पहीण जरमरणा चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे अ लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आईच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण वत्ति आए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए,

॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे। काउस्सग्ग पारकर 'णमो अरिहंताणं' कहकर चौथी स्तुति कहे ·

हरिपूजित श्री जिन, शासन वासित भाव,
भवि वीसस्थानक, साधन पुण्य प्रभाव।
सुर असुर उन्हीं के, होय सहायक आप,
फैले त्रिभुवन मे, साधक पुण्य प्रताप ॥४॥

अब नीचे बैठकर बाया गोडा ऊचा करके 'णमुत्थुणं' कहें ·—

णमुत्थुणं

णमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरिआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग हिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवर-नाणं दंसणं धराणं, विअट्टच्छउमाणं ॥७॥ जिणाणं-जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं-बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वनूणं, सव्वदरिसीणं, सिव्वमयल-मरुअ-मणंत-मक्खय- मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगई नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

अब खडे होकर 'अरिहंत चेईयाणं' बोलें

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण वत्तिआए पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए-ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग पारकर 'णमो अरिहंताणं' कहकर 'नमोर्हतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य' कहे फिर प्रथम स्तुति बोलें

निरमल आतम भाव प्रकाशक कारक क्षायक भावी जी
जिनपद वर्धक कर्म निकन्दक बीस स्थानक पद सेवी जी
जिनवर सहुजे स्थानक सेवे, एक अनेक भव तीजे जी
आराधक ते साधन-भावे मन वांछित सब सीझे जी ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगर धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं चउविसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअल सिज्जंस वासुपूज्जं च। विमल मणतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ विहुयरयमला पहीण जरमरणा। चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया जे अ लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर वर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

॥३॥ जाव अरिहताण, भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव काय, ठाणेणं, मोणेण, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे। काउस्सग्ग पारकर 'णमोअरिहताण' कहकर चौथी स्तुति कहे .

शासन रक्षक समकित धारी, जे सहु सुर सुखकन्दा जी,
सानिधकर जो ए तप करता, वधते भाव अमन्दा जी,
श्री जिनलाभ सूरीश्वर शाखा, श्री कुशलेन्द्र गणिन्दा जी,
तस पद सेवक मगलपति गणि, जपे श्री वालचदा जी ॥४॥

अब नीचे बैठकर बाया गोडा ऊँचा करके 'णमुत्थुण' वोलें. .. .

णमुत्थुण, अरिहताणं, भगवताणं ॥१॥ आइगराण, तित्थयराण, सयसवुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुडरिआण, पुरिसवर गधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, वोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवर-चाउरत-चक्कवट्टीण ॥६॥ अपडिहयवर-नाण दसण धराण विअट्टछउमाण ॥७॥ जिणाण-जावयाण, तिन्नाण-तारयाण, बुद्धाण-वोहयाण, मुत्ताण-मोअगाण, ॥८॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयल मरुअ मणत, मक्खय मव्वावाह, मपुणराविति, सिद्धिगइ नामधेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण जिअभयाण, ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले। सपई अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥१०॥

जावति चेइयाइ उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाई ताइ वदे, इह सतो तत्थ सताई ॥१॥

'इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसिहिआए मत्थएण वदामि' कहकर 'खमासमणा' लगाए, पश्चात् -

जावत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ
सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदड विरयाण ॥२॥

'नमोअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य' इतना कहकर स्तवन बोलें

श्री बीसस्थानक स्तवन

(तर्ज - केसरिया थासू प्रीत करी रे)

तीर्थंकर वंदो तारे दुःख वारे तिहुं काल में ॥टेक॥

अनुपम आतम दर्शन योगे परमातम पद ध्याने
जल में कमल रहे ज्यों जीवन साधक पद सनमाने रे
तीर्थंकर वंदो ॥१॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हो जिन शासन रागी
आधि-व्याधि-उपाधि मुक्त हो भाव सुखी वड भागी रे
तीर्थंकर वदो ॥२॥

तीन भुवन उपकार भाव कल्याण मित्र जयकारी
पुण्य महोदय गुणी महाशय अविकारी अवतारी रे
तीर्थंकर वंदो ॥३॥

बीस स्थानक महा साधना साधक निज भव तीजे
उत्तरोत्तर सुकृत सुख भोगी प्रभुत्ता गुण रस भींजे रे
तीर्थंकर वंदो ॥४॥

संघ चतुर्विध तीर्थ थापते अद्भुत अतिशयधारी
तीर्थंकर वर नाम कर्म को सफल करे बलिहारी रे
तीर्थंकर वंदो ॥५॥

जनम-मरण जीवन कल्याणी जग कल्याण विधाता
तीर्थंकर जिन दर्शन पाऊं धन दिन पुण्य प्रभाता रे
तीर्थंकर वंदो ॥६॥

प्रभु दर्शन परमारथ पूरण जो कर पावे प्राणी
ज्योतिर्मय जग में वह पावन खोले निज गुण खाणी रे
तीर्थंकर वंदो ॥७॥

श्री चतुर्विंशति जिन चैत्यवंदन

श्री ऋषभ जिन चैत्यवंदन

नाभि नृप कुल नभ रवि, मरुदेवी के नन्द
श्री ऋषभेश्वर जिनपति, पूजत परमानन्द ॥१॥

स्वर्ण वर्ण जिनराज का, धनुशत पच देहमान
आयु लक्ष चौरसी पूर्व, अष्टापद शिवस्थान ॥२॥

सुखसिन्धु भगवान ये, त्रैलोक्य के आधार
पुण्य से पाये ज्ञानपद, 'सज्जन' करे नमस्कार ॥३॥

श्री अजित जिन चैत्यवंदन

विजया जितशत्रु तनय, तीर्थंकर गुणवान
अजित अजित पद दे मुझे, कर करुणा भगवान ॥१॥

करे पराजित नही कदा, मुझे मोह अज्ञान
ऐसी शक्ति दीजिये, धरू धर्म-शुक्ल ध्यान ॥२॥

पुण्यानुबन्धी पुण्य से, पाया दर्शन आज
ज्ञानज्योति 'सज्जन' हृदय, जागृत रहे जिनराज ॥३॥

श्री संभव जिन चैत्यवंदन

सभव जिन प्रणमू सदा, मन-वच-तन एकतान
करके भक्तिभाव से, धरू सदा तुम ध्यान ॥१॥

सभव जिन सभव करे, असभव सारे काम
सभव मेरी मुक्ति हो, नित प्रति करू प्रणाम ॥२॥

अनन्तकाल से कर्मवश, चतुर्गति मे नाथ
भ्रमण किया अब मेट दो, 'सज्जन' जोडे हाथ ॥३॥

श्री अभिनन्दन जिन चैत्यवदन

अभिनन्दन जिनराज का, अभिनन्दन कर आज
धन जीवन धन तन वदन धन्य सफल सब काज ॥१॥

पूर्व पुण्य प्रभाव से, मिला अपूर्व संयोग
रत्नत्रय आराधना कर पाऊं शुभ योग ॥२॥

प्रभु स्मरण संजीवनी, मेटे भवभव रोग
ज्ञानालोक में स्वरूप का 'सज्जन' करें उपभोग ॥३॥

श्री सुमति जिन चैत्यवदन

सुमति जिन! सुमति सदा करे कुमति का नाश
सन्मति आविर्भाव हो होवे आत्म विकास ॥१॥

कुमति नहीं आवे कदा यही मागूं कर जोड
सुमति संग से सबल बन कर्म बेडी दूं तोड ॥२॥

परम श्रेय साधन करूं पुण्य स्वर्ण संयोग
ज्ञान विचक्षण क्षण मिला 'सज्जन' साधूं योग ॥३॥

श्री पद्मप्रभ जिन चैत्यवदन

पद्मप्रभ जिनराज का पद्म समान सुवर्ण
अनन्त गुणो की सुगन्ध से भरा हुआ सम्पूर्ण ॥१॥

समीपस्थ प्राणी सदा बन जाते गुणवान।
दूरस्थ भी नाम से जिन सम बने महान् ॥२॥

ऐसा श्री जिनराज का अद्भुत अमित प्रभाव।
धन्य-धन्य 'सज्जन' वही विकसित करे स्वभाव ॥३॥

श्री सुपार्श्व जिन चैत्यवंदन

जयपुर नगर विराजते, श्री सुपार्श्व जिनराज
धन जीवन धन दिवस यह, वने नेत्र धन आज ॥१॥

मनमोहन प्रतिविम्व का, दर्शन कर सुखकार
भवभव संचित दुरित सव, नष्ट हुये इस वार ॥२॥

पुण्योदय हुआ पूर्वकृत, जिन स्वरूप का भान
करके 'सज्जन' मन सदन, हुआ प्रकाशित ज्ञान ॥३॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन चैत्यवंदन

अम्वर शहर विराजते, श्री चन्द्रप्रभ देव
चन्द्रद्युतिमय विम्व है, सुरनर करते सेव ॥१॥

मुख मुद्रा मन मोहनी, अर्द्ध चन्द्रसम भाल
पद्मासन ध्यानस्थ प्रभु, प्रतिभा अति ही विशाल ॥२॥

जन्मकृतार्थ हुआ आज मम, दर्शन से आनन्द
कोटि कोटि वन्दन करू, 'सज्जन' मिटे भव फन्द ॥३॥

श्री सुविधि जिन चैत्यवंदन

श्री तीर्थंकर देव है, सुविधिनाथ भगवान
पुष्पदन्त भी आपका, श्रेष्ठ अपर अभिधान ॥१॥

शुभ्र श्वेत सुन्दर छवि, जैसा उज्ज्वल दुग्ध
निर्दूषण भूषण त्रिजग, देख चक्षु हुये मुग्ध ॥२॥

सुविधि से ही प्राप्त हो, आत्मनिधि तत्काल
सुविधि सह करे साधना, 'सज्जन' कटे भवजाल ॥३॥

श्री शीतल जिन चैत्यवन्दन

शीतल जिनवर पूजना, हरे पाप सन्ताप
भौतिक दैविक आत्मिक मिटे शीघ्र विषय सन्ताप ॥१॥

अद्‌भुत शीतलता मिले शाश्वत सिद्धि स्थान
ध्याता को सम्प्राप्त हो अनुपम दर्शन ज्ञान ॥२॥

जिसका पुण्य अनन्त हो मिले स्वर्णमय योग
ज्ञान ज्योति मन में जगे 'सज्जन' मिट भव रोग ॥३॥

श्री श्रेयास जिन चैत्यवन्दन

श्रेयस्कर श्रेयाँस के पद कज करूं प्रणाम
प्रातःकाल यह पुण्यमय अवसर है अभिराम ॥१॥

श्रेय जो चाहों आत्म का छोडो विषय कषाय
संयम तप और त्याग ही निश्चय से सग्राह्य ॥२॥

श्री श्रेयांस जिनेश का यह ही है उपदेश
पुण्य स्वर्णमय ज्ञान ही 'सज्जन' चाहे हमेश ॥३॥

श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवदन

वसुपूज्य नृपनन्द है वासुपूज्य भगवान
राग रहित पर रक्त तन तीर्थंकर पुण्यवान ॥१॥

विषय कषाय विरक्त हो जो प्रभुपद अनुरक्त
तनमन धन अर्पण करे वह निश्चय से भक्त ॥२॥

हुण्डावसर्पिणी काल यह पंचम आरा आज
शक्ति हीन निष्पुण्य हैं 'सज्जन' सुधारो काज ॥३॥

श्री विमल जिन चैत्यवंदन

विमलनाथ हे विगतमल, निर्मल आत्म स्वरूप
सत् चित् आनन्दमय सदा, अनुपम अद्भुत रूप ॥१॥

आतम द्रव्य पर्याय सब, , स्वगुण रूप का भोग
अविरल रूप से कर रहे, स्व का ही उपभोग ॥२॥

प्रभु सेवा से प्रकट हो, मेरा आत्म स्वभाव
स्वरूप मे ही रमण हो, 'सज्जन" मिटे विभाव ॥३॥

श्री अनन्त जिन चैत्यवंदन

श्री अनन्त भगवान है, अनन्त गुण भण्डार
अनन्त चतुष्क विराजते, शोभा अपरम्पार ॥१॥

अनन्त ज्ञान दर्शन सहित स्वरूप रमणतानन्त
अनन्त वीर्य प्रकट हुआ, घाति कर्म किये अन्त ॥२॥

अर्हत् तीर्थंकर प्रभु, स्वयम्बुद्ध भगवान
'सज्जन' जन उपदेश से, करे स्वरूप का भान ॥३॥

श्री धर्म जिन चैत्यवंदन

समवसरण मे धर्मनाथ, रत्नसिहासनासीन
चामर-छत्र विराजते, सुरनर भक्ति मे लीन ॥१॥

योजन विस्तृत वचन सुधा, भव्य जीव कर पान
अजर अमर बन प्राप्त कर, अनन्त सुखो की खान ॥२॥

सद्दर्शन सज्ज्ञान ही, सदाचरण ही धर्म
धर्मनाथ प्रभाव से, 'सज्जन' मिले शिवशर्म ॥३॥

श्री शांति जिन चैत्यवंदन

शान्तिनाथ शान्ति करो हरो सभी सन्ताप
चरण शरण दो अनाथ हूँ आप ही है माँ-बाप ॥१॥

गर्भवास रहे नगर की महामारी की नाश
मेटो मेरे जन्म-मरण काटो कर्म के पाश ॥२॥

शरणागत हूँ नाथ तुम, शरणागत प्रतिपाल
दो 'सज्जन' को शान्तिसुख अपना विरुद संभाल ॥३॥

श्री कुन्थु जिन चैत्यवंदन

कुन्थुनाथ भगवान है तारक जग विख्यात
पांचों अंग नमाय के करू सदा प्रणिपात ॥१॥

अमृतमयी प्रभु देशना सुनें सुरनर तिर्यंच
समता मैत्री भाव धर, छोड़े वैर प्रपंच ॥२॥

अहिंसा की पूर्णता हो रही यहाँ प्रत्यक्ष
'सज्जन' कहे नही अन्य देव प्रभुवर के समकक्ष ॥३॥

श्री अर जिन चैत्यवंदन

अर जिन वन्दूं विनय से अट्ठारहवें अरिहन्त
स्वर्ण वर्ण तनद्युति लसित चौतीश अतिशयवन्त ॥१॥

प्रभु जहाँ विचरें सुर करें कनक कमल नव वृन्द
भ्रमण करत पगतल रहे, नमें तरुवर सुरइन्द ॥२॥

द्वादश योजन अवनि पर न ईति भीति दुष्काल
अद्‌भुत अर्हत् प्रभाव है 'सज्जन' नमत त्रिकाल ॥३॥

श्री मल्लि जिन चैत्यवंदन

कुम्भ नृपति कुल कमलिनी, विकसन रति समान
प्रभावती कुक्षी सरसि, राजहसी सम जान ॥१॥

परिणय हेतु आये नृप, षट् को दे प्रतिबोध
सब ही अनुगामी बने, आत्मभूमि कर शोध ॥२॥

सर्वत्याग के मार्ग पर, जिस दिन किया प्रयाण
घाति चतुष्क क्षय कर लिया, 'सज्जन' केवलनाण ॥३॥

श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यवंदन

श्री मुनिसुव्रत धरे, करे कर्म-घन नाश
सर्वदर्शी सर्वज्ञ बन, करे सत्-तत्व प्रकाश ॥१॥

नवतत्वों के स्वरूप का, वर्णन करे जिनेश
सूत्र रूप से गूथते, लब्धि श्री गणेश ॥२॥

द्वादशागी मे प्रमाणनय, षड्द्रव्य गुण-पर्याय
'सज्जन' प्रणमत मनन से, भेदज्ञान हो जाय ॥३॥

श्री नमि जिन चैत्यवंदन

तीर्थपति श्री नमि प्रभु, चतुर्मुख दे उपदेश
चार भेद करे धर्म के, धर्म दायक धर्मेश ॥१॥

दान शील तप भावना, करते करते जीव
क्रमश करता विकास है, ये है उन्नति नींव ॥२॥

सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, पाता सम्यक्ज्ञान
करके सम्यग् आचरण, 'सज्जन' ले शिवस्थान ॥३॥

श्री अरिष्टनेमि जिन चैत्यवदन

बाल ब्रह्मचारी प्रभु अरिष्टनेमि जिनराज
सती राजीमती साथ मे परिणय करने काज ॥१॥

तोरण तक आ फिर चले सुन पशु करुण आक्रन्द
शिव रमणी का वरण कर बने सच्चिदानन्द ॥२॥

कोटिकोटि वन्दन करूं श्रेष्ठ वर्ण घनश्याम
दर्शन से शीतल नयन 'सज्जन' मन अभिराम ॥३॥

श्री पार्श्व जिन चैत्यवदन

श्री चिन्तामणि पार्श्व जिन, चिन्तामणि से श्रेष्ठ
चिन्ता चूर्ण कर भक्त को दे सुख सर्व सुज्येष्ठ ॥१॥

श्री सम्मेत शिखर गिरि पार्श्वनाथ के योग
प्रसिद्ध हुआ श्री पार्श्व हिल नामांकित संयोग ॥२॥

कणकण बना पावन पुनीत स्पर्शन से सुखकार
'सज्जन' भव्य ही लाभ ले पावें पद अविकार ॥३॥

श्री वीर जिन चैत्यवदन

शासनपति श्री वीर जिन कायरता कर दूर
तनमन भर दो वीरता करूँ कर्म चकचूर ॥१॥

शुद्ध बुद्ध बन सिद्ध बनूं, यही है मात्र अभीष्ट
मिथ्यात्त्व कषायादि रिपु, मिटे अनादि अनिष्ट ॥२॥

कर्म अष्ट अति कष्टकर नष्ट करो भगवान
शक्ति की अभिव्यक्ति का 'सज्जन' को दो दान ॥३॥

श्री चौवीस जिन स्तुति

(श्री मज्जिनहरिसागर सूरीश्वर जी म.सा. विरचित)

श्री ऋषभ जिन स्तुति

वृषलछन कंचन, काया अद्‌भुत रूप
मरुदेवा नदन, जगवदन जग भूप।
नृप नाभि कुलाम्बर, अबरमणि अनुरूप,
नित वदू भावे, निज गुण दाव अनूप ॥१॥

कर्मो की काली, घटा अनादि काल,
आतम सूरज के, आडी अडी कराल।
कर ध्यान पवन से, विघटे प्रकटे ज्योति।
सिद्धातम वदू, जगे चेतना सोती ॥२॥

नैगम आदिक नय, निर्भय भाव विशेष,
प्रतिवादि भयकर, जिन आगम सदेश।
सुनकर आराधू, साधू आत्म प्रदेश,
स्वाधीन सुखो का, स्वामी बनू हमेश ॥३॥

जिन शासन पावन, सुखसागर भगवान,
'हरि' पूजित जग मे, करुणा गुण परधान।
आराधक जन की, आधि-व्याधि-उपाधि,
वारे चक्रेश्वरी, देवे परम समाधि ॥४॥

श्री अजित जिन स्तुति

सार्थक नामा श्री, अजितनाथ भगवान
विजया जितशत्रु, सुत गुणवान महान।
गजराज विराजे, चिन्ह चरण जयकार
अजरामर महिमा, मय वन्दू अविकार ॥१॥

है द्रव्य सरूपी चेतन एक अनत
कर्मों ने घेरा भव-वन में भटकंत।
ससारी सयम दिव्य साधना साध
सिद्धि गति पाये वदू अव्यावाध ॥२॥

त्रिभुवन उपकारी गुण अनत भडार
प्रवचन जिन शासन सागोपांग उदार।
प्रमाण प्रमाणित नि सर्ग श्रद्धामूल
गुरुगम आराधूं, शिवसाधन अनुकूल ॥३॥

सुखसागर भयहर अजित अजित भगवान
'हरि' पूजित पद्वी बोधिलाभ दे दान।
तसु शासन देवी अजितबला शुभ नाम
भक्तों को बल दें पूरे वांछित काम ॥४॥

श्री सभव जिन स्तुति

सुखसागर संभव जिननायक भगवान
प्रभु परम दयालु स्वयबुद्ध विज्ञान।
जितारिसेना नंदन नंदन सार
वन्दन कर भावे, करूं भवोदधि पार ॥१॥

घाती कर्मों का मर्म भेद प्रस्ताव
गुणठाण सयोगी, केवल ज्ञान प्रभाव।
अवलोकें लोका-लोक त्रिकालिक भाव
अरिहंत नमूं नित श्री अरिहत पददाव ॥२॥

शुभ समवसरण में प्रवचन पुण्य प्रबन्ध
प्रकटावें प्रभुवर तीर्थ कर्म संबंध।
पुण्यातम प्राणी निज पुण्योदय सार
तीरथ आराधें तिर जावें संसार ॥३॥

जिन शासनवासित अध्यातम अधिकारी
श्री संघ चतुर्विध पुण्य प्रभावक भारी।

उनके सहधर्मी, सुर 'गणपति हरि' आप
शिवमार्ग सहायक, हो हरते संताप ॥४॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तुति

जिनवर अभिनदन, अभिनदन मै आज
करता हूं स्वामी, सुन लो गरीव-नवाज।
प्रभु पदपकज मे है मेरा अनुराग
दो मुझको प्रभुवर, सेवा सुखद पराग ॥१॥

क्षायिक वर मगल, भाव रमण गुणधारी
क्षायिक लब्धि से, सुखसागर अविकारी।
आतम परमातम, पदवी पाये धन्य
नित ध्याऊं उनको, तन्मय भाव अनन्य ॥२॥

अरिहत अरथ से, उपदेशे गणधारी
सूत्रो मे गूथे, श्रुतज्ञानी उपकारी।
क्षायोपशमिक वर, भावे प्रवचन सार।
आराधक पावे, शिवसुख अपरपार ॥३॥

जिन परम दयालु, स्वयबुद्ध भगवान,
शासन दिखलाया, धारे भवि गुणवान।
सुर 'गणनायक हरि' गावे महिमा नित्य,
दुःख दोहग मेटे, प्रकटावे सुख सत्य ॥४॥

श्री सुमति जिन स्तुति

सुमति दो सुमति, स्वामी सुमतिनाथ
सुमति शक्ति बिन, मै हू दीन अनाथ।
कुमति का घेरा, भटका काल अनाद
सुमति देकर अब, दूर करो अवसाद ॥१॥

है सुमति कारण सुखसागर भगवान,
सेवक जन पावें, सुमति ज्ञान महान।
वह ज्ञान अनुक्रम होत अनंतानंत
प्रस्तुत ज्योतिर्मय वंदूं श्री अरिहंत ॥२॥

सुमतिपूर्वक ही सम्यक् हो श्रुतज्ञान,
जहाँ रहें अनन्ते गम-पर्याय प्रधान।
उपदेश दयामय संयम-तपमय धर्म
सेवूं सुमति श्रुत, पाऊं मैं शिवशर्म ॥३॥

'श्री जिनहरि' पूजित आज्ञालम्बी जीव
मजबूत बनावें, निज जीवन गृह नींव।
सुर ललना ललिता उनके प्रति अनुराग
धारें जग फैले पावन सुमतिपराग ॥४॥

श्री पद्मप्रभ जिन स्तुति

निश्छद्म अशठ जो, धीर वीर गंभीर
श्री पद्मप्रभु को सेवें वे नरहीर।
छद्मस्थ पने से रहित होय तत्काल
उनसे छूट जावे, काल महा विकराल ॥१॥

कर्मों ने घेरे आतम द्रव्य प्रदेश
परतंत्र दशा में पाते रहे हमेश।
बल वीर्य पराक्रम दिखला कर स्वाधीन
जो सिद्ध हुए हैं, नमूं भक्ति में लीन ॥२॥

नवजीवन दाता रसमय रत्न प्रधान
गम भंग विराजित धीवर जन सुस्थान।
मर्यादा पूरण पावन रूप महान
आगम सुम सागर, सेवूं विविध विधान ॥३॥

भगवान दयालु 'जिन हरि' पूज्य विशेष
जन बोधिविधाता, शासन विगत कलेश।
आराधक चउविध, सघ महोदय सार
सम्यग् दृष्टि सुर, असुर करे जयकार ॥४॥

श्री सुपार्श्व जिन स्तुति

सप्तम जिन वदू, श्री सुपार्श्व भगवान्
भय सातो भागे, जागे जीवन प्राण।
सुखसिधु तरगो, मे भवभावी ताप
वह जावे पावे, आतम शाति अमाप ॥१॥

वीस स्थानक तप, भव तीजे आराध
जिन नाम करम शुभ, बाधे अव्याबाध।
तीरथ वर्तावे, दया-धर्म अधिकारी
तीर्थकर वदू, वीतराग जयकारी ॥२॥

षट् द्रव्य जगत मे, ज्ञेयादिक परिणाम,
रूपी व अरूपी, आपरूप अभिराम।
ज्ञानी गुणखाणी, जाणे परतिख भाव
अनुयायी परोक्षा-गम उपदेश प्रभाव ॥३॥

'श्री जिनहरि' पूजित, शासन भाव अनेक
अराधे भविजन, अनुपम पुण्य विवेक।
शासन रक्षक सुर-सुरी करे नित सार
दुख हर भर देवे, सुख-सपति भण्डार ॥४॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तुति

निर्दोष महोदय, सकल सुवृत्त सुगीत
मित्रोदय महिमा, पूर्णोल्लास पुनीत।
अमृतमय अद्भुत, निष्कलंक गुणधाम
श्री चंद्रप्रभ जिन, वदू भावोद्दाम ॥१॥

आतम सुखसागर, लीन पीन गुणवान्
स्वाधीन परमपद, सेवो श्री भगवान।
अपुनर्भवभावी सिद्ध वधू सिरताज
वंदूं चिरनंदूं, सिद्ध सिद्धि सुख काज ॥२॥

है धर्माधर्माकाश, अरूपी अजीव
पुद्गल है रूपी चेतन लक्षण जीव।
ये पांचों अस्तिकाय विशेषी काल
है छट्ठा धनधन जिन आगम की चाल ॥३॥

'श्री जिनहरि' पूजित, त्रिभुवन नायक देव
आराधक बुद्धे करते भविजन सेव।
सुर असुर करे नित उनकी सेवा सार
दें शुद्ध समाधि बोधि विशद विचार ॥४॥

श्री सुविधि जिन स्तुति

सुविहित विधि से जो सुविधिनाथ भगवान
पूजें तब धूजे कर्म महा बलवान्।
प्रभु पूजा के हैं द्रव्य भाव दो भेद
पूजक जन के जो दूर करें सब खेद ॥१॥

है नाम थापना द्रव्य निक्षेपा भाव
ये चारों सच्चे तात्विक वस्तु सुभाव।
जिन माने इनको सिद्ध स्वरूप विचार
नहीं हो सकता है नमो निक्षेपाचार ॥२॥

प्रभु नाम को रटते आवे भाव उदार
प्रभु प्रतिमा दर्शन में त्यों अधिक अपार।
है द्रव्य निक्षेपे भूत भविष्य विचार
जिन आगम गावे सुनो सुधर नरनार ॥३॥

गुणसिंधु दयालु परम पूज्य भगवान
श्री जिनहरि पूजित बोधि धरम गुणमान।

आराधक अविरल, भाव भविक दुःख पीर
हरते सहधर्मी, सुर वर कर तदवीर ॥४॥

श्री शीतल जिन स्तुति

शीतल जिन सेवा, सुखसागर की खीर,
भवि भक्त जनो की हरती भवभय भीर।
प्रभु कारण पद मे, कर्तापद उपचार,
कर सविनय माँगू, दो प्रभु समकित सार ॥१॥

सापेक्ष जगत में होते है व्यवहार
नही बाधा उनमे , होती करो विचार।
अस्तित्व तथा जो, नास्तित्वादिक भग
निज-पर भावों से सेवो सिद्ध सुरंग ॥२॥

निजपद से अस्ति, पर पद नास्ति विशेष
ये प्रकट धरम सब, रहे द्रव्य में वेश।
है अवक्तव्य, समकाले सत भग
जिन आगम गुरु गम, प्रकटे ज्ञान अभग ॥३॥

भगवान महोदय, 'जिनहरि सूर' समान
शुभ बोध बतावे, लय लावे गुणवान।
सुर असुर उन्ही की, पीड़ा करते दूर
कारण पद मे रह, चमकाते है नूर ॥४॥

श्री श्रेयांस जिन स्तुति

श्रेयांस प्रभुजी, श्रेयो गुण भण्डार
सतसगी जनता, क्रम से तन्मय तार।
जोड़े न करम के, रोड़े अडे लगार,
लट भवरी न्याये, एक रूप बलिहार ॥१॥

वरकाल-लब्धि का, होने से परिपाक
हो भव्य सुभावी नियती-कर्म विपाक।
पुरुषार्थ अहिंसा-संयम-तप को धार
हों स्वयंबुद्ध नित वंदू जगदाधार ॥२॥

ये पाचों कारण मिलते अपने आप
आतम की ज्योति बढती अतुल प्रताप।
"नहीं एक चने से हरगिज फूटे भाड़"
जिन आगम गावें, पांचों को लो ताड़ ॥३॥

अनहद सुखसागर है आतम भगवान्
'श्री जिन हरि' पूजित सेवो सुखद विधान।
सुर असुर सहायक होवें हो कल्याण
मिट जाय अनंती अंतराय संतान ॥४॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तुति

वन्दूं प्रभु वासु पूज्य पूज्य भगवान
पूजक जन के जो पूज्य सुभाव निदान।
जिनदेव दयामय, स्वयंबुद्ध अवतार
भविकारज सिद्धि कारण अव्यभिचार ॥१॥

प्रातिहारज आठो समवसरण सुखकार
नहीं वीतरागता, बाधक लेश विकार।
यातें भवि पूजो द्रव्य-भाव अधिकार
पाओगे पावन पूज्येश्वर पद सार ॥२॥

ठाणागे चारों निक्षेपे कहे सत्य
भ्रम भेद मिटा दो सुन लो आगम सत्य।
सुर पूजें तैसे पूजो भक्ति उदार
भगवत्यादिक में, भाख्यो विधि विस्तार ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित, सुखसागर अनुरूप
शासन मे वर्तो, हो जावो गुण भूप।
सुर असुर तुम्हारे, वने दास के दास
प्रकटावे सुखमय, अनुपम पुण्य विलास ॥४॥

श्री विमल जिन स्तुति

सव जीव जगत के, हो शासन अनुयायी
यह भव्य भावना, धारे भाव अमायी।
भव कर्म मलिन तम, सब मल दूर निवारे
प्रभु विमल विमलता, त्रिभुवन मे विस्तारे ॥१॥

पुण्यानुवधी, पुण्य कर्म जिन नाम
वीश स्थानक तप, सेवी पाये तमाम।
तीर्थंकर तीरथ, जगजन तारण हार
प्रकटावे वदू, जिन वन्दन जयकार ॥२॥

वर ज्ञाता अगे, वीसस्थान विधान
भाखे सुखसागर, तीर्थंकर भगवान।
गुरु गम से जानो, आराधो अधिकारी
जिन आगम सुविहित, साधक की वलिहारी ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित, धर्म हृदय मे धार
चौथे गुणठाणे, वोधि उपाव उदार।
सयम श्रेणी चढ, करे सुरासुर सेव,
होते है सुव्रति, जन के सेवक देव ॥४॥

श्री अनंत जिन स्तुति

वदू नित भावे, तीरथ नाथ अनत
नामानुसारे, धारे ज्ञान अनत
आतम बल योगे, किया करम का अत
सुख सिंधु दयामय, भयहारी भगवत ॥१॥

है जीव ठिकाने मिथ्या दृष्टि आदि
चौदह गुण चढते पाते निज आजादी।
चौदह रज्जुमित लोक अंत में जाय
वदूं उनको जो ज्योति में ज्योति समाय ॥२॥

कहो जीव ठिकाने, या कह दो गुणठाण
जीवों में होते आगम वचन प्रमाण।
मिथ्या आदि में अयोगि-केवल अंत
भव अंत अत मे, प्रकटे पद जयवंत ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित बोधिलाभ को पाय
भले कहीं रहो पर शुक्ल पक्षी हो जाय।
साधर्मी सुरासुर सारे वाछित काज
अनुपम सुख प्रकटे निज घर अविचल राज ॥४॥

श्री धर्म जिन स्तुति

प्रभु धर्म जिनेश्वर आत्म-धर्म के नाथ
करते औरों को हों जो उनके साथ।
पनरमा जिन सेव्यां पन्नरह परमाधामी
दुख दें न कदापि होवें त्रिभुवन स्वामी ॥१॥

कर धर्माधर्मा काश प्रदेश सवध
वर सादि अनते भागे भाव अबध।
लोकान्ते वासी सिद्ध अनन्तानन्त
सुख सागर वदूं, दे सुख मुझे अनत ॥२॥

उत्पाद व्यय दो पर्यायार्थिक भेद
ध्रुवता द्रव्यार्थिक नय मत एक अभेद।
त्रिपदी परिमित है द्रव्य छहों सद्रूप
आगम से प्रकटें अनुभव अमृत कूप ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित दयामयी भगवान्
त्रिभुवन में अद्‌भुत भव तारक विज्ञान।

आज्ञा अवलम्बित, जीवन भाव प्रशस्त
बिन मागे देवे, वाछित देव समस्त ॥४॥

श्री शाति जिन स्तुति

श्री शाति जिनेश्वर, परम शान्ति दातार
यह जीव अनादि, कारण पाकर चार।
कर्मो के वश मे, रहे सदैव अशांत
शाति प्रभु सेवत, होवे परम प्रशान्त ॥१॥

मित्यात्व अविरति, कपाय योग संयोग
यह जीव हमेशा, रहा करम फल भोग।
सम्यग दर्शन युत, ज्ञान चारित्र संवध
शिव पद को साधे, वंदू सिद्ध अवध ॥२॥

ये चारो हेतु, जिन आगम मे देख
त्यागें जन धन वे, पावे पुण्य सुरेख।
गुरुदेव दया से, अथवा भाव निसर्ग
बोधि उत्तरोत्तर, जयतु ज्योति अपवर्ग ॥३॥

निष्कारण वन्धु, सुखसिन्धु भगवान्
'श्री जिन हरि' पूजित, शासन दिव्य विमान।
चढते भविजन झट, पावे पद कल्याण
सुर सेवा सारे, सहज सिद्ध उत्थान ॥४॥

श्री कुन्थु जिन स्तुति

चक्री तीर्थकर, दो पद पुण्य प्रताप
परमेष्ठी पाचो पद भी धारे आप।
कुन्थु प्रभु वदू, पार करो मा-बाप
अब सहा न जाता, मुझ से भव सताप ॥१॥

ज्ञानवरणी की, पाचो देवे छेद
दर्शन की नव से, करे आत्म का भेद।

मोहनी अडवीसों पाचो ही अतराय
मेटे पद अरिहत वदूं भाव अमाय ॥२॥

वेदनी की दोनो आयु कर्म की चार
शत तीन नाम की गोत्र की दो दें टार।
सिद्धातम होवें आगम के अनुसार
धन वह दिन पाऊ, जन्म सफल ससार ॥३॥

आतम सुखसिन्धु भय हारी भगवान
'श्री जिन हरि' पूजित, शासन सुखद विधान
सुविहित जो सेवें सेवे देव तमाम
दुख दूर निवारे पूरे वाछित काम ॥४॥

श्री अर जिन स्तुति

अरजिन अरिहता कर्म अरि कर नाश
स्वाधीन सुखो मे करते आप विलास।
हम दास प्रभु के जान कर्म बलवान
बदला ले हमसे स्वामी सुनो सुजान ॥१॥

उन कर्मों को हम कैसे मेटे नाथ
दिखला दो आ कर या रख लो निज साथ
है यही आप से, एक विनय अरदास
सुन लो हे भगवन जानो आप प्रकाश ॥२॥

सुख सिन्धु जिनागम गुरुगम जानो खास
होगा बस तुम में, अनुभव पूर्ण विकास।
कर्मों का करना अंत सबल संयोग
क्या पराधीन भी, पाते है सुख भोग ॥३॥

'श्री जिन हरि' पूजित शासन दया प्रधान
बुध जन आराधें पावें पुण्य निधान।
सेवा करते सुर असुर अकारण आप
मिट जावे फिर तो जीवन पाप संताप ॥४॥

श्री मल्लि जिन स्तुति

ससार अखाडा मोहमल्ल आधीन
दु:ख देत सभी को, भवदु ख देन प्रवीन।
मल्ली प्रभु दर्शन, डरा भगा वह दास
बन छिपा कायरो, के समूह मे खास ॥१॥

नर हो या नारी, पनरह भेदे सिद्ध
कर्मो को खपाते, है यह बात प्रसिद्ध
नवमे गुणठाणे, भाव वेद हो नाश
वर क्षपक श्रेणि मे, वदू सिद्ध प्रकाश ॥२॥

स्त्री पुरुष नपुसक, ये तीनो ही वेद
है नो कषाय ये, मोह कर्म के भेद।
आगम से जानो, त्यागो सयम धार।
सुखसागर मे फिर, वास करो निर्धार ॥३॥

भगवान अवेदी, "जिन हरि" पूज्य विशेष
शासन वर्तावे, धारे भविक हमेश
सुर असुर निवारे, रोग शोक सताप
सुख भोग उन्हीं को, देवे इच्छित धाप ॥४॥

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तुति

जय जय मुनि सुव्रत, सुव्रत पद दातार
जय जय सुखसागर, दु ख हारी अवतार।
जय मोह शनिश्चर, खलबल दलन उदार
भगवान बचावो, अपना विरुद सभार ॥१॥

सुव्रत सयम वर, सद्‌गुण निधि आधार
जिन बोधि शुभकर, प्रभु दर्शन सुखकार।
निर्भय पद पाते, आतम सिद्धि सुराज
सिद्धो को वदू, गुण गाऊ घन गाज ॥२॥

सुव्रत आते ही, अविरत भाव विनाश
मिथ्यात्व बिचारा रहे न पहले पास।
हो कषाय योगो का भी क्रम से रोध
जिन आगम दर्शित प्रकटे पद अविरोध ॥३॥

'हरि' पूज्य विजयी जिन शासन वासित देव
भाविक जन की नित सार सुखकर सेव।
वन भवन बनावें शत्रु मित्र समान
सागर केलिद्रह विष को अमृत पान ॥४॥

श्री नमि जिन स्तुति

नमिनाथ दयालु। काम कषायाधीन
भूला दु ख पाया, भव वन मे मैं दीन।
बीतक क्या बोलू, जानो ज्ञानी आप
क्या कहना सुनना दे दो दर्शन धाप ॥१॥

दर्शन की जिनके लगी हृदय में छाप
निश्चय से मानूं, उनका पुण्य प्रताप।
अति बढा चढा है नहीं घटने का काम
उनको हो मेरा प्रतिपल भाव प्रणाम ॥२॥

दर्शन सुखसागर, दर्शन पद भगवान
दर्शन दर्शन मत वादी कहे अजान
दुनिया के दर्शन जीव बिना की देह
जिन दर्शन ही है जीवनदायक एह ॥३॥

जिन दर्शन महिमा गाते 'हरि' अमद
पूरण नहीं होती पावे परमानंद।
जिन दर्शन वालों से नित राखे राग
बढता है उनका जीवन कमल पराग ॥४॥

श्री नेमीश्वर जिन स्तुति

श्री नेमि जिनेश्वर, जीवन परम रहस्य
जो जाने पावे, अद्भुत सिद्धि अवश्य।
श्री राजिमती घन, सती शिरोमणि सार
प्रभु से कर जाना, प्रेम अभेद विचार ॥१॥

प्रेमी से करना, प्रेम सहज है वात
पर निस्नेही से, चमत्कार अवदात।
यह एक हथाली, ताली न्याय समान
करते सो वरते, सुखकर सिद्धि निधान ॥२॥

जग प्रीति रीति, स्वार्थ मोह से लीन
निस्नेही प्रभु से, निस्वारथ गुणपीन।
जिन आगम विधि से, जाने जो सविवेक
नित करू उन्ही को, वदन वार अनेक ॥३॥

सुख-सिधु सम्यक्, वोधदायि भगवान
'हरि' पूज्येश्वर जिन, शासन प्रेम प्रधान।
समझे, आराधे, उनके पुण्य सहाय,
सुर असुर करे नित, विघ्न विशेष विलाय ॥४॥

श्री पार्श्व जिन स्तुति

पाखड मिटा दो, होकर निर्भय वीर
जहरीलों पर भी, दया करो गुणधीर।
अपने दुश्मन पर, क्षमा करो आदर्श
समझावो स्वामी, पार्श्व नमू वहु हर्ष ॥१॥

जो पर उपकारी, नरपुगव गुणधाम
होते है जग मे, जीवन भावोद्दाम।
दीपक, रवि शशीसम, तम हरते दिन रात
उनकी पद सेवा पाऊ, पुण्य प्रभात ॥२॥

जो विषम विरोधी को भी दे सम्मान
सब धर्म समन्वय करता साधु निधान।
नयवादों से भी जिसका ऊचा स्थान।
जिन आगम वदू, स्याद्वाद् महान् ॥३॥

सुखसिन्धु सुखाकर पुरुषोत्तम भगवान्
'हरि' पूजित श्रीजिन पारस पद वर ध्यान।
ध्याता भविजन को, चितामणि समान
पद्मा धरणीन्दर देवें वांछित दान ॥४॥

श्री वीर जिन स्तुति

सिद्धारथ नदन, ज्ञात वश अवतस
श्री त्रिशला माता कुक्षी मानस हस
जय वर्द्धमान जय महावीर भगवान्
जय शासन नायक मेरे जीवन प्राण ॥१॥

प्रभु महातपस्वी दया-धर्म आधार
जग जीव मात्र का करने को उपकार
ज्योतिर्मय जन्में सुना अमर सदेश
सिद्धातम होते वदूं उन्हे हमेश ॥२॥

संयमी जन होवें वर्ण गुरु जग धन्य
सुख दुख का कर्ता हर्ता जीव न अन्य
सब में ईश्वरता शक्ति रूप समान
वर बोधि विधाता जयतु जिनागम ज्ञान ॥३॥

सुविहित खरतर विधि सुखसिन्धु भगवान्।
श्री जिन शासन 'हरि-सागर-सूर' समान।
भवि भयगज भेदन सुखनीरद-वर-हेतु
तम तोम निवारण नमो भवोदधि सेतु ॥४॥

स्तवन चौबीसी

१. आदि जिन स्तवन

(तर्ज · मारवाडी, लोटन करवा की)

प्रभु ऋषभ जिनन्दा सँभलजो रे, व्हाला मुझ अरदास ॥टेर॥

काल अनादि नी प्रीतडी जिनजी रे, सुखकारी रे म्हारा ऋषभ जिनन्दा,
तोडी ने रे करियु मोक्ष मा वास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१॥

हूँ अधमा भवारण्य मा जिनजी रे, जयकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
रखडीने बहु पामी कर्मो नी त्रास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥२॥

आवी प्रीति नहीं सुज्ञजननी रे, मनहारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
ए नहीं प्रीति नी रीति छै खास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥३॥

प्रीति तो एम पिछाणिये जिनजी रे, शिवकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
आपे रे जेह मित्र ने सुखनो वास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥४॥

हू पण छू अपराधिनी जिनजी रे, सुखकारी रे, प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
तुझ सग त्यागी कर्यु विषय विलास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥५॥

विषय विष थी मुझाई ने जिनजी रे, जयकारी रे, प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
तुझ मलवा नु न कर्युं काई प्रयास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥६॥

पुण्य उदय नर भव लह्यु जिनजी रे, मनहारी रे, प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
वलि लह्यु किंचिद् सम्यग्ज्ञान प्रकाश, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥७॥

तुझ दर्शन पिण पामियु जिनजी रे, शिवकारी रे म्हारा ऋषभ जिनन्दा,
मुझने मलियु सद्गुरु नो सहवास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥८॥

तो पिण हू अभागिनी जिनजी रे, सुखकारी रे, प्रभु ऋषभ जिनन्दा,
नवि कीधु हजी निज सद्गुणो विकास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥९॥

पण उत्तमजन रीति ए जिनजी रे जयकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा
शरणागत ने न करें तेह निराश प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१०॥

चरण शरण प्रभु तुम तणो जिनजी रे मनहारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा
मुझ ने छै व्हाला त्हारी निश्चल आश प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥११॥

समरथ छो तमे तारवा जिनजी रे शिवकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा
हूँशा माटे जाऊं अवरनी पास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१२॥

विमल गिरी नो तूं राजियो जिनजी रे, सुखकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा
तुझ दर्शन थी पामियुं अति उल्लास प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१३॥

आनन्द रत्नाकार आप छो जिनजी रे, जयकारी रे प्रभु ऋषभ जिनन्दा
मुझ मन माँ तुझ ज्ञान थी थाये उजास, प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१४॥

ज्ञानोपयोग पसाय थी जिनजी रे मनहारी र प्रभु ऋषभ जिनन्दा
'सज्जन' मांगे तुझ चरणों मां वास प्रभु ऋषभ जिनन्दा ॥१५॥

२ अजित जिन स्तवन

(तर्ज चाहे तारो या न तारो)

दर्शन तुम्हारा जिनवर मुझको भी अब दिखादो।
भव का भ्रमण दया कर मेरा भी अब मिटादो ॥स्थायी॥

विजया के नन्द प्यारे, जितशत्रु के दुलारे।
मुक्ति का मार्ग प्रभुवर मुझको भी अब बतादो ॥१॥

अजितारि आप तो हैं रहते है मित्र सबके।
मैं भी बनूं प्रभूजी वैसी विधि जतादो ॥२॥

मोहादि शत्रु सारे घेरें खडे हैं मुझको।
कैसे इन्हें हटाऊं हे नाथ। मुझे बतादो ॥३॥

अज्ञान तम है छाया दिखता न मार्ग मुझको।
अध्यात्म ज्ञान-ज्योति मानस में अब जगादो ॥४॥

आतम स्वतन्त्रता का, उत्कट चरित्रता का।
लेना है दान विभुवर! अब शीघ्र ही दिलादो ॥५॥

स्वात्मानुभूति देना, यह प्रार्थना सुन लेना।
सन्तोष शान्ति जिनवर! मुझको भी अब सिखादो ॥६॥

लाखो को तुमने तारे, भव सिन्धु से उबारे।
नैया यह तट पै द्रुततर, मेरी भी अब लगादो ॥७॥

मुझको अगर न तारो, फिर आप ही विचारो।
है अन्य कौन सुखकर, जाऊँ कहाँ बतादो ॥८॥

मै हूँ अधम अपावन, तुम हो पतित पावन।
कर्मो का बन्ध दृढतर, हे नाथ! अब छुडा दो ॥९॥

आये शरण तुम्हारी, बनकर तेरे पुजारी।
कर सिर पै रख प्रभुजी, निर्भय मुझे बना दो ॥१०॥

आनन्दमय सुअवसर, पाया सज्ज्ञान दिनकर।
'उपयोग' दो कृपाकर, 'सज्जन' को झट जगादो ॥११॥

३. संभव जिन स्तवन

(राग · भैरवी, तर्ज. मुबारक हो मुबारक हो ....)

प्रभो! दर्शन की हूँ प्यासी, पिलादो नाथ! करुणा कर।
शुद्ध वह रूप अविनाशी, दिखा दो नाथ! करुणा कर ॥स्थायी॥

चतुर्गति मे जगत्त्राता, मुझे है कर्म भटकाता।
सहा दुःख यह नही जाता, मिटा दो नाथ! करुणा कर ॥१॥

कभी है क्रोध अहि डसता, कभी मद अष्ट मे फँसता।
कभी माया के वश पडता, बचा दो नाथ। करुणा कर ॥२॥

कभी हास्यादि षट् शत्रु पकडते आन मुझ जत्रु।
वेद त्रय पाश में जकडा छुडा दो नाथ। करुणा कर ॥३॥

ज्ञानमय रूप को भूला विषय झुले में मै झूला।
क्षणिक सुख प्राप्त कर फूला जगा दो नाथ। करुणा कर ॥४॥

पुण्य से प्राप्त यह नर भव शान्त हो जाय अब भव-दव।
मिले अति शीघ्र स्व-वैभव दिला दो नाथ। करुणा कर ॥५॥

सुद्ध सम्यक्त्वधारिणी बन करूं रत्नत्रयाराधन।
आत्महित के सभी साधन दिलादो नाथ। करुणा कर ॥६॥

गहूँ चारित्र अति उत्तम, लखू मै रूप निज अनुपम।
मेरे मन से अब मोह का तम, हटा दो नाथ। करुणा कर ॥७॥

करूं विनती यही भगवन्। काट दो कर्म के बन्धन।
चरण में कोटि अभिवन्दन स्वीकारो नाथ। करुणा कर ॥८॥

असम्भव हो सभी सम्भव तुम्हारे ध्यान से सम्भव
विमल आनन्द का अनुभव करा दो नाथ।करुणा कर ॥९॥

स्वर्ण सम वर्ण अति सुखकर ज्ञान उपयोग मय सुन्दर।
दासी 'सज्जन' को हे दिनकर। दिखा दो नाथ करुणा कर ॥१०॥

४ अभिनन्दन जिन स्तवन

(तर्ज - दिल लूटने वाले जादूगर)

अभिनन्दन जिनराज तमारूं दर्शन मुझ मन वसियु।
दर्शन दर्शन रटतु फरे छे मन दर्शन नु रसियु रे ॥स्थायी॥

सवर नन्दन वन ना चन्दन सिद्धार्था ना जाया रे।
गर्भस्थित अभिनन्दन कीनो, सुरपति शीश नवाया रे ॥१॥

दर्शन काजे साज सजू वहु तदपि न दर्शन पामू रे।
हूं परभव मां रमण करूं छूं, तुझ दर्शन किम पामू रे ॥२॥

मन खाचू जो परपरिणति थी, तो ते वलि वलि जाये रे।
जो नवि रोकू तो छूटो फरै छे, ते कहो किम वश थाये रे ॥३॥

काल अनादि थी जेहनो परिचय, पुद्गल थी छे स्वामी रे।
एने एह ज प्रिय भासे छे, नथी अन्य नो कामी रे ॥४॥

यद्यपि पुदगल सग थी एह ने रखडवू पडे भव वनमा रे।
तो पिण धृष्टथई साथ न त्यजतु, भय नही आणे मनमा रे ॥५॥

वार वार समझाऊ एहने, एक वात नही माने रे।
कृत्य अकृत्य न शोचतु मूरख, करतु छाने छाने रे ॥६॥

आवा अज्ञानी ने किम वारु हूँ, ते युक्ति समझावो रे।
तमने त्यजी कोनी शरणी हू जाऊं, तमे समरथ कहेवावो रे ॥७॥

तारी अनुपम मुद्रा जोई, मुझ मन हर्षित थाये रे।
निशदिन दर्शन चाहे तमारू, वीजे क्या नवि जाये रे ॥८॥

सुख सागर भगवान त्रैलोक्य मा, आनद रस वरसाओ रे।
मोह-तिमिर हरी मन-मदिर मा, ज्ञान नी ज्योति जगाओ रे ॥९॥

शुभ उपयोग मा प्रतिक्षण वरतु, जीवन सफल वनाऊ रे।
'सज्जन' मन नी ए अभिलाषा, शिव सुख भोगी वन जाऊं रे॥१०॥

५. सुमति जिन स्तवन

(राग · मौंड-नाकोडा, स्वामी .)

सुमति जिन स्वामी, शिवसुख, धामी सुमति दो सुखकार ॥स्थायी॥

नगर अयोध्या मे प्रभु जन्मे, मेघ नृपति के गेह,
सुमति प्रसृत सकल देश मे, अवतरे अर्हन् सदेह रे ॥१॥

सुमगला-नदन पाप निकन्दन, सुमति दो सुमति दातार,
दुर्मति भन्जन सन्मति-सर्जन, सुमति करण ससार रे ॥२॥

कुमति संग से बहु दुख पाया भ्रमण किया गति चार
अब दो नाथ दया कर मुझको सुमति सदा हितकार रे ॥३॥

कुमति कुलटा कुटिल कुनारी साथ से सब सुविचार
तप जप ध्यान नियम व्रत खो कर बना दरिद्र सरदार रे ॥४॥

सुमति बिना नहीं भावना आवे नहीं होवे मन अविकार
नाथ। कहो फिर कैसे पाऊं सुख सम्पति श्रीकार रे ॥५॥

कुमति कु-सखी निशदिन मुझको देती दुख अपार
नरक निगोद में जाके पटके, जहाँ दुख का नहीं पार रे ॥६॥

सुमतिनाथ। सुमति दो हमको जिससे जानें स्वरूप,
पर परिणति हटाकर स्व के बन जायें गुण भूप रे ॥७॥

सुमति संग से संयम रति हो हो सन्मति का विकास
सन्मति से सद्गति हो जाये दुर्गति का हो विनाश रे ॥८॥

विषय कषाय से विरति होवे संयम रति हो देव।
सन्मति से दुर्मति कुलटा का, त्याग होवे स्वयमेव रे ॥९॥

कर्म चेतना परिवर्तित हो सत्कर्म हो निष्काम
सतत जागृत रहे ज्ञान चेतना पाऊं पद विश्राम रे ॥१०॥

सुख सागर भगवान त्रैलोक्यपति आप है आनन्दकार
ज्ञानोपयोग की 'सज्जन' मन में कर दो ज्योति प्रसार रे ॥११॥

६ पद्मप्रभ जिन स्तवन

(तर्ज - थाँरी छोटी सी उमरिया)

प्रभुजी म्हारा पद्मप्रभ जिनराज चरण करूं वन्दना महाराज।
प्रभुजी म्हारा तुम त्रिभुवन शिरताज सदन आनंद नां महाराज ॥स्थायी॥

प्रभुजी म्हारा तुम देवाधिदेव वासी अपवर्गनां महाराज
तव पद-पंकज सेव करे सुर स्वर्गनां महाराज ॥१॥

प्रभुजी म्हारा भविजन धरे तव ध्यान, आत्म अनुभव करे महाराज,
वेशी चारित्रयान ससार, सागर तरे महाराज ॥२॥

प्रभुजी म्हारा, त्हारू शुद्ध स्वरूप, कारण छे सिद्धि नु महाराज,
ध्याता देखी निज रूप भोक्ता हो, स्व ऋद्धि नु महाराज ॥३॥

प्रभुजी म्हारा, हूँ पुद्गल सयोग, विसरी तुझ भक्ति ने महाराज,
उपदिशो एहवो प्रयोग सभारू, निज शक्ति ने महाराज ॥४॥

प्रभुजी म्हारा, शरणागत प्रतिपाल, दासी तुम पद तणी महाराज,
अष्ट कर्म जजाल थी काढो, मुझ भणी महाराज ॥५॥

प्रभुजी म्हारा, वाध्यो दुख सन्ताप, मली दुर्जन सहु महाराज,
तव आणा उत्थाप हू दुख, पामी वहु महाराज ॥६॥

प्रभुजी म्हारा, हवे मुझ पर दया लाय, आराधक वनावजो महाराज,
शान्ति सुधा वर्षाय ताप त्रय, शमावजो महाराज ॥७॥

प्रभुजी म्हारा, आत्म-भूमि नू करू सोध, बोध एह आपजो महाराज,
आश्रव नो करी रोध कर्म सहु, काटजो महाराज ॥८॥

प्रभुजी म्हारा, रक्तवर्ण जगनाथ, तव पद अनुरक्त छूँ महाराज,
मुझ मस्तक धरो हाथ तमारी, भक्त छूँ महाराज ॥९॥

प्रभुजी म्हारा, अनुपम आनन्द आज, कल्पतरु गृह फल्यो महाराज,
शिवपद लेवा काज आज, दर्शन मल्यो महाराज ॥१०॥

प्रभुजी म्हारा, अन्तर ज्ञान प्रकाश, थी जीवन कृत्कृत्य थयो महाराज,
उपयोग आपी पूरो आश 'सज्जन', कहे जिनजयो महाराज ॥११॥

७. सुपार्श्व जिन स्तवन

(तर्ज - तेरे पूजन को भगवान् .. .)

पुण्योदय से मैने आज भेटे श्री सुपार्श्व जिनराज ॥स्थायी॥
पिता प्रतिष्ठ के पुत्र है प्यारे, माँ पृथ्वी के राजदुलारे,
जगज्जन तारण तरण जहाज . भेटे .... ॥१॥

तव जन्म से धन्य है अवनी जैसे चन्द्रोदय से रजनी।
शोभित तुमसे जीव समाज भेंटे ॥२॥

सूरत मूरत मोहनगारी, श्री सुपार्श्व जिनराज तुम्हारी।
तुम हो त्रिभुवन के शिरताज भेंटे ॥३॥

अगम अपार तुम्हारी महिमा अलख अचिन्त्य है सारी गरिमा।
कह कह थाके सुर-नर राज भेंटे ॥४॥

मै हूँ अधमा अति दुखियारी चरण शरण गही नाथ। तुम्हारी।
रख लो अब प्रभु मेरी लाज भेंट ॥५॥

कर्मराज ने मुझको पटका, भव वन में मै खूब ही भटका।
बचालो मुझको प्रभुवर। आज भेंटे ॥६॥

तव आज्ञा को शिर पर धारूँ कर्मों का गुरुभार उतारूँ।
मेरी सुध लो गरीबनवाज भेंटे ॥७॥

कर्म चेतना में भरमाया ज्ञान चेतना से सुख पाया।
बाजे विजयदुन्दुभि आज भेंटे ॥८॥

आत्मज्ञान बिन जग में अंधेरा ज्ञान-ज्योति का करो उजेरा,
जिससे सुधरे सारे काज भेंटे ॥९॥

वीतराग तव ध्यान से होता नहीं खाता भवोदधि में गोता।
भविजन पाता स्व-साम्राज्य भेंटे ॥१०॥

शुद्ध निर्मलानन्द दिलादो ज्ञानोपयोग पीयूष पिलादो।
'सज्जन' माँगे प्रभु जिनराज भेंटे ॥११॥

८ चन्द्रप्रभु जिन स्तवन

(राग धन्याश्री सखिरी। मोरी आज की)

सूरत पर। वारी जाऊं जिनचन्द ॥टेर॥
चन्द्रप्रभ जिन जन मन रन्जन महसेन नृप नंद। सूरत ॥१॥
समवसरण बिच आप विराजत ज्यो तारा बिच चन्द। सूरत ॥२॥

श्वेत स्निग्ध तव वदन प्रभा लख, ले भवि चकोर आनद। सूरत ......॥३॥
आभा-मण्डल मध्य तव आनन, जैसे दीप्त दिनन्द। सूरत ......॥४॥
अष्ट महा प्रातिहार्य की शोभा, देखत होय आनन्द। सूरत ...॥५॥
सुधासिक्त गम्भीर गिरा सुन, दूर करे मोहमन्द। सूरत ....॥६॥
देश सर्व विरति धर भविजन, काटत कर्म के फन्द। सूरत ..॥७॥
एक कोटि नित सेवा करते, आपकी निर्जर वृन्द। सूरत ..॥८॥
अम्बर शहर मे आप विराजे, दर्शन है सुख कन्द। सूरत ....॥९॥
आनन्दमय शुभ अवसर है यह, उदय हो ज्ञान अमन्द। सूरत ..॥१०॥
शुभ उपयोग मे रमण करूँ नित, 'सज्जन' माँगे जिनन्द। सूरत .. ..॥११॥

९. सुविधि जिन स्तवन

(तर्ज - सुना है तुमने, तारे है लाखो)

प्रभो। तुम्हारी छवि है प्यारी,
हमारे दिल को लुभा रही है।
आगी तुम्हारी अति मनोहारी,
बिखेर अपनी प्रभा रही है ॥स्थायी॥

सुग्रीव कुल के हो तुम दिनकर,
श्वेत वर्ण मय देह मनोहर।
स्नात्र महोत्सव करते सुखकर,
देव-देवियाँ हर्षा रही है, प्रभो ॥१॥

शैशव मे चचलता नहीं थी,
यौवन की मादकता नही थी।
वैभव मे आसक्ति नही थी,
यह उत्तमवृत्ति सिखा रही है, प्रभो ॥२॥

मस्तक मुकुट है परम मनोहर,
गलहार भुजबन्द अत्यन्त सुन्दर।

यह शान्त मूरत तुम्हारी जिनवर,
आँखों से अमृत वर्षा रही है प्रभो ॥३॥

सब दुखहारी, प्रमोदकारी,
यह दिव्य प्रतिमा प्रभो। तुम्हारी।
एक बार भी जिसने निहारी,
उन्हीं नयनों में समा रही है प्रभो ॥४॥

कायोत्सर्ग मुद्रा नासाग्र दृष्टि
करती है शान्त-सुधा की वृष्टि।
जीवन में रचती नवीन सृष्टि
अज्ञान सारा भगा रही है प्रभो ॥५॥

श्रेष्ठ मानव चरित्रता का
जीवन की वर पवित्रता का।
कर्मफल की विचित्रता का
पाठ अनुपम पढा रही है, प्रभो ॥६॥

जब जग में भौतिकता है छायी
तब आध्यात्मिक ज्योति जगाई।
मोहान्धता है सबकी मिटाई
हम सबकी भी मिटा रही है प्रभो ॥७॥

मोह रिपु को हटाने वाला
स्वरूप को प्रकटाने वाला।
भव भ्रमण को मिटाने वाला
यह ज्ञान हमको सिखा रही है प्रभो ॥८॥

आत्मशुद्धि की विधि सिखलायी,
पथ भूलो को राह दिखाई।
भेद ज्ञान की कुंजी बताई
अब भी हमको बता रही है प्रभो ॥९॥

द्रव्य भाव से पूजा जो करते,
पाप ताप सन्ताप को हरते।
भविजन वांच्छित सुख को वरते,
सिद्धि सत्पथ दिखा रही है, प्रभो ॥१०॥

श्री सुविधि जिन तुम्हारा दर्शन,
करता आध्यात्मिक आनन्द वर्द्धन।
ज्ञानोपयोग मे रहे 'सज्जन' मन,
हृदय की विनती सुना रही है, प्रभो ॥११॥

१०. शीतल जिन स्तवन

(राग : सोरठ - पथडो निहालूं रे)

किम गुण गाऊ रे, शीतल जिन तणा रे,
महिमा जेहनी अनन्त।
कही कही थाक्या रे, गणधर सुरवरा रे,
पण नही पाम्या अन्त ॥स्थायी॥

जेहना तेजने रे असख्य सूर्य शशधर मली रे,
प्राप्त कदापि न थाय।
तो पिण शीतल रे जे छे एहवो रे,
भविना ताप शमाय किम ॥१॥

मधुर सुधा सम जेहनी वाणी छे रे,
भविजन करता पान।
मोह विष हरती रे भरती अनुपम शाति ने रे,
करती प्रकट शुभ ज्ञान ॥२॥

शीतल जिन नो रे नाम सदा जपो रे,
जो चाहो शिव सुख।
एहना जाप थी रे ताप सवि टले रे,
मिट जाये भव दुख . किम . ॥३॥

ज्ञान अनन्तो रे ज्ञेय तणी परे रे
जाणे त्रैकालिक भाव।
तुलना नहीं थाये जगमा कोई थी रे
एहवो अगम स्वभाव किम ॥४॥

दर्शन गुणनी रे तेम अनन्तता रे,
कोई थी न कहेवाय।
सुर-गुरु पिण ते नहीं सके कही रे
रसना कोटि निर्माय किम ॥५॥

आत्मरमणता रे भोग स्वरूप नो रे
ते आनन्द अमाप।
अनुभव करे ते जाणे सही रे
बीजा करे रे प्रलाप किम ॥६॥

शक्ति अपरिमित प्रभुवर। आपनी रे
प्रभुता लोपे न कोय।
सकल द्रव्य तव आज्ञा शिर धरे रे
अदभुत रीति जोय किम ॥७॥

तुझ आलम्बने स्वरूप मुझ भाससे रे
ए आशा मन धार।
हवे तव शरण प्रभु हूँ आदर्यो रे
तार प्रभो! मुझ तार किम ॥८॥

समर्थ नर नो चरण शरण अवलम्बतां रे
निर्भय सहु को थाय।
आप सदृश्य कोई अन्य समर्थ नथी रे,
पूरव पुण्ये कोई पाय किम ॥९॥

आनन्दायक योग अपूर्व मल्यो रे
सफल करू अवतार।

दर्शन ज्ञान चरण नी साधना रे,
'सज्जन' करशे भव पार . किम ॥१०॥

११. श्रेयांस जिन स्तवन

(तर्ज - तावडो धीमो पडजा रे)

मूरति मोहनगारी है, दर्शन से दुःख जाय
ध्याय होवे भवपारी है ॥स्थायी॥

विष्णु नृप नन्दन सदा रे, वन्दो निर्मल भाव, प्रभुजी ...
प्रकट करो निज शक्ति को रे, त्यागो सभी विभाव ..
दाव यह मिल गया भारी है, दर्शन ॥१॥

प्रभु दर्शन पीयूष से रे, नष्ट विषय विष दोष, प्रभुजी ...
रुग्ण आत्म ले स्वस्थता रे, रत्नत्रय का पोष ...
शोष कर्मो का भारी है, दर्शन ॥२॥

प्रभु दर्शन चिन्तामणि रे, चिन्ता देता चूर, प्रभुजी ..
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि हो रे, बजे सुयश के तूर ....
नमे सुर नर अधिकारी है, दर्शन ... ॥३॥

प्रभु दर्शन है काम घट रे, पूरे इच्छित सर्व, प्रभुजी ....
देख जिसे मिट जाय द्रुत रे, सुरपति का भी गर्व ...
महिमा अपरम्पारी है, दर्शन .. ॥४॥

प्रभु दर्शन है कल्पतरु रे, कामित फल दातार, प्रभुजी ..
जिसकी छाया सुखद है रे, भव-भव दुःख हर सार ....
सुखी बनते नर-नारी है, दर्शन .... ॥५॥

प्रभु दर्शन अद्‌भुत पवि रे, दुरित कर्म ध्वसकार, प्रभुजी ...
सदाश्रेय हो भक्त का रे, खोले मुक्ति के द्वार ....
बन्द ससार की बारी है, दर्शन ..... ॥६॥

प्रभु दर्शन अपूर्व रवि रे, करता ज्ञानालोक, प्रभुजी
ज्ञानालोक के उदय से रे हर्षित हो भव्य कोक
शोक सब दूर निवारी है दर्शन ॥७॥

श्रेयस् करते जगत का रे हरते पाप विकार प्रभुजी
भरते रत्नत्रय राशि से रे भवि के हृदय भण्डार
सार शुभ के दातारी है, दर्शन ॥८॥

प्रभु दर्शन पाये बिना रे आवे नहीं भव अन्त प्रभुजी
भविजन दर्शन कर सदा रे पाते भवजल अन्त
सन्त जन कहते पुकारी है दर्शन ॥९॥

श्रीजिनवर दर्शन मिला रे खिला हृदयमय फूल प्रभुजी
आनन्दामृत इस सुगन्ध से रे मिटी अनादि की भूल
मूल समकित सुखकारी है दर्शन ॥१०॥

प्रभु दर्शन शारद शशि रे, शीतल ज्योत्स्ना धाम प्रभुजी
पाप ताप सन्ताप का रे जहाँ न किन्चित काम
राम आराम अपारी है दर्शन ॥११॥

ज्ञान भानु के उदय से रे, हटा मोह-तम आज, प्रभुजी
शुभ उपयोग प्रसाद से रे 'सज्जन' मिला स्वराज
काज सब दिये सुधारी है दर्शन ॥१२॥

१२ वासुपूज्य जिन स्तवन

(राग आशावरी, तर्ज उवसग्ग हर)

वन्दू वासुपूज्य जयकारी अविकारी, सुखकारी रे, वन्दूं ॥ स्थायी॥

चम्पापुरी के नृप वसुपूज्य की महाराज्ञी जया नारी।
रत्नकुक्षी से राजहंस सम, स्वर्ग से आये अवतारी वन्दूं ॥१॥

रोहिणी नक्षत्र मे जन्मे प्रभु, आवे छप्पन कुमारी।
करे प्रसूतिकर्म भक्ति भर, हर्ष हृदय मे अपारी, वन्दूँ . ॥२॥

आवे सौधर्मेन्द्र तदनन्तर, पंच रूप ले धारी।
एक ग्रहे कर सम्पुट प्रभु को, द्वितीय छत्रकर धारी, वन्दूँ ..॥३॥

चामर वीजे दोय रूप से, एक वज्र से विघ्न निवारी।
मेरू गिरि ले जावे प्रभु को, जय जय शब्द उचारी, वन्दूँ ..॥४॥

आवे चौसठ इन्द्र सर्व मिल, सुरसुरी सब परिवारी।
जन्म महोत्सव जिनजी का करने, तीर्थो से लावे वारी, वन्दू .. ॥५॥

स्वर्णादि अष्ट जाति कलश भर, देव-देवी आज्ञाकारी।
सौधर्मेन्द्र के अक विराजित, अरुण वर्ण मनोहारी, वन्दूँ . ॥६॥

त्रेसठ इन्द्र मिल स्नात्र करत है, नृत्य करे शची सारी।
द्वादश तूर्य बजावे सुरवर, अगजग मगलकारी, वन्दूँ . ॥७॥

ईशानेन्द्र से कहे सौधर्मपति, बन्धु अब मेरी बारी।
तुम ग्रहो अब प्रभु को अक मे, स्नान कराऊं सुखकारी, वन्दू ... ॥८॥

वृषभ रूप धरि, श्रृगे जल भरि, न्हवरावे भक्ति भारी।
अष्ट मगल रचे, भक्ति-भाव करे, पूजन अष्ट प्रकारी रे वन्दू ..॥९॥

माता निकट फिर लावे प्रभु को, प्रमत भाव मनधारी।
धन्य-धन्य मानत निज भव को, स्मरण करे बारम्बारी, वन्दू ... ॥१०॥

ले दीक्षा प्रभु केवल पाये, तीर्थ स्थापे चारी।
दे प्रतिबोध भव्य जीवो को, किये मुक्ति अधिकारी, वन्दू ...॥११॥

देश देश मे विचरण करके, ज्ञान ज्योति विस्तारी।
चम्पापुरी निर्वाण प्रभु का, तीर्थ धाम बलिहारी, वन्दू ॥१२॥

ऐसे पुण्य पुरुष तीर्थंकर वासुपूज्य शिवकारी।
पूजा सेवा करते 'सज्जन' पाते सुख नरनारी वन्दू ॥१३॥

१३ विमल जिन स्तवन

(कहरवा की राग-विभास)

अहो श्री विमल जिन विमलता तुम तणी
अद्‌भुत अलौकिक अछे स्वामी।
वर्णवी केम शकू क्षुद्रमति माहरी
गणधर शक्या नहीं पार पामी ॥ अहो ॥१॥

ज्ञानावरण नां सर्वथा विगम थी
विमल जो केवलज्ञान पायो।
सर्व द्रव्यो तणी त्रैकालिकी वर्तना
प्रकट भापित इम शास्त्र गायो ॥ अहो ॥२॥

दर्शनावरण नां क्षय थकी जे थयुं
केवलदर्शन सर्वदर्शी ।
अन्य द्रव्याधिगत विविध विचित्रता
तमने प्रभु ते कदापि न स्पर्शी ॥ अहो ॥३॥

मोहनां पूर्णत नाश थी जे थयी
रमणता स्व-गुण पर्यय माही।
विमल चरित्र नी पूर्णता जे कही
न मले जगत मां अन्य क्याही॥ अहो ॥४॥

संक्षय थयुं अन्तराय नु सर्वथा
प्रकट थयी शक्ति त्यारे अपारी।
दान ने लाभ भोगोपभोगादि सहु
स्व-गुणनां थाय ए रीति न्यारी॥ अहो ॥५॥

एम अनन्तता चार नी जे मली
प्रभुनी अमेय प्रभुता प्रकाशे।

जगत नां द्रव्य सहु आण शिर धारता,
तेहने कोई पण नवि विनाशे ॥ अहो ...॥६॥

विमल जे रूप प्रभु शु आत्मा तणो,
ते तमे प्राप्त कर्यु कर्म कापी।
त्रिभुवन तिलक! हूँ चरणरज आप नी,
मने पण नाथ द्यो तेह आपी ॥ अहो . . ॥७॥

मलिन थई कर्म मल थी मुझ आतमा,
विमल जिन विमल करो एने आजे।
काज ए मुझ करी विरुद निज राखजो,
जगत तुझ यश तणो पडह् वाजे॥ अहो ...॥८॥

पच मिथ्यात्व कषाय पचविशति,
वारह् अव्रत पच प्रमाद योगे।
जीवने कर्म मलि मलिनता सर्जता,
तेहथी आतमा दुःख भोगे ॥ अहो ... ॥९॥

प्रभो ! अनुग्रह करी सुमति द्यो सुखकरी,
जेम ए आत्मस्वरूप वोधे।
वोध निज रूप नो थाय तो शीघ्र ही,
रोध करी कर्म नो आत्मशोधे ॥ अहो . .॥१०॥

भावना हृदय नी एक आनन्दघन!
ध्यान धरू विमल जिन! एक त्हारू।
'ज्ञान उपयोग' थी आत्म अनुभव करी,
करे 'सज्जन' सदा गुणगान तहारू॥अहो . ॥११॥

१४. अनन्त जिन स्तवन

(तर्ज-शुद्ध सुन्दर अति मनोहर)

अनन्त जिनवर! आप तो, अनन्त गुण भण्डार है।
अनन्त दर्शन-ज्ञान चारित्र, वल के प्रभु आगार है ॥ स्थायी॥

अनन्त गुण पर्याय के, ज्ञाता है प्रभुवर आप है
अन्य देव न और जग में ऐसे ज्ञानागार है। अनन्त ॥१॥

चतुषष्ठी इन्द्र मिल, पूजा रचाते आपकी,
पूजातिशय अद्‌भुत अलौकिक सदा मगलकार है। अनन्त ॥२॥

मञ्जुल मधुर मृदु-तत्वमयी वाणी गरजती मेघ-सी
मालकोश सुराग में करते श्रवण नर-नार है। अनन्त ॥३॥

विचरते जिस देश में वहाँ ईति भीति न व्यापती,
सर्वत्र सुख-शाति-समृद्धि अतिशय अनन्त अपार है। अनन्त ॥४॥

जातीय वैर भी भूलकर पशु-पक्षी गण मिल बैठते
है अपूर्व प्रभाव ऐसा जहाँ दया साकार है। अनन्त ॥५॥

उसी में से अश किंचिद् मांगती हूँ आज मैं,
दीजिए मुझको वहीं प्रभु आप सुख दातार हैं। अनन्त ॥६॥

आत्मवल से हीन हूँ मैं लीन हूँ परभाव में,
शक्ति दो स्वाभाविकी वस उससे ही उद्धार है। अनन्त ॥७॥

मोहतम से ढँकी रही आतम निधि मेरी प्रभो।
ज्योति जगे जब ज्ञान की तब आत्म साक्षात्कार है। अनन्त ॥८॥

आनन्ददायक ज्ञान ऐसा रहे प्रकट घट में सदा
आत्मवल से शीघ्र ही फिर कर्म-दल संहार है। अनन्त ॥९॥

सुख-सिन्धु हो, भगवान् हो। त्रैलोक्य के प्रभु नाथ हो
पुण्यतम पावन चरण को नमन बारम्बार है। अनन्त ॥१०॥

देव शुभ उपयोग में ही चित्तवृत्ति लीन हो
स्वीकृत करें 'सज्जन' विनय प्रभु आप तारणहार है। अनन्त ॥११॥

१५. धर्मनाथ जिन स्तवन

(राग काफी . ऐसे श्याम सलोने खेलत नेमिकुमार)

वन्दू, धर्म जिनेश्वर, भाव धर्म दातार ... .. . ।।स्वामी।।
भानु नृपति कुल गगनाङ्गण के अद्भुत भानु उदार,
सदा उदित रहते है निशदिन, करते तेज प्रसार। वन्दूँ . .।।१।।

सुव्रता जननी सत्नकुक्षि मे, प्रभुवर लिया अवतार,
जन्म समय प्रकाश त्रिभुवने, सुखमय हुआ ससार। वन्दूँ ... ।।२।।

धर्म नाम सार्थक किया प्रभु ने, करके धर्म प्रचार,
आत्मधर्म रत्नत्रय रूपे, समझाया स्वय धार। वन्दूँ ... ।।३।।

दशविध धर्म कहा स्थानाङ्गे, सुनकर किया सुविचार,
लौकिक लोकोत्तर धर्मद्वय, स्वस्थाने श्रीकार। वन्दूँ . .।।४।।

कर्त्तव्यवाची लौकिक धर्मे, नैतिक जग व्यवहार,
नैतिकता ही धर्म की जननी, धर्म से सब सुखसार। वन्दूँ ....।।५।।

धर्म द्वि-रूपे प्रचलित जग मे, उपासना आचार,
प्रथम धर्म आचार शास्त्र मे, द्वितीय भक्ति उरधार। वन्दूँ ....।।६।।

जीवन परिवर्तित चर्या से, यम ही मूलाधार,
यम पश्चात् है स्थान नियम का, जप तप भक्ति प्रचार। वन्दूँ ... ।।७।।

जीव है नित्य कर्म का कर्ता, भोक्ता जीव विचार,
मोक्ष है मोक्ष का मार्ग भी है, यही आस्तिकता आधार। वन्दूँ ....।।८।।

मृत्तिका स्वर्ण तेल तिलवत् ज्यो, जीव-कर्म एकाकार,
पृथक्करण हो अग्नियन्त्र से, तप सयम उपचार। वन्दूँ ....।।९।।

कर्म-मुक्त आत्मा भी ज्यो ही, हो जाता अविकार,
जिसके आराधन से जग मे, तरे भव्य नरनार। वन्दूँ ...।।१०।।

दे दो मुझको सम्यग् श्रद्धा, सम्यग् ज्ञानाचार
'सज्जन' अष्ट कर्म से मुक्ति प्राप्त करे जयकार। वन्दूँ ॥११॥

१६ शान्तिनाथ जिन स्तवन

(तर्ज-हे हृदयेश हितकर गुरुवर।)

श्री शान्तिनाथ भगवान हमें सुख शान्ति मार्ग दिखलादो
प्रभु विधि समझादो ॥स्थायी॥

काल अनादि से भव-वन में भटक रहे अधकार गहन में
ज्ञान की ज्योति जगादो तम तिमिर हटादो। श्री ॥१॥

भव वन है यह महा भयकर, पद-पद पर है काँटे ककर
इनको दूर हटादो बाधाएँ मिटादो। श्री ॥२॥

क्रोध के अजगर वैठे मग मे मान मतगज खडे पग-पग में
कैसे बढूं बतादो प्रभु। राह दिखादो। श्री ॥३॥

माया डाकिनी मुझे डराती खाऊंगी कह आँख दिखाती
शक्ति मेरी बढा दो कायरता भगा दो। श्री ॥४॥

लोभ दस्यु दल खडा है आगे भागें तो हम कैसे भागें
प्राण हमारे बचादो हमें अभय बनादो। श्री ॥५॥

मोह सिंह चीते गुर्राते दहाडो से दिल को दहलाते
मिथ्या ज्ञान हटादो सम्यक्त्व जगादो। श्री ॥६॥

चंचल मन वनमानुप जैसे चिल्लाते है भूतों जैसे
इनको पथ से हटादो निर्विघ्न बनादो। श्री ॥७॥

भोग दावानल धधक रहा है इसका भी तो ताप महा है
इसको शीघ्र बुझादो आतम सरसा दो। श्री ॥८॥

आत्मज्ञान पीयूष की धारा, बरसे तो दव शान्त हो सारा,
भगवन्! झट बरसादो, मुझ मन हरपादो। श्री .. ॥९॥

भवारण्य से पार हो जाऊं, मुक्ति महल मे जा वस जाऊं
सिद्धि सोपान चढादो, दुविधाए मिटादो। श्री . ॥१०॥

'सज्जन' मन मे ज्ञान उजाला, हो जाये ज्यों मगल माला,
विजय ध्वजा फहरादो,मुक्ति पहुँचादो। श्री ... ॥११॥

१७. कुन्थु जिन स्तवन

(राग · प्रभुजी आयो थारे द्वार......)

प्रभु कुन्थु जिनेश्वर सुनिये जी, अब मेरी यह अरदास।
मुझे आत्मधर्म अब दीजेजी, कर्मो का करू विनाश ॥स्थायी॥

'सुर' नृपति के कुलतारे, 'श्री' माता के राजदुलारे,
प्रभु आत्मधर्म को धारे जी, वारे कर्मो का त्रास .... ॥१॥

ज्ञानावरणी ये लुटेरा, नित लूटे ज्ञान धन मेरा,
होने नहीं देता सवेरा जी, करता रहता उपहास . .. ..॥२॥

दर्शनावरणी जब आता, निद्रा पचक फैलाता,
निज रूप का नाम भुलाता जी, कैसे हो उसका नाश .... . ॥३॥

है वेदनी दोय प्रकारा, मधु लिप्त खड्ग की धारा,
आस्वादन रसना विदाराजी, देता है अधिक सत्रास ....॥४॥

दर्शनमोहनी जब जावे, तब आत्मरूप लख पावे,
परमोत्तम भावना भावेजी, हो जावे दृढ विश्वास ......॥५॥

चारित्रमोह सक्षय से, कर्मो पर पूर्ण विजय से,
हो जीव मुक्त भव भय से जी, तोडे कर्मों के पाश . ... ॥६॥

इस आयु कर्म की कारा मे बन्दी आतम बेचारा
विन भोगे नहीं छुटकारा जी होता है अति निराश ॥७॥

शुभ नाम गोत्र प्रभावे दशविध दुर्लभ तन पावे
अन्तराय क्षयोपशम भावे जी कर पावे स्वगुण विकास ॥८॥

मुझे भावधर्म अब दीजे इतनी सी करुणा कीजे
विनती यह स्वीकृत कीजे जी, मिल जाये ज्यों आश्वास ॥९॥

कुन्थु जिन नाम तुम्हारा जपते हो भव निस्तारा
करदो हे नाथ हमारा जी शुद्धात्म धर्म सुविकास ॥१०॥

जब ज्ञान चेतना जागे आतम में आतम लागे,
'सज्जन' बस इतना माँगे जी चरणों में हो सवास ॥११॥

१८ अरनाथ जिन स्तवन

(तर्ज- दिल न दुखाना)

शिव सुखकारी शरण तिहारी मै आई प्रभुजी तारिये दुख वारिये
जाऊं बलिहारी शिव ॥स्थायी॥

माँ देवी उर मानसरोवर आप राज-मराल है।
सुदर्शन नृप महा उपवन के मधुर सु-रसाल है।
स्वर्ण देहधारी शरण ॥१॥

आप ही भरताधिपति थे चक्रधारी सातवें।
वर धर्मचातुरन्त चक्री आप ही अट्ठारहवें।
धर्म प्रचारी शरण ॥२॥

अरनाथ जिनवर आज मेरी अरज यह सुन लीजिये।
भव सिन्धु विच में भटकती ये पार नैया कीजिये।
जग-जन तारी शरण ॥३॥

अज्ञानतम छाया है गहरा, ज्ञान का प्रकाश है।
दीखे कैसे मार्ग हमको, हो रहे निराश है।
झझा है भारी .. शरण .... ॥४॥

लगते तरङ्गो के थपेडे, डगमगती नाव है।
पार जाने का जरा भी नही मिलता दाव है।
निशि अधियारी . . शरण ..... ॥५॥

मोह दस्यु है सदल बल, ससार सागर मे सदा।
भ्रमण करता देख अवसर, न जाने आवे कदा।
मै निर्बल नारी . . शरण ..... ॥६॥

मिथ्यात्व सबमे प्रबल योद्धा, कैसे इससे जय मिले।
यह सेनानी मोह का, इसके विजय से सब हिले।
प्रभु लो विचारी .... . शरण ...... ॥७॥

करो करुणादृष्टि दर्शन, मोह का ज्यो नाश हो।
नष्ट हो अज्ञान तम, सज्ज्ञान का सुप्रकाश हो।
तिमिर निवारी .. शरण . ... ॥८॥

क्रोध मद माया तथा, वह लोभ फिर रहता नहीं।
अर्द्धपुद्गलपरावर्तन, काल मे मुक्ति सही।
स्वगुण विहारी . शरण ..... ॥९॥

चारित्रमोह निर्बल बने, बलवान हो चित् शक्तियाँ।
ज्ञानादि श्रेष्ठ चतुष्क की, हो जाये द्रुत अभिव्यक्तियाँ।
बने शिवचारी . . शरण .... ॥१०॥

सिद्धि पथदर्शक हमारा, पथ-प्रदर्शन कीजिये।
प्रणत है श्री चरण मे, विनयाभिवन्दन लीजिये।
'सज्जन' तुम्हारी शरण .... ॥११॥

१९ मल्लिनाथ जिन स्तवन

(तर्ज-पनिहारी हुकम करो तो सासू जल)

मल्लि जिनेन्द्र मेरी विनती सुन लेना आई हूँ शरण तुम्हारी ॥स्थायी॥

कुम्भ नृपति प्रभावती नन्दन शिवसुख कन्दा सुखकारी।
जगदीश्वर जगतिलक जगतरवि जगजीवन जगहितकारी ॥१॥

भव अर्णव है महा भयंकर फिरते अगणित जलचारी।
भांति भांति के मगरमत्स्य जहाँ क्षुद्र और महा देहधारी ॥२॥

पर्वत सी ऊंची लहरों पर जब चढती तरणी प्यारी।
दो लहरों के मध्य में आकर लगता ये डूबी सारी ॥३॥

मन मांझी मेरा मनमौजी स्वच्छन्द और स्वेच्छाचारी।
इच्छा हो तो डांड चलाये नहीं रहे कर पे कर धारी ॥४॥

मैं भूली अपनी शक्ति को पूर्व कर्मवश हो भारी।
विवश हो रही दुःख भोगने वन्धी हूँ है लाचारी ॥५॥

कृपादृष्टि की एक झलक भी जो हो जाये इस वारी।
धन्य धन्य कृतपुण्य वनूं मैं मानूं सफल ये अवतारी ॥६॥

भवसागर में मेरी यह नैया डगमग डोले वेचारी।
राग-द्वेष मद-मोह सतावें कैसे जाऊं मैं उस पारी ॥७॥

जीव अनेकों तार है तुमने अवके है मेरी वारी।
करुणा करके पार लगाओ आप हो प्रभु करुणाधारी॥८॥

किसकी जाके शरण ग्रहूँ मैं आप सदृश्य नहीं जगतारी।
केवल आपकी आशा है मुझको तारो अरजी अवधारी॥९॥

भवसिन्धु से सुखसिन्धु में ले जाओ हे भवतारी।
भगवन्! आप हो मुक्ति के दाता हो त्रैलोक्य के हितकारी॥१०॥

सुरगण पूजित तव पद पकज, पाये आज आनन्दकारी।
ज्ञानोपयोग की ज्योति जगादो, ज्यो 'सज्जन' हो भवपारी॥ ११ ॥

२०. मुनिसुव्रत जिन स्तवन

(तर्ज-राधेश्याम)

श्री मुनिसुव्रत सुव्रत धर कर तीर्थंकर कहलाते है।
स्याद्वाद से सप्तभगी का, सत्स्वरूप वतलाते है ॥स्थायी॥

वृक्ष अशोक बना सगति से, मन हर्षित हो जाते है।
पुष्पो के बधन नीचे हो, मृदु सुरभि फैलाते है ॥१॥

दिव्यध्वनि है योजनगामिनी, सुरनर-तिरि सुन पाते है।
पाप ताप सन्ताप सभी तो, उन सबके मिट जाते है ॥२॥

चामरयुग्म ढुलकते दोनों-ओर यही समझाते है।
नमन करो इन चरणों मे ये, पतितपावन कहलाते है ॥३॥

हेमाद्रि तुल्य वर स्फटिक सिहासन, पर प्रभु शोभा पाते है।
भामण्डल की शान्तोज्ज्वल छवि, देख भविक सुख पाते है ॥४॥

गगनाङ्गण मे तव महिमा की, दुन्दुभि देव बजाते है।
आओ-आओ भव्य यहा ये, अशरण शरण कहाते है ॥५॥

तीन छत्र राजत शिर पर, त्रिभुवन प्रभुता दर्शाते है।
सर्वोत्तम दर्शन पा दर्शक, धन्य-धन्य बन जाते है ॥६॥

जलधर सम तव श्याम वदन लख, भवि मयूर हर्षाते है।
नयन युगल तव शान्त सुधा की, सलिल धार वर्षाते है ॥७॥

जिसको तृषित भक्तजन पीकर, खूब तृप्त हो जाते है।
जन्म मरण ससारभ्रमण सब, उनके द्रुत मिट जाते है ॥८॥

सुरनर मुनिगण कविगण मिलकर, यश निशदिन ही गाते है।
विस्मय है पर आपके गुण का, पार नही वे पाते है ॥९॥

देना सुव्रत मुनिसुव्रत जिन। दाता आप कहाते हैं।
निरूपम आनन्द शीघ्र दीजिये विनती यही सुनाते है ॥१०॥

शुभतम ज्ञानोपयोग प्रदाता आप मे बस रम जाते है।
'सज्जन' जन तव शरण प्राप्त कर भवजल से तिर जाते है ॥११॥

२१ नमि जिन स्तवन

(राग माड नखराली ए मूमल हालो नी झट)

पाया प्रबल पुण्य के परमोदय से श्री जिनदर्शन आज ॥स्थायी॥

श्री जिन दर्शन आतमदर्शन हेतु है।
पाया दर्शन दर्शन काज ॥१॥

श्री जिन दर्शन भव सरिता का सेतु है।
दर्शन है भव तारण तरण जहाज रे ॥२॥

श्री जिन दर्शन निर्मल शीतल नीर है।
पान से ताप त्रय जाये भाज रे ॥३॥

श्री जिन दर्शन सुखप्रद मलय समीर है।
स्पर्श से दूर हो सार भव दुख दाझ रे ॥४॥

श्री जिन दर्शन सुरतरु गृह आँगण फले।
सिद्ध हों सारे मुझ मनवांछित काज रे ॥५॥

श्री जिन दर्शन रत्न चिन्तामणि मिले।
चिन्ता दूर हो पावे सब सुख साज रे ॥६॥

श्री जिन दर्शन विन पाये भव-सिन्धु में।
भ्रमण करावे महाबली मोहराज रे ॥७॥

श्री जिन दर्शन पाकर भवि होते सदा।
कर्म क्षय कर त्रिभुवन के शिरताज रे ॥८॥

श्री जिन दर्शन पाया स्वर्ण सुयोग से।
ज्ञान से जागा सुप्त ये चेतन राज रे ॥९॥

श्री जिनवर तुम दर्शन के अभाव में।
विभाव में रमते हो गया आत्म अकाज रे ॥१०॥

पद पकज मे 'सज्जन' की यह प्रार्थना।
स्वीकृत कर प्रभु दो दर्शन मुझ आज रे ॥११॥

२२. श्री नेमि जिन स्तवन

(तर्ज-मारवाड़ी-लोटन करवा की)

प्रभु नेमि सावरिया,
तोरण से रथ फेर चले गिरनार ॥स्थायी॥

शिवा देवी के लाडले जिनजी रे .
सुखकारी रे प्रभु नेमि सावरिया,
यदुकुल सरवर राजहस श्रीकार ॥१॥

पावस घन सम वर्ण है जिनजी रे.. .
शिवकारी रे प्रभु नेमि सांवरिया,
देख देख कर हर्षित खग परिवार.. ॥२॥

नील ज्योति लख दूर हो जिनजी रे .
भयहारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
तन मन के त्रय ताप सन्ताप प्रचार ॥३॥

मित्रो के सग खेलते प्रभुजी रे .
मनहारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
आये प्रभु जी कृष्ण के शस्त्रागार ॥४॥

क्रीडा के वश शख बजाया प्रभुजी रे....
सुखकारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
कम्पित हो गया नाद से सब ससार ॥५॥

शख ध्वनि सुन चमके यदुपति रे...
शिवकारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
चिन्ता हो गयी मन मे अपरम्पार ॥६॥

यादव कुल में है सर्वाधिक प्रभु जी रे
भयहारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
महा बलवान् है अरिष्टनेमि कुमार ॥७॥

सम्बन्ध करे राजुल साथ में जिनजी रे
मनोहारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा
व्याहन आये उग्रसेन नृप द्वार ॥८॥

पशुओ का करुण क्रन्दन सुन जिनजी रे
शिवकारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा
बन्धन मुक्त करावे करुणागार ॥९॥

रथ को मोडके चल दिये जिनजी रे.
शिवकारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा
देख के विस्मित थे यादव नरनार ॥१०॥

दृश्य देख के मूर्च्छित हुई राजुल रे
मनोहारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा,
तोडे कंकण छोडे सब श्रृगार ॥११॥

मैं प्रियतम पथ संचरू सखियां रे
जयकारी रे सती राजमती कहे
मेरे तो प्रभु एक ही मात्र आधार ॥१२॥

पति पद का अनुसरण ही सखियो रे
तुम सुनलो रे मेरी प्यारी सखियों
है सतियों का यही परम आचार ॥१३॥

दीक्षा ले पति पास ही राजुल रे
सुखकारी रे सती राजीमती ने
पति से पहले खोले मोक्ष के द्वार ॥१४॥

अद्‌भुत जग में नेम-राजुल की जोडी रे.
शिवकारी रे प्रभु नेमि जिनन्दा
'सज्जन' करते वन्दन वारम्वार ॥१५॥

२३. पार्श्व जिन स्तवन

(तर्ज - पणिहारी .. .)

विनती यह सुन लीजिये श्री पार्श्व जिनन्द ..
आप हे जगदाधार जय जय जिनचन्द ॥स्थायी॥

अश्वसेन नृप नन्द तुम, वामाङ्गज देव,
पुरुषादानी पार्श्व, सुर नर करे सेव .. ॥१॥

दुष्ट कमठ हठ देखके, दया दिल में धार,
जलता बचाया नाग, धन्य कहे ससार . ॥२॥

भव दावानल मे प्रभु, जलती हूँ मै नाथ,
है दुख अपरम्पार, पकडो मेरा हाथ ॥३॥

बाहर मुझको निकालिए, हे करुणागार!
मेटो प्रभु त्रय ताप, वर्षा के सुधा धार .. ॥४॥

अब तो मै हारी प्रभु, फिरती गति चार,
देदो अविचल धाम, भवभ्रमण निवार ॥५॥

चिन्तामणि चिन्ता हरो, मेरी इस बार,
शरणागत प्रतिपाल, चिन्तित दातार .. ॥६॥

अभिलाषा मेरी यही, सुनिये सरकार,
तोडो कर्म की जाल, ज्यो करू आत्मोद्धार .. ॥७॥

दीन अवस्था देख के, कुछ करिये सभार,
तब चरणो का आधार, मुझको जगतार .. ॥८॥

आनन्द सिन्धो ! आपके पद-पद्म प्रधान,
शान्तिदायक सुखकार, पूजू करू गुणगान ॥९॥

अनुपम ज्ञान की ज्योति से, हटे मोहान्धकार,
पाकर शुभ उपयोग, 'सज्जन' हो भवपार ॥१०॥

२४ महावीर जिन स्तवन

(तर्ज-वीणावादिनी वर दे)

वीर महावीर की जय हो - जय हो ऽ ऽ ऽ जय हो ऽ ऽ ऽ
सुर नर वन्दित जग अभिनन्दित विश्व-ज्योति जय हो ॥स्थायी॥

मातृ कुक्षि में अचल हुये जब मातृ दुखवश नियम लिया तब
पितरौ जीवित व्रत न धरूं अव मातृभक्त । जय हो ॥१॥

सुरपति मन में सशय आया सिंहासन अंगुष्ठ दबाया
जन्मोत्सव में मेरु कपाया अतुलबली। जय हो ॥२॥

शैशव में आमलकी क्रीडा, हारा सुर पाया अति व्रीडा
मेटी सबकी मानस पीडा अपराजित। जय हो ॥३॥

भ्रातृ प्रेमवश वर्ष द्वय तुम रहे धाम पर संयम मय तुम
उच्चादर्श प्रदर्शित कर तुम धन्य बने। जय हो ॥४॥

शुलपाणि पर करुणा दृष्टि चण्डकौशिक पर सुधा की वृष्टि,
संगम पर भी दया सुदृष्टि क्षमामूर्ति । जय हो ॥५॥

टूट चन्दनबाला बन्धन उडद बाकुले ले भिक्षाशन
दुन्दुभि नाद हुआ गगनाङ्गण बोले सुर जय हो ॥६॥

इन्द्रजालिक है कहते आये इन्द्रभूति प्रधान बनाये
मेघकुंवर की दुविधा मिटाये तीर्थंकर। जय हो ॥७॥

आयी मुक्तिगमन की वेला दूर किया गौतम सा चेला
इस जग में क्षण भर का मेला सिद्ध किया जय हो ॥८॥
हा-हा-रव देवों का सुनकर स्तब्ध हो गये गोतम गणधर
कर विलाप फिर सोचा क्षण भर वीतराग। जय हो ॥९॥
क्षीण मोह वे मैं अनुरागी अन्तर्दृष्टि आलम में लागी
सुप्त शक्तियाँ तत्क्षण जागी दिया स्व-पद जय हो ॥१०॥
पंचाविंश निर्वाण शताब्दे, कान्ति सिन्धु गुरुदेव प्रसादे,
'सज्जन' गावे मधुर निनादे वर्द्धमान जय हो ॥११॥

विविध तप विधियाँ

दूज तप की विधि

यह तप शुभ दिन शुभ मुहूर्त मे शुक्ल बीज से प्रारम्भ किया जाता है। इस तप में ज्ञानपद या श्रुतपद की आराधना की जाती है। दो वर्ष मे यह तप पूर्ण किया जाता है। " ॐ ह्रीं श्री नमो नाणस्स' की २० माला फेरनी चाहिए। खमासमणा, प्रदक्षिणा, साथिया, कायोत्सर्ग ५१-५१ अथवा ५-५ करना चाहिए। दोनो समय प्रतिक्रमण, देववन्दन आदि यथावत् करने चाहियें।

दूज का चैत्यवंदन

राग द्वेष को टालिए, बीज दिवस सुखकार
द्वि विध धर्म जिनवर कहें साधु श्रावक सार ॥१॥

दोय वरस दोय मास मां, उत्कृष्ट जीवाजीव।
आर्त्त रौद्र को दूर करो, आराधो शुभभाव ॥२॥

भावो नित नित भावना, मुक्ति आराधन भाव।
दूज तिथि आराधना, माणक कहे चित चाव ॥३॥

बीज का स्तवन

(तर्ज—गोपीचन्द)

महावीर जिनन्दा, नमन करू रे सच्चे भाव से . ॥टेर॥
बीज दिवस सुन्दर जिनराया, श्रीमुख से फरमावे
जे नर शुद्ध मन से आराधे, परमानद पद पावेजी ॥१॥

बीज दिने उत्तम कल्याणक पच हुये श्रीकार
वर्तमान शासन जिनराया, बोले आनंदकार जी ॥२॥

सुमतिनाथ अरनाथ केरे च्यवन कल्याणक जान
वासुपूज्य शीतल जिनन्द रे पाये केवलज्ञान जी ॥३॥

शीतल मुक्ति-पद को पाये बीज दिवस सुखकार
अतीत अनागत गिनते भविजन, फल अनंत अपार जी ॥४॥

वीर प्रभु ने धर्म दिखाया श्रावक और अणगार
धर्म-शुक्ल दोय ध्यान निरंतर ध्यावो जय-जयकार जी ॥५॥

बीज दिवस के चन्द्रोदय के, दर्शन करे संसार
चढती कला दिन-दिन वधे भवि बीज दिवस जगसार जी ॥६॥

दो महिने लघु से आराधो, जावजीव उत्कृष्ट
दोय वर्ष दोय मास से बीज करो शुभ दृष्ट जी ॥७॥

बीज पर्व के तप करने से, नष्ट होय दोय बंध
राग द्वेष शत्रु हटे रे, मिट जावे भव-फन्द जी ॥८॥

चौविहार उपवास करी ने आराधो शुभ पर्व
मन वाछित सब ही फले भवि पावे सुखनिधि सर्वजी ॥९॥

धन शासन जिनराज का रे, जग जीवन आधार
वर्धमान जिनराज को जी वन्दूं बारंबार जी ॥१०॥

सुखसागर भगवान हो, त्रैलोक्यनाथ हितकार
आनन्दरत्नाकर कहे जी बीज दिवस मनुहार जी ॥११॥

श्री सीमन्धर जिन स्तवन

(तर्ज-थोडे दिन की जिन्दगानी)

महाविदेह में जाना ओ चन्दा। मेरा सन्देश सुनाना
कुछ यहां का हाल बताना ॥टेर॥

पुष्कलावती विजय में है, सीमन्धर भगवान,
स्वर्ण वर्ण तन अति ही मनोहर, धनुष पञ्चशत मान
लञ्छन वृषभ सुहाना ॥१॥

रजत स्वर्ण रत्न प्राचीरें है, समवसरण सुन्न स्थान
स्फटिक रत्न सिंहासन पर प्रभु, रहते विराजमान
है चामर छत्र प्रधाना ॥२॥

चैत्य वृक्ष है अधोभाग में ऊपर वृक्ष अशोक
यशो-दुन्दुभि देव बजाते, भामण्डल आलोक
आते है देव विमाना ॥३॥

द्वादश पर्षद् सुने प्रभु वाणी, कोई उत्थित आसीन
नत मस्तक विनयाञ्जलि जोडे, मानस प्रभु पद लीन
निर्निमेष दृगवाना ॥४॥

नही यहा पर अवधिज्ञानी, श्रुत का नही विशिष्ट प्रकाश
सब यों कहते हम ही सच है, कैसे हो विश्वास
तूं तत्त्व पूछ के आना ॥५॥

भिन्न-भिन्न मति है जग मे, कोई कहते बस व्यवहार
निश्चयवादी मात्र ज्ञान को, कहते बस व्यवहार
यह सशय पूछ मिटाना ॥६॥

यद्यपि दोनो वाहन के, ये चक्र है अति प्रधान
एक चक्र का वाहन अधूरा, जाने सब बुद्धिमान
फिर भी झूठा हठ ठाना ॥७॥

आगम मे सत्य कहाते हे, चारो ही निक्षेप
स्थापना का निषेध करते, मति विभ्रम विक्षेप
इसको दूर हटाना ॥८॥

पूजा मे पाप बताते, जिन दर्शन मे भी दोष
प्रतिमा को पत्थर बतलाते, करे धर्म उद्घोष
ऐसा भ्रम जाल फैलाना ॥९॥

हम भरतक्षेत्र के वासी बिन दर्शन रहे उदास
मन मधुकर प्रभु पद पकज की चाहे सुखद सुवास
करुणाकर हमे बुलाना ॥१०॥

हम कैसे जाने सत्पथ नही पथ दर्शक हैं साथ
बन्धु शशधर। मन की बातें कहना जोडकर हाथ
'सज्जन' की शंका मिटाना ॥११॥

बीज की स्तुति (1)

मन शुद्ध वंदो भावे भवियण श्री सीमधर राया जी
पाचसौ धनुष प्रमाण विराजित कचनवरणी काया जी
श्रेयांस नरपति सत्यकी नदनवृषभ लछन सुखदाया जी
विजयवली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पाया जी ॥१॥

काल अतीत जे जिनवर हुवा होस्ये जेह अनता जी
सप्रति काले पंचविदेहे वरते बीस विख्याता जी
अतिशयवंत अनत गुणाकर जग बधव जगत्राता जी
ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साता जी ॥२॥

अरये श्री अरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणी जी
मोह मिथ्यात्व तिमिर भर नाशन अभिनव सूर समाणी जी
भवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय-निक्षेप सोहाणी जी
ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भविप्राणी जी ॥३॥

शासनदेवी सुरनर सेवी श्री पंचांगुलि माई जी
विघन विडारणी संपति कारणी सेवक जन सुखदाई जी
त्रिभुवन मोहिनी अंतर जामिनी जग जस ज्योति सवाई जी
सानिधकारी संघ ने होय जो श्री जिन हर्ष सुहाई जी ॥४॥

(2)

उजवाली बीज सुहावे रे चन्दा रूप अनुपम भावे रे
चंदा विनतडी चित धरजो रे सीमंधर ने वन्दना कहीजो रे ॥१॥

हू तो वीस विहरमानों ने वन्दू रे, हू तो वीसो ने करू प्रणामो रे
चन्दा एक सन्देशो कहजो रे, सीमन्धर जी ने वन्दना होजो रे ॥२॥

सीमन्धर जी नी वाणी रे, ऐ तो सुणता अमीय समाणी रे
चन्दा आप सुणो मुझने सुणावो रे, म्हारा भव संचित पाप गवामो रे ॥३॥

सीमन्धर जी नी सेवा रे, ए तो शासन वासन मेवा रे
ए तो होजो सघ ने शाता रे, जिन चन्द नंदन विख्याता रे ॥४॥

पंचमी तप की विधि

यह तप शुभ दिन शुभ मुहूर्त मे कार्तिक शुक्ल पंचमी अथवा अन्य शुक्ल पक्ष की पचमी से प्रारम्भ किया जाता है। इस तप मे ज्ञानपद की आराधना की जाती है। पाच वर्ष पाच मास में यह तप पूर्ण होता है। " ॐ ह्रीं श्री नमो नाणस्स" की २० माला फेरनी चाहिए। खमासमणा प्रदशिक्षणा आदि ५१-५१ करने चाहिए। सर्व क्रियाए प्रतिक्रमाणादि यथावत् जाने। विशेष विधि ज्ञान पचमी की पुस्तक से जाने।

खमासमणा

१	स्पर्शनेन्द्रिय	व्यञ्जनावग्रह	मतिज्ञानाय	नम·
२	रसनेन्द्रिय	व्यञ्जनावग्रह	मतिज्ञानाय	नम
३.	घाणेन्द्रिय	व्यञ्जनावग्रह	मतिज्ञानाय	नम·
४	श्रोत्रेन्द्रिय	व्यञ्जनावग्रह	मतिज्ञानाय	नम·
५.	स्पर्शनेन्द्रिय	अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम
६.	रसनेन्द्रिय	अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम
७	घ्राणेन्द्रिय	अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम·
८.	चक्षुरिन्द्रिय	अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम·
९.	श्रोतेन्द्रिय	अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय	नम

१०	मनोऽर्थावग्रह्	अर्थावग्रह्	मतिज्ञानाय	नम
११	स्पर्शनेन्द्रिय	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१२	रसनेन्द्रिय	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१३	घ्राणेन्द्रिय	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१४	चक्षुरिन्द्रिय	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१५	श्रोत्रेन्द्रिय	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१६	मनो	ईहा	मतिज्ञानाय	नम
१७	स्पर्शनेन्द्रिय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
१८	रसनेन्द्रिय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
१९	घ्राणेन्द्रिय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
२०	चक्षुरिन्द्रिय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
२१	श्रोत्रेन्द्रिय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
२२	मनोऽपाय	अपाय	मतिज्ञानाय	नम
२३	स्पर्शनेन्द्रिय	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२४	रसनेन्द्रिय	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२५	घ्राणेन्द्रिय	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२६	चक्षुरिन्द्रिय	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२७	श्रोत्रेन्द्रिय	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२८	मनो	धारणा	मतिज्ञानाय	नम
२९	अक्षर	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३०	अनक्षर	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३१	संज्ञि	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३२	असंज्ञि	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३३	सम्यक्	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३४	मिथ्या	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३५	अनादि	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३६	अनादि	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३७	सपर्यवसित	श्रुत	ज्ञानाय	नम
३८	अपर्यवसित	श्रुत	ज्ञानाय	नम

३९	गमिक	श्रुत	ज्ञानाय	नम.
४०	अगमिक	श्रुत	ज्ञानाय	नम
४१	अग प्रविष्ट	श्रुत	ज्ञानाय	नम
४२	अनंग प्रविष्ट	श्रुत	ज्ञानाय	नम·
४३	अनुगामी	अवधि	ज्ञानाय	नम.
४४	अननुगामी	अवधि	ज्ञानाय	नम
४५:	वर्द्धमान	अवधि	ज्ञानाय	नम
४६	हीयमान	अवधि	ज्ञानाय	नम
४७	प्रतिपाति	अवधि	ज्ञानाय	नम
४८.	अप्रतिपाती	अवधि	ज्ञानाय	नम
४९	ऋजुमति	मन पर्यव	ज्ञानाय	नम.
५०.	विपुलमति	मन पर्यव	ज्ञानाय	नम
५१	लोकालोकप्रकाशक	श्री केवल	ज्ञानाय	नम

पाँच खमासमणा

1 मतिज्ञानाय नम
2. श्रुत ज्ञानाय नम
3. अवधि ज्ञानाय नम.
4. मन पर्यव ज्ञानाय नम
5 लोकालोक प्रकाशक श्री केवल ज्ञानाय नम

ज्ञानपंचमी का चैत्यवंदन

(१)

(हरिगीतिका छन्द)

ज्योति स्वरुप अनूप सव गुण, भूप शिव सुखदायक
ह्रदयान्धकार विकार वारण, पुण्य कारण नायकम्·
मति आदि पच प्रकार भव, परपच दूर निवारकं
ज्ञान सदा वन्दे विनय युत, नय प्रमाण सुधारकम् ॥१॥

गुरुदेव दिव्य प्रधान प्रसाद से जो होत है
सब लोक और अलोक मे जिसका महा उद्योत है
जो एक और अनेक रूप विवेकवर विस्तारकम्
ज्ञान सदा वन्दे विनययुत नय प्रमाण सुधारकम् ॥२॥

सुखसागर भगवन पदवी, परम पावन लायक
शुभ पचमी व्रत साधना से शुद्ध बुद्धि विधायकम्
नत 'हरि कवीन्द्र' सुकीर्तितं अति भीम भव-भव्य हारक
ज्ञान सदा वन्दे विनययुत नय प्रमाण सुधारकम् ॥३॥

(२)

त्रिगडे बैठा वीर जिन भाखे भविजन आगे
त्रिकरण शु त्रिहुं लोक जन निसुणे मन रागे ॥१॥

आराधे भली भांति से पाचम उजवाली
ज्ञान आराधन कारणे एहिज तिथि निहाली ॥२॥

ज्ञान विना पशु सारीखा जाणे इण ससार
ज्ञान आराधन थी लहे शिव पद सुख श्रीकार ॥३॥

ज्ञान रहित क्रिया कहीं कास कुसुम उपमान
लोकालोक प्रकाश कर ज्ञान एक परधान ॥४॥

ज्ञानी श्वासोच्छवासमां करे कर्मनो छेह
पूर्व कोडी बारसा लगे अज्ञानी करे जेह ॥५॥

देश आराधक क्रिया कही सर्व आराधक ज्ञान
ज्ञान तणी महिमा भणी अंग पांच मे भगवान ॥६॥

पांच मास लघु पन्चमी जाव जीव उत्कृष्ट
पंच बरस पांच मासनी पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥७॥

एकावनहि पंचनो काउसग्ग लोगस्स केरो
उजमणो करो भाव सूं टालो भव फेरो ॥८॥

इण परे , पचमी आराधिए, आणी भाव अपार
वरदत्त गुण मजरी परे रंग विजय लहो सार ॥९॥

पंचमी का स्तवन

(तर्ज शुद्ध सुन्दर .)

ज्ञान ज्योति दिव्य जीवन, नित्य पावन कीजिए
ज्ञान को आराध्य केवल, ज्ञान को वर लीजिए ॥टेर॥

ज्ञान ज्ञानी आतमा से, शत्रुता करता नही
ज्ञान ज्ञानी की हमेशा, सुखद सेवा कीजिए ॥१॥

सद्‌गुरु अपलाप करना, पाप भारी जान लो।
सद्‌गुरु गुण कीर्तियो का. नित्य गायन कीजिए ॥२॥

ज्ञानी का उपघात ज्ञानी, के लिए या द्वेष भी
कर्म बन्धन हेतु होता, त्याग उसका कीजिए ॥३॥

ले रहे हो ज्ञान कोई, अन्तराय करो नही
जैसें बने वैसे मदद, आनन्द से कर दीजिए ॥४॥

ज्ञान ज्ञानी की कभी, आशातना करना नही
मन वचन काया त्रियोगे, भाव आदर कीजिए ॥५॥

शत्रुतादिक आश्रवो से, आवरण हो ज्ञान का
आश्रवो को त्याग सवर, साधना नित कीजिए ॥६॥

क्षायिकोत्तम भाव से हो, लाभ केवलज्ञान का
केवली अरिहन्त हो, पूजा हमेशा कीजिए ॥७॥

अरिहन्त का जहा जन्म हो, व्रत ज्ञान हो निर्वाण हो
तीर्थ तारणहार उसको, ज्ञान दर्शन कीजिए ॥८॥

साधना के कर्म से ही, कर्म का काटा कटे
वरदत्त और गुणमजरी-सा, भाव पैदा कीजिए ॥९॥

ज्ञान से अरिहन्त होते सिद्ध होते अन्त में
आत्म के श्रद्धान को मजबूत ऐसे कीजिए ॥१०॥

सुख सिन्धु हो भगवान हो हरिपूज्य हो ससार में
हो कवीन्द्रों से सुकीर्तित, शिवरमा वर लीजिए ॥११॥

ज्ञान पचमी का बडा स्तवन

ढाल - १

प्रणमुं श्री गुरुपाय निर्मल ज्ञान उपाय
पचमी तप भणुं ऐ, जन्म सफल गिणुए ॥१॥

चौवीसमो जिणचन्द केवल ज्ञान दिणन्द
त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियण ने कह्यो ए ॥२॥

ज्ञान वडो संसार ज्ञान मुगति दातार
ज्ञान दीवो कह्यो ए, सांचो सदृधयो ए ॥३॥

ज्ञान लोचन सुविलास लोकालोक प्रकाश
ज्ञान बिना पशु ए, नर जाणे किशु ए ॥४॥

अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण
ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥५॥

ज्ञानी श्वसोश्वास कर्म करेजे नाश
नारकीना सहिए, क्रोड बरस कहिए ॥६॥

ज्ञान तणो अधिकार बोल्या सूत्र मझार
किरिया छे सहिए, पण पाछे कहिए ॥७॥

किरिया सहित जो ज्ञान हुवे तो अति परधान
सोना नो सूरो ए, शंख दूधे भर्यो ए ॥८॥

महानिशीथ मझार, पचमी अक्षर सार
भगवत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥९॥

ढाल - २

पचमी तपविधि साभलो, जिम पामो भवपारो रे
श्री अरिहन्त इम उपदिशे, भवियण ने हितकारो रे ॥१॥

मिगसर माघ फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे
इण षट् मासे लीजिए, शुभदिन सदगुरु साखो रे ॥२॥

देव जुहारी देहरे, गीतारथ गुरुवन्दी रे
पोथी पूजो ज्ञानती, शक्ति हुवे तो नन्दी रे ॥३॥

बेकर जोडी भाव सूं, गुरु मुख करो उपवासो रे
पचमी पडिक्कमणो करो, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥४॥

जिण दिन पचमी तप करो, तिण दिन आरम्भ टालो रे
पचमी स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचारिज पिण पालो रे ॥५॥

पाच मास लघु पचमी जावजीव उत्कृष्टी रे
पाच बरस पाच मास नी, पचमी करो शुभदृष्टि रे ॥६॥

चौथ करो एकासणो, पचमी करो उपवासो रे
पारणे वलिय एकासणो कर मन अधिक उल्लासो रे ॥७॥

ढाल - 3

हिव भवियण रे, पचमी उजमणो सुणो
घर सारू रे, वारु धन खरचो घणो
इण अवसर रे आवता वलि दोहिलो
पुण्य जोगे रे, धन पामता सोहिलो ॥१॥

सोहिलो वलिय धन पामता, पिण धर्म काज किया वलि
पचमी दिन गुरु पास आवी, कीजिये काउस्सग रली

त्रण ज्ञान दरसण चरण टीकी देई पुस्तक पूजिये
थापना पहली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजिए ॥२॥

सिद्धान्त नी रे पांच परत वींटागणा
पांच पूठा रे मखमल सूत्र प्रमुख तणा
पाच डोरा रे, लेखण पांच मजीसणा
वास कूंपा रे कांबी वारु वरतणा ॥३॥

वरतणा वारु वलिय कवली, पांच झिलमिल अतिभली
स्यापना चारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पट पाटली
पट सूत्र पाटी पैंच कोथली पंच नवकार वालिया
इण परे श्रावक करे पंचमी उजमणुं उजवालिया ॥४॥

वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिए
घर सारु रे दान वलि तिहां दीजिए
प्रतिमा जिन रे आगल ढोवणुं ढोइये
पूजानां रे जे जे उपगरण जोइए ॥५॥

जोइए उपगरण देव पूजा काज कलश भृंगार ए
आरती मंगल थाल दीवो धूप दाणु सार ए
घन-सार केसर अगर सूकड अंग लूहणों दीस ए
पंच पंच सगली वस्तु ढोवो सगति सूं पंचवीस ए ॥६॥

पांचमीना रे साहमी सर्व जीमाडिए
रात्री जोगे रे गीत रसाल गवाडिए
इण करणी रे करता ज्ञान आराधिए
ज्ञान दरसणे रे उत्तम मारग साधिए ॥७॥

साधिए मारग एह करणी ज्ञान लहिए निरमलो
सुरलोक ने नरलोक माहिं ज्ञानवन्त ते आगलो
अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी शाश्वतां सुख जे लहे
जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिनवर इम कहे ॥८॥

कलश

इम पचमी तप फल प्ररुपक वर्द्धमान जिणेश्वरो
मै थुण्यो श्री अरिहन्त भगवन्त अतुल वल अलवेसरो
जयवन्त श्रीजिन चन्द्र सूरिज सकलचन्द नमसियो
वाचनाचारिज समयसुन्दर, भगति भाव प्रशसियो ॥९॥

पंचमी की स्तुति

(१)

पच अनन्त महन्त गुणाकर पचमी गति दातार
उत्तम पचमी तप विधि दायक ज्ञायक भाव अपार
श्री पचानन लाञ्छन लाञ्छित, वाँछित दान सुदक्ष
श्री वर्द्धमान जिणदसु वन्दो, आणन्दो भवि पक्ष ॥१॥

पूरण पच महाश्रव रोधक वोधक भव्य उदार
पच अणुव्रत पच महाव्रत विधि विस्तारक सार
जे पचेन्द्रिय दमी, शिव पहुता ते सघला जिनराज
पचमी तपधर भवियण ऊपर, सुथिर करो सुपसाय ॥२॥

पचाचार धुरधर युगवर पचम गणधर जाण
पचम ज्ञान विचार विराजित भाजित मद पन्चबाण
पचमकाल तिमिर भरमाहे दीपक सम शोभत
पन्चमी तप फल मूल प्रकाशक, ध्यावो जिन सिद्धान्त ॥३॥

पच परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जे नरनार
वली निर्मल पचमी तप धारक तेह भणी सुविचार
श्री सिद्धायिका देवी अहोनिश आपो सुख अमद
श्री जिन लाभ सुरिंद पसाये, कहे जिनचद मुणिद ॥४॥

(२)

पंचानन्तक सुप्रपच परमा, नन्द प्रदान क्षमं
पचानुत्तर सीम दिव्य पदवी - वश्याय मन्त्रोत्तमम्
येन प्रोज्जवल पंचमी वर तपो, - व्याहारि तत्कारिणाम्
श्री पन्चानन लाछन सतनुतां श्री वर्द्धमान-श्रियम् ॥१॥

ये पंचाश्रवरोघ साधन परा पंच प्रमादी हरा
पंचाणुव्रत पंच सुव्रतविधि प्रज्ञापना सादरा
कृत्वा पच हृपीक निर्जयमयो प्राप्तागतिं पंचमीं
ते मीऽसन्तु सुपंचमी व्रतभृतां तीर्थंकरा शंकरा ॥२॥

पंचाचार घुरीण पंचमगणा, धीशेन संसूत्रितम्
पंच ज्ञान विचार सार कलितं पंचेपु पंचत्वदम्
दीपाभं - गुरुपंच मार तिमिरे प्वेकादशी रोहिणी
पंचम्यादिफल प्रकाशन पटु, ध्यायामि जैनागमम् ॥३॥

पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्री पंचमेरुश्रियाम्
भक्तानां भविनां गृहेपु बहु शोया पंचदिव्यं व्यधात्
प्रहवो पंच जनो-मनो मतकृतौ स्वारत्न पंचालिका
पंचम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका ऱायिका ॥४॥

अष्टमी तप की विधि

यह तप शुभ दिन शुभ मुहूर्त में शुक्ल पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ करके आठ वर्ष आठ मास मे पूर्ण किया जाता है। यह चारित्र तिथि कहलाती है अत चारित्र पद या संयम पद की आराधना की जाती है। " ऊं ह्रीं श्री नमो चारितस्स " की २० माला फेरनी चाहिए।

खमासमणा, प्रदक्षिणा, कायोत्सर्ग आदि १७-१७ करने चाहिऐ। प्रतिक्रमण, देववन्दन आदि यथावत करे।

खमासमणा

1. सर्वत प्राणातिपात विरताय सयमधराय नम·
2. सर्वत मृषावाद विरताय सयमधराय नम
3. सर्वत अदत्तादान विरताय सयमधराय नम
4 सर्वतो मैथुन विरताय संयमधराय नम
5 सर्वतो परिग्रह विरताय सयमधराय नम
6 सर्वतो रात्रिभोजन विरताय सयमधराय नम
7. ईर्यासमिति युक्ताय सयमधराय नम
8 भाषासमिति युक्ताय सयमधराय नम
9. एषणासमिति युक्ताय सयमधराय नम
10. आदान भण्डमत्त निक्षेपणा समिति युक्ताय सयमधराय नम
11 पारिष्ठापनिका समिति युक्ताय सयमधराय नम·
12. मनो गुप्ति युक्ताय सयमधराय नम
13. वचन गुप्ति युक्ताय सयमधराय नम
14 काय गुप्ति युक्ताय सयमधराय नम·
15 मनो दण्ड रहिताय सयमधराय नम·
16. वचन दण्ड रहिताय सयमधराय नम·
17. काय दण्ड रहिताय सयमधराय नम

अष्टमी का चैत्यवंदन

आठ त्रिगुण श्री जिनवर नी, करू नित प्रति सेव
दड वीरज राजा थयो, अष्टमी तप नित मेव ॥१॥

आठ करम दूरे करो, करो प्रभु नित सेव
पार्श्व प्रभु नित ध्यावता, वर्ते आनन्द मेव ॥२॥

चैत वदि आठम दिने, जनम्या ॠषभ जिनन्द
जिन चारित्र सूरि तणो, वन्दे माणकचन्द ॥३॥

अष्टमी का स्तवन - १

(तर्ज - झट जावो चन्दनहार लावो)

भवि भावे आठम दिन आवे जिनद गुण गाते है
कट जाते करम आठ याते परम पद पाते है ॥टेर॥

फागुन सुद संभव प्रभु भादो वदी सुपास
च्यवन कल्याणक में यहां फैला परम प्रकाश जगत सुख पाते है ॥१॥

माघ सुदी जनमें अजीत ऋषभ चैतवद पाख
कुमति हरण सुमति करण सुमति सुद वैशाख सुमति लय लाते है ॥२॥

जेष्ठ वदी आठम दिने मुनि सुव्रत भगवान
वद श्रावण नमिनाथजी, जन्मे पुण्य प्रधान विजय जय पाते है ॥३॥

चैत वदी आठम दिने दीक्षा आदीनाथ
पट्काया के जीव के रक्षक दीनानाथ शरण सब पाते है ॥४॥

सुद आठम वैशाख में अभिनन्दन निर्वाण
सुद आषाढ नेमि सुदी श्रावण पार्श्व महान् मुगति में जाते हैं ॥५॥

आठ महामद छोड के प्रवचन माता आठ
धारणकर जिनवर भजे पावें निज गुण ठाठ गुणी गुण गाते है ॥६॥

वीतराग प्रभु ध्यान को, नित करते निष्काम
प्रकटे अपने आप ही आठ सिद्धि अभिराम महोदय पाते है ॥७॥

द्रव्य भाव दो भेद से पूजा आठ प्रकार
करते भविजन पूज्य पद पाते पुण्य भंडार अशिव मिट जाते है ॥८॥

जीव दया जिन पूजते स्वयं सिद्ध हो जाय
काल लब्धि कारण मिले करम आठ कट जाय अभयपद पाते हैं ॥९॥

सुखसागर भगवान वर, बोधि दान दातार
जिन हरि पूज्येश्वर नमू, ज्योतिर्मय जयकार, और नही भाते है ॥१०॥

आठम दिन आराधना, परमातम पद योग
सकल समाराधक वरे, सहज सिद्ध सुख भोग, कवीन्द्र यश गाते है ॥११॥

(२)

(तर्ज - श्री शान्ति जिणन्द सौभागी)

आठम जिन वन्दन करिये, आठम तप विधि आदरिये
निज आठ परम गुण वरिये ॥टेर॥

आठ कर्म कलक निवारे, आठ मगलं घट विस्तारे
आठ सिद्धि अनुपम भरिये ॥१॥

शठ आठ महामद टारी, अध्यातम रुप विचारी
पूजा आठ प्रकार से करिये ॥२॥

तप आतम बल उपजावे, मोहराज का ताप मिटावे
तप उपशम युत चित धरिये ॥३॥

शुभ योग अवचक धारी, निज आतम कर अविकारी
जिन आज्ञा को अनुसरिये ॥४॥

धर्म शुक्ल सुध्यान के आठ, भेद ध्यावो सदा होय ठाठ
आर्त रौद्र कुध्यान न करिये ॥५॥

देववन्दन गुण सभारा, प्रतिक्रमण बिना अतिचारा
शिव साधन पन्थ विहरिये ॥६॥

षट साखे कर पचक्खाणा, चढिये क्रमश गुणठाणा
ब्रह्मचर्य सुगुण आचरिये ॥७॥

आठ मास करो आठ वर्ष, शुभ भाव सहित अति हर्ष
सुन्दर शिव रमणी वरिये ॥८॥

पूरण तप पुण्य विलासा चढते चित्त अति उल्लासा
उद्यापन उत्सव करिये ॥९॥

सुखसागर श्री भगवाना हरिपूज्य सुपुण्य प्रधाना
पद पा नहीं मोह से डरिये ॥१०॥

तप निर्मलता गुण हेतु
भव सागर तारक सेतु कीर्ति सुकवीन्द्र उचरिये ॥११॥

अष्टमी की स्तुति

(१)

आठम जिन वंदो आठम जिन भगवान
चन्द्रा प्रभु स्वामी देवे अनुपम ज्ञान
अज्ञान मिटादे आठ करम दे तोड
आतम परमातम हो त्रिभुवन सिर मोड ॥१॥

आठम दिन आठो प्रवचन माता सार
आराधक जन को भवसागर दे तार
मद आठ मिटाकर, सुन्दर शिव सोपान
चढ गये नमुं नित सिद्ध परम गुणवान ॥२॥

आतम गुण आठों, आठम दिन आराध
सुख पाये है जन, जग में अव्याबाध
जिन आगम गावे गुरु मुख से इकतार
सविनय निर्भय हो सुनिये जय जयकार ॥३॥

जिन वाणी सुन्दर शासन देवी माय
आठम तप करते सेवो भाव अमाय
दुःख मिट जावे सब, सुखसागर भगवान
हरि कवीन्द्र कीर्तित पद पावो कल्याण ॥४॥

(२)

चउवीशे जिनवर, प्रणमु हुं नितमेव
आठम दिन करिये, चन्दा प्रभु जिनसेव
मूरति मन मोहन, जाणे पूनमचन्द
दीठा दुख जावे, पावे परमानन्द ॥१॥

मिली चौसठ इन्द्र, पूजे प्रभु जीना पाय,
इन्द्राणी अपछरा, कर जोडी गुण गाय
नन्दीश्वर द्वीपे, मिल सुरवरनी कोड
अठाई महोच्छव, करता होडा होड ॥२॥

शत्रुन्जय शिखरे, जाणी लाभ अपार
चौमासे रहिया, गणधर मुनि परिवार
भवियण ने तारे देई धरम उपदेश
दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेष ॥३॥

पोसह पडिक्कमणो, करिये व्रत पचक्खाण
आठम तप करता, आठ करम नी हाण
आठ मगल थाये दिन-दिन कोड कल्याण
जिनसुख सूरि कहे, शासन देवी सुजाण ॥४॥

मौन एकादशी तप की विधि

यह तप शुभ दिन शुभ मुहूर्त्त मे मौन-ग्यारस अथवा शुक्ल पक्ष की एकादशी से प्रारम्भ कर ११ वर्ष ११ मास मे पूर्ण किया जाता है। यह ज्ञान तिथि है अत ज्ञान पद की आराधना की जाती है व मल्लिनाथ भगवान की आराधना भी होती है। ज्ञानतिथि के कारण सर्व क्रियाए ज्ञानपद के अनुसार होती है। मल्लिनाथ भगवान के निमित्त "श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम" २० माला फेरनी चाहिये,

प्रदक्षिणा साथिया खमासमणा आदि अरिहन्त पद के अनुसार १२-१२ करने चाहियें।

अरिहन्त के बारह गुण

1 श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
2 श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
3 श्री दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
4 श्री चामर युगल प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
5 श्री स्वर्ण सिंहासन प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
6 श्री भामंडल प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
7 श्री दुदुभि प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहंताय नम
8 श्री छत्रत्रय प्रातिहार्य सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
9 श्री ज्ञानातिशय सयुक्ताय श्री अरिहताय नम
10 श्री पूजातिशय संयुक्ताय श्री अरिहंताय नम
11 श्री वचनातिशय सयुक्ताय श्री अरिहंताय नम
12 श्री अपायापगमातिशय सयुक्ताय श्री अरिहताय नम

(मौन) एकादशी का चैत्यवन्दन

सर्व अर्थ साधन करे मौन महागुण धाम
श्री मल्लि प्रभु धारते भावे करूं प्रणाम ॥१॥

मिगसर सुद एकादशी मौन महाव्रत धार
अर मल्लि नमिनाथ को वन्दू बारम्बार ॥२॥

श्री अर जिन व्रत धारते, मल्लि जन्म व्रत ज्ञान
श्री नमि जिन केवल लहे जय जय जय भगवान ॥३॥

भरत एरवत क्षेत्र दश तीन काल परिणाम
कल्याणक यों डेढ सौ सुख सागर सुख खाण ॥४॥

जिन हरि पूजित तीर्थ पति, कल्याणक दिन आज
ध्याऊ धन एकादशी, पाऊ अविचल राज ॥५॥

(२)

च्यवन जन्म दीक्षा विमल, केवल वर निर्वाण
कल्याणक प्रभु आपके, जगत जीव सुख ठाण ॥१॥

आराधू मै नाथ नित, साधू निज पद भोग
शक्ति दीजे होय ज्यो, भव दुख भाव वियोग ॥२॥

'जिन हरि' पूज्य प्रभो! सदा, करूं यही अरदास
दया वृद्धि दातार गुण, करो सुपुण्य प्रकाश ॥३॥

इग्यारस का स्तवन

समवसरण बैठा भगवत धरम प्रकाशे श्री अरिहन्त।
बारे परषदा बैठी जुडी, मिगसिर सुदी इग्यारस वडी ॥स्थायी॥

मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवल ज्ञान
अर दीक्षा लीधी रुवडी .... ॥१॥

नमि ने उपन्यु केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान।
ए तिथिनी महिमा एवडी ... ॥२॥

पाच भरत ऐरवत इमहीज, पाच कल्याणक हुवे तिमहीज।
पच्चास नी सख्या परगडी .. ॥३॥

अतीत अनागत गिणता एम, डेढसौ कल्याणक थाये तेम।
कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी .. ॥४॥

अनत चौवीशी इण परे गिणो, लाभ अनत उपवासा तणो।
ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी .. ॥५॥

मौन पणे रह्या श्री मल्लिनाथ एक दिवस सयम व्रत साथ।
मौन तणी परिवृति इम पडी ॥६॥

अठ पौहरी पौसो लीजिये चौविहार विधिशु कीजिये।
पण परमाद न कीजे घडी ॥७॥

बरस इग्यारे कीजे उपवास जाव जीव पण अधिक उल्लास।
ए तिथि मोक्ष तणी पावडी ॥८॥

उजमणुं कीजे श्रीकार ज्ञान ना उपगरण इग्यार इग्यार।
करो काउसग्ग गुरु पाये पडी ॥९॥

देहरे स्नात्र करीजे वली, पौथी पूजी जे मनरली।
मुगति पुरी कीजे ढूकडी ॥१०॥

मौन इग्यारस महोटुं पर्व आराध्यां सुख लहिये सर्व
व्रत पचक्खाण करो आखडी ॥११॥

जेसल सोल इक्यासी समे कीधुं स्तवन सहु मनगमे।
समय सुन्दर कहे करो ध्यावडी ॥१२॥

(२)

(तर्ज - जिनधर्म का डंका)

ग्यारस अनुपम रस की नदियाँ जिन-भक्ति सुधा भर लाती है
जीवन से पापों की वदियां अति दूर वहा ले जाती है ॥टेर॥

आतम परदेशों में पावन सुकृत सद्गुण वर खेती को
पैदा करती रस को भरती मंजुल महिमा दिखलाती है ॥१॥

आधि व्याधि संतापों को हरती कल्याणक लहरों से
परमातम पुण्य महोदय की कमनीय कला प्रकटाती है ॥२॥

मिगसर सुद मल्लि जन्म जयो, अजरामर पद सुविकाश भयो
जग सुख प्रकाश बढाने से ग्यारस गरिमा मन भाती है ॥३॥

मिसगर सुद अर जिन मल्लि प्रभु, वद पौप मे पारस नाथ विभु
दुखहर दीक्षा लेते ग्यारस, सुखकर शिक्षा सिखलाती है ॥४॥

फागुन वद मे आदीश्वर जिन, सुद पौप अजित जय-जयकारी
सुद चैत सुमति-सुमति दाता, केवल वर ग्यारस लाती है ॥५॥

केवल पाये अर मल्लि प्रभु, इकवीसम श्री नमि जिनराया
मिगसर सुद ग्यारस पर्वोत्तम, पदवी जिन मुख से पाती है ॥६॥

पाच भरत पाच ऐरवत मे, पाच-पाच कल्याणक यो
पच्चास कल्याणक लीला से, मिगसर सुद ग्यारस माती है ॥७॥

डेढ सौ कल्याणक मिगसर सुद, तीनो कालो की गिनती से
यो अनन्त कल्याणक अनन्त काल से, ग्यारस पाती जाती है ॥८॥

आराधन भविजन करते है, निज पुण्य भडारा भरते है
ग्यारस सुखसागर की सीमा, सुख सुषमा से सरसाती है ॥९॥

आवाल ब्रह्मचारी नेमि, हरि पूज्य जिनेश्वर फरमावे
यह ग्यारस मौन सहित साधे, भव भय को दूर भगाती है ॥१०॥

ग्यारह प्रतिमाधारी ग्यारह, अगो की पाठी ग्यारस के
आराधक की गुण कीर्ति कथा, सुकवीन्द्र कला दरसाती है ॥११॥

ग्यारस की स्तुति

अरनाथ जिनेशर दीक्षा नमि जिन ज्ञान
श्री मल्लि जन्म व्रत, केवल ज्ञान प्रधान
इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार
ए पच कल्याणक, समरीजे जयकार ॥१॥

इग्यारे अनुपम, एक अधिक गुणधार
इग्यारे बारे प्रतिमा देशक धार।

इग्यारे दुगणा दोय अधिक जिनराय
मन शुद्धे सेव्या सब संकट मिट जाय ॥२॥

जिहां बरस इग्यारे, कीजे व्रत उपवास
वलि गुणनो गुणिये विधि सेती सुविलास
जिन आगम वाणी जाणी जगत प्रधान
एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥३॥

सुर असुर भुवण वण सम्यक् दर्शन वत
जिनचन्द्र सुसेवक, वैयावच्च करंत
श्री सघ सकल मे आराधक बहु जाण
जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥४॥

(२)

अरस्य प्रवज्या नमिजिनपर्तेज्ञान मतुलम्
तथा मल्लेर्जन्म व्रत मपमलं केवल मलम्
वलक्षैकादश्या सहसिलसदुद्दामहसि
क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपद पचकमद ॥१॥

सुपर्वेन्द्र श्रेण्या गमन गमनैर्भूमि वलयम्
सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं
जिना नाम प्यापु क्षणमपि् सुखं नारकसद
क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपद पचकमद ॥२॥

जिना एवं यानि प्रणिजग दुरात्मीय समये
फलं यकर्तृणामिति च विदित शुद्धसमये
अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्वहुमुद
क्षितौ कल्याणानां, क्षपति विपद पंचकमद ॥३॥

सुरा सैन्द्रा सर्वे सकल जिनचन्द्र प्रमुदिता।
स्तया च ज्योतिष्काखिल भवननाया सुमुदिता ।

तपोयत्कर्तॄणा विदधति सुख विस्मित हृद
क्षितौ कल्याणाना, क्षपति विपद पच कमद ॥४॥

चउदस तप की विधि

यह तप शुक्ल पक्ष की चौदस से प्रारम्भ करके चौदह वर्ष चौदह मास मे पूर्ण किया जाता है। यह तिथि चारित्र पद की कहलाती है अत चारित्र पद या सयम पद की आराधना की जाती है। "ऊ ह्री नमो चारितस्स" की 20 माला फेरनी चाहिए।

खमासमण, प्रदक्षिणा, साथिया आदि 17-17 करने चाहिए। देववदन प्रतिक्रमण, मन्दिर आदि यथावत जाने। (खमासमणा चारित पद के देवे)

चउदस का चैत्यवंदन

चौदह सुपन लहि माताए, श्री जिनवर केरी
चौसठ सुपरपति जेहना, प्रणमे पद फेरी ॥१॥

चउदश दश जिन वन्दिये, भाव धरीने आज।
जनम मरण मिट जातए, फेरी चौदह राज ॥२॥

जगम युग प्रधानए, श्री चारित्र सुरिन्द
पद्म प्रमोद प्रसाद थी, लहे माणक विद्यावृन्द ॥३॥

चउदस का स्तवन

(तर्ज - जावो जावो ए मेरे साधु)

गावो गावो चौदस दिन पावन, जिन गुण उत्तम गीत
पावो पावो परमातम पदवी, दर्शक प्रभु पद प्रीत ॥टेर॥

कल्याणक तिथि चौदस जग में चउगति चूरणहार
जिन आज्ञा आराधन भविजन भवजल तारणहार ॥१॥

माघ सुदी संभव जिन वंदो वासुपूज्य भगवान।
फागुन सुद में वद वैशाखे कुन्थु जन्म कल्याण ॥२॥

वद वैशाखे अनंत जिनवर दे संवत्सर दान।
जैठ वदी में शान्ति जिनेश्वर दीक्षा पुण्य प्रधान ॥३॥

पौष सुदी अभिनंदन शीतल पौष वदी जयकार।
वद वैशाखे अनंत केवल ज्ञान कल्याणक सार ॥४॥

सुद आपाढ चौदस पारंगत वासुपूज्य अविकार
सुखसागर भगवान दयालु जग जीवन आधार ॥५॥

जिन हरि पूज्य प्रभु शासन में वासित चित्त उदार
चढते चउदश में गुण ठाणे क्रम में नर और नार ॥६॥

अगम अगोचर अजर अमर पद सिद्ध होय निद्धारें
सुमति "कवीन्द्र" सदा गुण गाते पाते मोद अपार ॥७॥

चउदस की स्तुति

द्रें द्रें की धपमप धुधुमि धों धों धसकि धर धप धोरव
दों दों कि दोंदो द्राग्डिदि द्राग्डिदि कि द्रमकि द्रणरण द्रैणव
झझि-झेंकि झें झें झणण रण रण निज कि निजज।रंजन।
सुरशैल शिखरे भवनु सुखद पार्श्व जिनपति मज्जन ॥१॥

कटरेंगिनी थोंगिनी किटति गिग्डदा धुधुकि धुटनट पाटवम्
गुण गुणण गुण गुण रण कि णे णे गुणण गुण गण गौरवम्
झञ्झि झें-कि झें-झें झाण रण रण निजकि निजजन सज्जना
कलयति कमना कलित कलि मल मुकुल मीश महेजिना ॥२॥

ठकि ठं कि ठें ठें ठहिक ठहिं ठहिंपट्टास्ताडयते
तन लोंकि लों लों थेंथि थेंथिनी ढेंथि ढेंथिनी वाद्यते

ऊ ऊ कि ऊ ऊ थुगि थुगिनी धोगि धोगिनी कलख
जिनमतमनतमहिम तनुता नमति सुरनर मुच्छवे।। ।।३।।

षुदाकि षुदा षुषुडदि षुदा पुषुडदि दो दो अम्वरे
चाचपट चचपट रणकि णे णे डणण डे डे डवरे
तिहा सरगमपधुनि निधप मगरस ससससस सुर सेवता
जिन नाट्यरंगे कुशलमनिशं दिशतु शासन देवता ।।४।।

(२)

अविरल कमल गवल मुक्ताफल कुवलय कनक भासुरम्।
परिमल बहुल कमल दल कोमल पदतल सुलित नरेश्वरम्
त्रिभुवन भुवन सुदीप्रदीपक मणि कलिका विमल केवलम्।
नव नव युगलय जलधि परमित जिनवर निकर नमाम्यहम् ।।१।।

व्यतर नगर रुचिक वैमानिक कुलगिरि कुण्डसुकुण्डले
तारक मेरु जलधि नदीश्वर गिरि गजदन्त सुमण्डले
वक्षस्कार भुवन वन जोत्तर कुरु वैताढ्य कुन्जिगा
त्रिजगति जयति विदित शाश्वत जिननति ततिरिह मोह पारगा ।।२।।

श्रुत रत्नैक जलधि मधु मधुरिम रसभर गुरु सरोवरम्
परमततिमिर किरण हरणोद्धुर दिनकर किरण सहोदरम्
गमनय हेतु भग गभीरिम गणधर देव गीष्पदम्
जिनवर वचन मवनि मेवतात् शुचि दिशतु नतेषु सपदम् ।।३।।

श्रीमद्वीर चरम तीर्थाधिप मुख कमलाधि वासिनी
पार्वण चन्द्र विशद वद नोज्ज्वल राजमराल गामिनी
प्रदिशतु सकल देव देवी गण परिकलिता सतामियम्
बिचकल धवल कुवलय कल मूर्ति श्रुतदेवी श्रुतोच्चयम् ।।४।।

पूर्णिमा तप का चैत्यवदन

सीधाचल सिद्धाचले भेटूं प्रथम जिणन्द
द्रव्य भाव पूजा करूं, पाऊं परमानन्द ॥१॥

तारक तीर्थंकर प्रभु तीर्थराज पद योग
भव भय मोग वियोग से पाऊं सुख संयोग ॥२॥

सुखसागर भगवान 'हरि' पूज्य तीर्थंकर धाम।
निजगुण साधक भाव से प्रतिदिन करूं प्रणाम ॥३॥

पूर्णिमा का स्तवन

(तर्ज - गरवा)

श्री सिद्धाचल मंडण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजामी रे
ए तो प्रणमो हूं शिरनामी जात्रीडा जात्रा नवाणु करिये रे
ए तो करिये ने भवजल तरिये --- ॥टेर॥

श्री ऋषभ जिनेश्वर राया रे, जिहां पूर्व नवाणु आया रे
प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥१॥

चैत्री पूनम दिन वखाणु रे पांच कोडी सु पुंडरीक जाणु रे
ए तो पाम्या पद निरवाणु ॥२॥

नमि विनमि राजा सुखसाते रे बे बे कोडी साधु संघाते रे
ए तो पहुंता पद लोकान्ते ॥३॥

काती पूनम कर्म ने तोडी रे, जिहाँ सिद्धा मुनि दश कोडी रे
ए तो वंदू बेकर जोडी ॥४॥

इम भरतेसर ने पाटे रे असंख्याता मुनीयिर थाटे रे
पाम्या मुगती रमणी ए बाटे ॥५॥

दोय सहस मुनि परिवारा रे, थावच्चा सुत सुखकारा रे
सया पच सेलग अणगारा ॥६॥

वलि देवकि सुत सुजगीस रे, सिद्धा वहु जादव वश रे
ए तो प्रणमो रे मन हस ॥७॥

पाचे पाण्डव इण गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद ऋषिराया रे
वली साव प्रद्युम्न कहाया ॥८॥

ए तीरथ महिमावत रे, जिहाँ सिद्धा साधु अनत रे
इम भापे श्री भगवत ॥९॥

उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सघला माँहि जोय रे
ए ने फरस्या पावन होय ॥१०॥

एकल आहारी सचित्त परिहारी रे, पदचारी ने भूमि सथारी रे
शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥११॥

एम छहरी जे नर पाले रे, वहु दान सुपात्रे आले रे
ते तो जनम मरण भय टाले ॥१२॥

धन धन ते नर ने नारी रे, भेटे विमालाचल एकतारी रे
जाऊँ तेहनी हूं वलिहारी ॥१३॥

श्री जिन चद्रसूरि सुपसाये रे, जिन हर्ष हिये हुलसाये रे
इम विमलाचल गुण गाये ॥१४॥

पूनम की स्तुति

शत्रुजय गिरि नमिये ऋषभदेव पुण्डरीक
शुभ तप नी महिमा सुणि गुरू मुख निर्भीक
सुध मन उपवासे विधि सु चैत्यवदनीक
करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥१॥

शक्रस्तवनादिक प्रथमतिलक दश वीस
अक्षत गिणतीसे चढतां तिम चालीस
पचासनी पूजा भाखे इम जगदीश
तेहिज नित प्रणमू, स्वामी जिन चौवीस ॥२॥

सुदि पक्ष नी पूनम चैत्रमास शुभ वार
विधि सेति लाहिये आगम साख विचार
इम सोलह बरस लग धरिये ध्यान उदार
करता नर नारी पावे भवनो पार ॥३॥

सोवन तन चरणे नयणे तिम अरविन्द
चक्केसरि देविय सेविय सुरनर वृन्द
कामित सुखदायक पूरे मन आणंद
जपे गणनायक श्री जिनलाभ सूरींद ॥४॥

कल्याणक तप की विधि

शुभ दिन शुभ मुहूर्त मे गुरु के पास जाकर कल्याणक तप ग्रहण करे। उस दिन उपवास कर। प्रात मध्यान्ह और सन्ध्या इस प्रकार तीन समय देववंदन करें। जिस दिन जिसका कल्याणक हो उसी कल्याणक की बीस-बीस माला फेरे।

जिनराज का जो कल्याणक हो उँस दिन तीर्थंकर भगवान के नाम के साथ च्यवन कल्याणक के दिन "परमेष्ठिने नम" जन्म कल्याणक के दिन "अर्हते नम" दीक्षा कल्याणक के दिन "नाथाय नम" केवलज्ञान कल्याणक के दिन "सर्वज्ञाय नम", और निर्वाण कल्याणक के दिन - "पारगताय नम" की माला फेरें।

दोनों समय प्रतिक्रमण ब्रह्मचर्य आदि का यथाशक्ति पालन करे। तपस्या पूर्ण होने पर पंच कल्याणक पूजा प्रभावना, साधर्मी वात्सल्य रात्रि जागरण आदि महोत्सव करावें। उद्यापन में ज्ञान के, दर्शन के चारित्र के पाँच-पाँच उपकरण करावें। देव गुरु धर्म की भक्ति करें। इस प्रकार जो भक्तजन पच कल्याणकों की आराधना करेगें वे अनंत कल्याण रूप सुखों को प्राप्त करेंगे, ऐसा आगमों में तीर्थंकर व गणधर देवों ने फरमाया है।

कल्याणक तप का चैत्यवंदन

(१)

(मालिनी)

च्यवन जन्म दीक्षा, ज्ञान निर्वाण रूप
त्रिभुवन सुखदायी, पंचकल्याणको मे
सुर असुरपति स्व, प्रौढ भक्ति प्रतापे
कर दरिशन शुद्धि, पाप मित्यात्व टारे ॥१॥

भवजल निधि तारे, तीर्थ तीर्थंकरों के
भविक जन हमेशा, पुण्य से ही उपावे
धन धन जग मे वे, जीव शिव मार्ग गामी
निज मन वच काया, एकता सिद्धि साधे ॥२॥

जनम मरण आदि, रोग सताप सारे
जिनपति पद सेवा दूर ही से निवारे
भव भव यह पाऊ भावक एक देव
'गणपति हरि' पूज्य, श्री प्रभो! पूरयत्व ॥३॥

(२)

च्यवन जन्म दीक्षा विमल, केवल वर निर्वाण।
कल्याणक प्रभु आपके, जगत जीव सुख ठाण ॥१॥

आराधू मै नाथ! नित, साधू निज पद भोग
शक्ति दीजे होय ज्यो, भव दुःख भाव वियोग ॥२॥

"जिन हरि" पूज्य प्रभो। सदा, करू यही अरदास
दया बुद्धि दातार गुण, करो सुपुण्य प्रकाश ॥३॥

कल्याणक तप का स्तवन

(तर्ज - तुमको लाखो प्रणाम।)

जीवन ज्योतिवाले जिन को लाखो प्रणाम
जग जीवन रखवाले जिन को लाखों प्रणाम ॥टेर॥

भोग कर्म अनुरूप उदारा कर्मयोग कर्तव्य प्रचारा
पुण्य भोग फलवाले जिन को लाखों प्रणाम ॥१॥

अतरगत जल कमल समाना आतम उज्जवल भाव प्रधाना।
क्षायिक समकित वाले जिन को लाखों प्रणाम ॥२॥

लोकान्तिक सुर निज आचारा विनती करते जय जयकारा
तीर्थ प्रवर्तन वाले जिन को लाखों प्रणाम ॥३॥

लोकनाथ सयम सुखकारा करे बोध जग में उपकारा
स्वयं बुद्ध पद वाले जिन को लाखों प्रणाम ॥४॥

संवत्सर वरदान विधाना हरे दलिद्दर को भगवाना।
दातारी गुणवाले जिन को लाखों प्रणाम ॥५॥

सुरनर वर मिल उत्सव करते, पुण्य भंडारा अपना भरते
पाप को हरने वाले जिन को लाखों प्रणाम ॥६॥

पंचमुष्टि कर लोच विरागी चऊनाणी होवे बडभागी
दीक्षा लेने वाले जिन को लाखों प्रणाम ॥७॥

देव द्रव्य 'हरि' दें गुण गाया दीक्षा कल्याणक जिन नाथा
नाथ कल्याणक वाले, जिन को लाखों प्रणाम ॥८॥

केवलज्ञान कल्याणक

(तर्ज - जावो-जावो हे मेरे साधु!)

हितकारी प्रभुजी लेवे सयम सुखद अपार।
अविकारी आतम गुणथानक पावे परम उदार ॥टेर॥

अप्रमत्त भावो मे विचरे, जगपति जगदाधार।
कर्म प्रकृति जड मूल खपाके भाव अपूरव धार ॥१॥

अनिवृत्ति आतम गुण उज्ज्वल, सूक्ष्म कषाय विचार।
क्षीण मोह होते हो जाता, नाम शेष ससार ॥२॥

यथाख्यात चारित्र रमणता क्षायिक भाव प्रचार।
घाति चार करम क्षय होता, पाये अनते चार ॥३॥

अनत केवलज्ञान अनुपम, केवल दर्शन सार।
वर अनत चारित्र विराजित, वीर्य अनत अपार ॥४॥

दिव्य देव गण मिलकर रचते, समवसरण बलिहार।
रजत स्वर्ण वर रत्न गढो मे, चार कोश विस्तार ॥५॥

अशोक वृक्ष सुर पुष्प वृष्टिवर, तीन छत्र मनुहार।
चामर युग भामडल मणिमय, सिहासन श्रीकार ॥६॥

दिव्य ध्वनि राजित प्रभु राजे, चार दिशा मुख चार
देव दुदुभि नाद सुखद ये, प्रतिहारज जयकार ॥७॥

ज्ञानातिशय पूजातिशय, वचनातिशय धार।
अपायापगमातिशय, श्री, अरिहत गुण अधिकार ॥८॥

केवलज्ञान कल्याणक होते, होवे जग उपकार।
समवसरण मे बारह परिषद्, बोध सुने दिल धार ॥९॥

पुण्य कर्म तीरथ सुख सागर, भविजन तारणहार।
प्रकटत प्रकटे पुण्य महोदय, आतम गुण भडार ॥१०॥

तीर्थंकर भगवान प्रभु 'जिन हरि' पूजेश्वर सार।
सर्वज्ञातम नमो नमो नित, मंगल मालाकार ॥११॥

कल्याणक तप स्तुति

(१)

हो शासन रसिये जग जन्तु यह भाव
घर, बीस-थानक तप सेवें पुण्य प्रभाव
तीर्थंकर पावन नामकर्म गुण खाण
पांचों प्रकटावें कल्याणक कल्याण ॥१॥

अनुपम ये पांचो कल्याणक गुण योग
करे पंचम ज्ञानी, पंचम गति सुख भोग
आतम पद पाचों, परमेष्ठि सिरताज
परपंच रहित नित, ध्याऊं श्री जिनराज ॥२॥

केवल कल्याणक धारी श्री अरिहत
बोधे कल्याणक अर्थ रूप जयवंत
गणधर गुणकारी गूंथे श्री श्रुतज्ञान
आराधूं पाऊं, कल्याणक वरदान ॥३॥

पांचा कल्याणक सुखसागर भगवान
आराधक प्राणी कल्याणक परधान
हो सुर "गणपति हरि" पूज्य जगति जयकार
निर्भय पद उत्तम पावें सुख भंडार ॥४॥

(२)

जब लो यह चेतन रमण करे परभाव
तब लों यह गिणती जैसे शून्य सभाव
समकित गुण एको प्रगटे परम विवेक
कल्याणक पदवी नमूं भाव अतिरेक ॥१॥

वह च्यवन जनम भी, है कल्याणक रुप
दीक्षा वर केवल आतम भाव अनूप
निर्वाण कल्याणक, अगम अगोचर आप
आतम सुख भोगे, नमूं मिटे सताप ॥२॥

जिनमत सत जानो, विश्वधर्म वर मूल
सब दुख अशान्ति, दूर करण अनुकूल
कल्याणक परतिख, कारक सार निमित्त
कल्याणक कारण, नमू नित्य एक चित्त ॥३॥

निज सुखसागर मे, रमे सदा भगवान
कल्याणक भावे पावन विविध विधान
भविजन आराधे, "जिन हरि" पूज्य विशेष
सुर गणनायक भी, प्रणमें नमूं हमेश ॥४॥

वर्षी तप की विधि

यह तप चैत्रवदी आठम से प्रारम्भ होता है ओर 2 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् अक्षय तृतीया के दिन इक्षुरस से पारणा करके यह तप पूर्ण होता है। इसमे एकातर उपवास व पारणा मे बियासना करना पड़ता है तथा चतुर्दशी को भी उपवास करना आवश्यक है। इसी प्रकार तीनो चौमासी के छट्ठे अर्थात् बेले करने चाहिए। तप पूर्ण होने पर अक्षय तृतीया को 108 कलश से इक्षु रस से पारणा करते हुए ठाम चौविहार करना चाहिए। बरसी तप मे - आखा तीज को बिना पारणा लिये 2 वर्ष से कुछ अधिक समय मे 400 उपवास की गणना पूर्ण करते हुए यह तप किया जाता है।

क्रिया उपवास के दिन दोनो समय प्रतिक्रमण करना आवश्यक है। प्रतिदिन करे तो बहुत ही अच्छा है।

"श्री ऋषभदेव नाथाय नम" की 20 माला गिनें।

12 लोगस्स के कायोत्सर्ग, अरिहन्त पदके अशोक वृक्ष आदि 12 खमासमणा, 12 प्रदक्षिणा 12 साथिये।

चैत्यवदन

(१)

प्रथम' तीर्थपति ऋषभजिन सयम लेते धार
छट्ठ-छट्ठ प्रत्याख्यान ले, करते उग्र विहार ॥१॥

वन उपवन नगरादि में विचरण करते धीर
भिक्षाविधि अनभिज्ञ जन देवें अन्न न नीर ॥२॥

रत्न वस्त्र गज अश्व ले या ले कन्या रत्न
कहे लीजिये नाथ। ये लाये हैं सयत्न ॥३॥

किन्तु प्रभु देखें नहीं क्योकि कर दिये त्याग
शान्त भाव आगे चलें वीतराग महाभाग ॥४॥

एक वर्ष तक यों रहे प्रभुवर बिना आहार
धन्य धन्य 'सज्जन' करे कर्म कलंक संहार ॥५॥

(२)

देश ग्राम, पुर विचरते गजपुर करें प्रवेश
राजभवन पथ संचरे तीर्थपति ऋषभेश ॥१॥

नृप सूर्य यश सुत प्रवर श्रीश्रेयांस पुण्यवान
देख जानकर ज्ञान से दे इक्षुरस दान ॥२॥

देववन्दन और दो सहस्स नाथाय नम का जाप।
द्वादश नमस्कार काउसग्ग करें 'सज्जन' मिटे भवताप ॥३॥

(३)
(तोटक छन्द)

निज पूर्व किये सब कर्म महा बलवान विरोधि पराजय को
प्रभु आदि अचचल भाव भरे तप वार्षिक हर्षित हो करते ॥१॥

प्रभु का तप तेज अहो कितना निज को, पर को सुखदायक था
कृत कर्म कटे सब भर्म मिटे परमातमता गुण भी प्रकटे ॥२॥

धन्य भाग्य किये जिन ने प्रभु के शुभ दर्शन-दर्शन पावन हो
सुखसागर वे भगवान बने 'हरि पूज्य' हुये जय हो जय हो ॥३॥

वर्षीतप का स्तवन

(१)
(तर्ज - सावन का महिना)

प्रभु ऋषभ पधारे हस्तिनापुर मे आज
आओ-आओ सब मिल चालो, सजो मगलमय साज ॥टेर॥

कोई कहे गज भेट करेगे, उत्तम अश्व की भेट धरेगे
रत्न-वस्त्र-कन्या, ले लो प्रभु के काज --- आओ --- ॥१॥

द्वार द्वार पर प्रभु है आते, कुछ नही लेते आगे ही जाते
है त्यागी और विरागी, त्रिभुवन के शिरताज -- आओ --॥२॥

आगे प्रभु है पीछे नगरजन, साथ मे लेकर श्रेष्ठ श्रेष्ठ धन
कहते है विनय से, कुछ ले लो हे महाराज! आओ ..॥३॥

राजभवन के वातायन से, देखा श्रेयास ने प्रभु को नयन से
जातिस्मरण से जाना, प्रभु फिरते भिक्षा काज -- आओ ..॥४॥

भिक्षाविधि से अज्ञ जन है, प्रभु का तप.कृश हो रहा तन है
है कर्म कैसा निर्दय, नहीं छोडे जिनराज --- आओ ....॥५॥

झटपट दौड कर नीचे आया चरण कमल मे शीश झुकाया
दादा। हमारे आओ हे तारण तरण जहाज -- आओ ॥६॥

एक वर्ष निराहार बिताया, अन्तराय कर्म उदय मे आया
अब मेरा भाग्य जगाया पधारो गरीब-नवाज -- आओ ॥७॥

मेरे आँगन को पावन करिये इक्षुरस से पारणा करिये
धन्य जीवन मेरा पाये है दर्शन आज -- आओ ॥८॥

कर पात्री प्रभु अजलि करके पान किया रस यथेष्ट भरके
अहोदान की दुन्दुभि, रही गगन में गाज -- आओ ॥९॥

नीर सुगन्धित पुष्पो की वृष्टि हो रही पुलकित सारी सृष्टि
साढे बारह कोटि सोनैया बरसे आज -- आओ ॥१०॥

धन्य धन्य आदीश्वर स्वामी धन्य श्री श्रेयास सुनामी
'सज्जन' करते अभिनन्दन अक्षयतृतीय दिन आज -- आओ ॥११॥

(२)

(तर्ज आओ पधारो महावीर)

जय हो आदीश्वर भगवान ओ वर्षीतप वाले
जय हो ऋषभ भगवान ओ वर्षीतप वाले ॥टेर॥

इक्ष्वाकु कुल कमल दिवाकर मरुदेवीनन्दन विश्व उजागर
शिक्षक ज्ञान विज्ञान ओ वर्षी तप वाले ॥१॥

युगलिक जन आचार हटाया रीति नीति व्यवहार बताया
सर्व विधि व विधान ॥२॥

चार सहस्र संग व्रत को धारे, निशदिन आत्मस्वरूप विचारे
षष्ठ भक्त प्रत्याख्यान ॥३॥

कोई गज रथ घोडे लावे मणि माणिक मुक्ताफल लावें।
भिक्षाविधि से अजान ॥४॥

वीतराग प्रभु मौन के धारी, अन्तराय का उदय विचारी
धारें तपस्या प्रधान ॥५॥

वर्ष दिवस तक रहे अनाहारी, ऐसी उत्तम तपस्या धारी
धन्य धन्य गुणखान ॥६॥

श्री श्रेयासकुमार बडभागी, पुण्यवान् सुधर्मानुरागी
दे इक्षुरस दान ॥७॥

पञ्चदिव्य तब सुर प्रगटावे, धन्य-धन्य श्रेयांस कहावे
सुरनर करे गुणगान ॥८॥

सुख सिन्धो भगवान् तुम्हारी, त्रिभुवन के सुर नर और नारी
करे भक्ति एक तान ॥९॥

हरिपूज्य प्रभु केवल पाये, कर्म क्षय कर मोक्ष सिधाये
पाये आनन्द महान् ॥१०॥

ज्ञान कीज्योति घट मे जगादो, सद् उपयोग मे जीवन लगा दो
'सज्जन' माँगे वरदान ॥११॥

(३)

(तर्ज - मै तो दिवाना प्रभु तेरे लिये)

प्रभु हाजिर खडे हम तेरे लिये
तेरे लिये, हाँ तेरे लिये, प्रभु ॥टेर॥

नाभि नृप मरुदेवी के नन्दन, वन्दन करे हम तेरे लिये ॥१॥
हाथी को लावे, घोडो को लावे, रथ को मगावे प्रभु तेरे लिए ॥२॥
कन्या को लावे, ब्याह रचावे, महल तैयार करे तेरे लिये ॥३॥
रत्नो को लावे, मणियो को लावे, कचन का ढेर करे तेरे लिये ॥४॥
शाल दुशाले वस्त्र अनोखे अर्पण करे हम तेरे लिये ॥५॥
यह दुख हमसे देखा न जावे, दुखिये हम प्रभु तेरे लिये ॥६॥

संसार छोडा सयम को धारा मौनी हुये प्रभु किसके लिये ॥७॥
वर्षी तप को धारे प्रभुजी, कर्म कलक हरने के लिये ॥८॥
श्रेयास आया इक्षु रस लाया वह तो उचित था तेरे लिये ॥९॥
भक्तो ने जाना तब से प्रभुजी आहार देना प्रभु तेरे लिये ॥१०॥
पच दिव्य तब, प्रकटे थे भारी, 'हरि' करे जय तेरे लिये ॥११॥

वर्षीतप की स्तुति

(१)

वद चैत की आठम सयम धारे नाय
साधु हो जावे चार सहस नर साथ
पूरव भव भावी विघन घनाघन जोर
वर्षीतप ध्याने हरे नमू कर जोर ॥१॥

भिक्षा विधि जाने नहीं लोक सविशेष
देवे कन्या हय हाथी मणिमय वेश
वर्षाधिक व्रत धर वीतराग अवतार
मौनी महात्यागी प्रभु की जय जयकार ॥२॥

जाति समरण से श्री श्रेयांस कुमार
प्रभु रूप पिछाने भिक्षा विधि विचार
इक्षुरस अमृत बहरावे शुभ भाव
जिन आगम बोधे जय जय पुण्य प्रभाव ॥३॥

हरि पूज्य प्रभु का तप पारण दिन सार
पावन तम जग में अखातीज जयकार
सोनैया सुमनस सुगन्ध जल बरसाद
सुर असुर करे जग जय-जय पुण्य प्रसाद ॥४॥

(२)

सुखमा दुखमा के अन्त समय भगवान
युग आदि कर्ता हर्ता जग अज्ञान
शिव मारग बोधे निज जीवन दृष्टान्त
वर्षीतप धारे जय-जय परम प्रशान्त ॥१॥

इच्छारोधन तप क्षमा सहित हितकार
चित्त धारे वारे आठों कर्म विकार
आतम उजवाले परमातम पद धार
ऋषभादिक जिनवर वन्दू बारम्बार ॥२॥

निश्चय शिवगामी तप पद उद्यमवान
होता उद्यम से सकल समस्त विधान
कालादिक जानो सहयोगी समवाय
जिन आगम बोले सेवो सदा अमाय ॥३॥

हरि पूज्य सुपावन जिन शासन के भाव
भवि जो आराधे उनके अमित प्रभाव
सब देवी देवा विघन हरे तत्काल
सुख सम्पत्ति पूरे, भजो तजो जंजाल ॥४॥

छ:मासी तप की विधि

श्री महावीर प्रभु के शासन मे उत्कृष्ट छ मासी तप 180 उपवास का होता है। एक सौ अस्सी उपवास एकातर पारण वाला होता है। उजमणे मे 180 लाड़ू, फल वगैरह प्रभु के आगे रखना, तपस्या के दिन "श्री महावीर नाथाय नम" इस पद की 20 माला प्रदक्षिणा, साथिया आदि 12-12 करना।

एकातर उपवास 12 मास तक करने पर छ मासी तप पूरा होता है। इस तप में भी चौदस को खाना नही छट्ठ (बेला) करना चाहिए।

छ मासी तप चैत्यवदन

महावीर महिमा निधि, वदू भाव प्रधान
छह मासी दिन पाच कम उपवासी भगवान ॥१॥

पौप वदी पडिवा प्रभु महा अभिग्रह धार
इस हालत मे दे यदि तो कल्पे आहार ॥२॥

नृप कन्या दासी हुई मुण्डित मस्तक केश
पडी बेडियां पैर हों रोती हो सविशेष ॥३॥

अन्दर बाहिर पग किये द्वार देश के पास
उडद बाकुले छाज में लिये हुये हो खास ॥४॥

भिक्षा से निवृत्त हो जब भिक्षाचर लोक
अट्ठम तप के पारणे धरकर भाव अशोक ॥५॥

सतियों में मोटी सती चन्दनबाला सार
पूर्ण अभिग्रह को करें धन धन धन अवतार ॥६॥

सुखसागर भगवान जिन हरि पूजित अविकार
महातपस्वी वीर को वन्दूं बारम्वार ॥७॥

छ मासी तप स्तवन

(तर्ज - केसरिया थासु प्रीत लगी रे)

श्री वीर प्रभु जी आतम बल शक्ति अविचल दीजिये ॥टेर॥

छमासी तप किया आपने संगम सुर उपसर्ग
क्षमा सहित नित विचरे स्वामी नामी निजी निसर्गे रे ॥१॥

महा अभिग्रह मे भी अद्भुत छहमासी तप धारा
चन्दनबाला उडद बाकुले, खोला पुण्य भडारा रे ॥२॥

कर्म कलक मिटाया स्वामी, अकलकी अवतारा
शासन नायक नित गुण गाऊ, जय-जय प्रभु जयकारा रे ॥३॥

राग द्वेष जड मूल उखाडे, समता गुण भडारी
वीतराग योगीश्वर पूरे, जाऊ मै बलिहारी रे ॥४॥

यम नियमादिक आठ साधना, सहज सिद्ध प्रभु पाये
मन वच काया योग एकता, आतम ध्यान लगाये रे ॥५॥

परमातम पद ज्योति रूपे, त्रिभुवन भूप जिनेशा
हे प्रभु कृपया दो उपकारी निज पावन गुण लेशा रे ॥६॥

हो अकाम मन से तप कैसे, मारग यह दिखलाओ
प्रभु पद मे तन्मय हो जाऊ, यह विधि प्रभु सिखलाओ रे ॥७॥

राजयोग हठयोग न जानू, चक्र भेद नहीं जानू
ईडा पिगला नहीं सुषमणा, केवल तुमको मानूं रे ॥८॥

उपसर्गो मे रहू अचचल, निर्भय विचरू स्वामी
वैसी शक्ति दीजे प्रभुवर, सविनय सदा नमामी रे ॥९॥

शूलपाणि अरु चण्डकोशिया, गोशाला दु:खदायी
आत्मबोध पाये प्रभु तुमसे, धन वह पुण्य कमाई रे ॥१०॥

सुखसागर भगवान् तुम्ही हो, जिन 'हरि' पूज्य उदार
शरणागत वत्सल सुखदाता, दो प्रभु पद अविकार रे ॥११॥

छः मासी तप स्तुति

छह मासी तप से पावन जिनवर वीर
अविचल सुर गिरि सम सागर सम गभीर
सगम सुर हारा कर उपसर्ग अनेक
वन्दू उपकारी वीतराग सविवेक ॥१॥

शत्रु मित्र मे जिनका है समभाव
निष्काम भाव से करे भविक नरनारी
उत्तरोत्तर शुद्धि शुक्ल ध्यान अधिकारी
जिन वन्दू भावे जगदीश्वर उपकारी ॥२॥

छह मासी तप की महिमा अगम अपारी
निष्काम भाव से करे भविक नरनारी
भव सागर वरते भरते पुण्य भंडारी
जिन आगम गावे जाऊं मै बलिहारी ॥३॥

सिद्धायिका देवी सांची शासन माई
आराधें उनकी करती नित्य सहाई
जिन हरि पूज्येश्वर वर्द्धमान भगवान
सेवा अनुरागी दे मनवांछित दान ॥४॥

पर्युषण पर्व

पर्युषण पर्व चैत्यवदन

(१)

पर्युषण है जैन का सभी पर्व शिरताज
आत्मशुद्धि करते भविक पाने को शिवराज ॥१॥

प्रभु पूजा से पुनित हो प्रभु से घर अनुराग
स्वरूप में ही रमण से विषय कषाय विराग ॥२॥

आत्मरमण के निमित्त हैं वीतराग भगवान
"सज्जन" दर्शन वन्दना पूजन है सुख खान ॥३॥

(२)

पर्युषण अष्टान्हिका, पर्व आराधन सार
धन्य और कृतपुण्य ही, भरते पुण्य भडार ॥१॥

विविध भांति प्रभु पूजते, अभयदान ब्रह्मधार
तप सयम स्वाध्याय से, सफल करे अवतार ॥२॥

जिन चरित्र स्थविरावलि, समाचारी अधिकार
कल्पसूत्र को श्रवण कर, 'सज्जन' हो भवपार ॥३॥

(३)

पर्युषण ससार मे, पर्व शिरोमणि सार
ता मे भी जिनराज को, पूजो दोय प्रकार ॥१॥

पूजा करते पूज्य गुण प्रकटत है निर्धार
आतम हो परमात्मता पाये पद अविकार ॥२॥

जिन प्रतिमा जिन सम गिने, पूजे जो निशक
हरिसागर गंभीर वह, जग मे हो अकलंक ॥३॥

पर्युषण पर्व स्तवन

करलो करलो रे थे भविजन प्राणी, शिवसुख वरलो रे
पजुषण करलो रे ॥टेर॥

सब सुरवर मिल निज निज भक्ते, द्वीप नदीश्वर जावे रे
आठ दिवस अट्ठाई महोत्सव, कर सुख पावे रे ॥१॥

तिम भवि प्राणी आतम शक्ते, धार्मिक कार्य आराधो रे
जिनवरजी की पूजा करके, शिवसुख साधो रे ॥२॥

विविध प्रकारे पूजा रचावो, समकित निर्मल कर लो रे
आगी भावना मन शुद्ध करके, भवजल तरलो रे ॥३॥

आठ दिवस अट्ठाई तपस्या करके काज सुधारो रे
जैन धर्म की महिमा करके वान वधारो रे ॥४॥

हाथी घोडा और पालकी, रथ की तैयारी करावो रे
वस्त्राभूषण सजकर भविजन मगल गावो रे ॥५॥

वाजे गाजे सब मिल गौरी गुरु के पासे जावो रे
कल्पसूत्र को लेकर माथे हाथ धरावो रे ॥६॥

घर ले जावो रात्रि जगावो ज्ञान की भक्ति करावो रे
सर्व शहर में फिरकर गुरु के पासे लावो रे ॥७॥

कल्पसूत्र की पूजा करके वाचना नवको सुनलो रे
मधुरी वाणी गुरुमुख प्राणी अमृत पी लो रे ॥८॥

जिन चरित्र ने और पट्टावली सदाचारी भावे रे
तीन अधिकार आदि से सुने वो मुक्ति में जावे रे ॥८॥

अट्ठाई उपवास करो भवि, बडे कल्प को बेलो रे
संवत्सरि को तेलो करके बारे सौ झेलो रे ॥१०॥

मूल पाठ को इकचित्त सुणी ने चैत्य प्रवाडी जावो रे
मोहन मुद्रा जिनवर निरखी अति हरखावो रे ॥११॥

अभय अमारी पडह बजावो दान सुपात्रे देवो रे
अनुकम्पा कर जीवों ऊपर प्रेम जगावो रे ॥१२॥

नवविध ब्रह्म गुप्ति को धारो, भावना शुद्ध मन भावो रे
दोय टंक पडिकमणो करी ने पाप भगावो रे ॥१३॥

संवत्सरी पडिकमणो करीने जीव चौरासी खमावो रे
अपराधी को माफी देकर अति हरखावो रे ॥१४॥

तिंवरी गाम चौमासे रहकर पर्व पजुषण ध्याया रे
संवत उन्नीसौ अस्सी वर्षे, हरि गुण गाया रे ॥१५॥

पर्युषण उपदेशिक सज्झाय

(तर्ज - भैया मेरे राखी के वन्धन)

हिलमिल पर्व पर्युपण मनाना
वन्धु गले लग जाना ॥टेर॥

आधि व्याधि ओर उपाधि, लागी जीवन मे महा व्याधि
सामायिक समभाव समाधि, देवपूजन गुरु धर्म समाधि
पौपध औपध खाना ॥१॥

इन्द्रिय दम भोग विरमाओ, वैरागी सयम मन लाओ
खुले हायो दान लुटाओ, सत्य अहिसा ध्वज फहराओ
कत्लखाने उठवाना ॥२॥

देव पूजा गुरू सेवा सारो, स्वाध्याय सयम तप स्वीकारो
क्रोध तजो अभिमान भी त्यागो, शियल पाल निज जीवन सुधारो
गुणठांणे गुण लाना ॥३॥

उपशमसार श्रमण कहलाओ, प्रभु वाणी मे चित्त रमाओ
कल्पसूत्र सुन जाग्रति लाओ, प्रभु जीवन सुन ज्योति जगाओ
वीर जन्म सुनवाना ॥४॥

प्रभु मंदिर जा दर्शन पाओ, अभयदान का घोष वजाओ
अशक्त स्वामी गले लगाओ, रूठे भूले भूले भुलाओ
क्षमा भाव वर्षाना ॥५॥

फूट फजीती दूर हटाओ, शान मान सघ इज्जत वढाओ
काम करो कुछ नाम कमाओ, पिछडे भाई गले लगाओ
तन धन कौन ठिकाना ॥६॥

पुण्य से पैसा हाथ मे आया, लाया नही सग ना ले जाया
पाठशाला ना उद्योग बनाया, स्वधर्मी भी हित भोग न दाया
श्रीमताई सफल बनाना ॥७॥

धर्म साधना स्थान नहीं है निर्धन को कोई काम नहीं है
संत विचक्षण ज्ञान सही है जाना है रहना न यहीं है
संघ कमी भर जाना ॥८॥

निपुण समाज के तिलक तुम्हीं हो, धनवानों धनदानी तुम्हीं हो
निर्बल के बलराज तुम्हीं हो, संघ के नायक नाम तुम्हीं हो
भ्रमर अर्ज मन लाना ॥९॥

पर्युषण पर्व स्तुति

(१)

वलि वलि हूं ध्यावु गाऊं जिनवर वीर
जिन पर्व पजुसन दाख्या धर्म नी सीर
आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास
पडिकमण सवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥

चउवीसे जिनवर पूजा सतर प्रकार
करिये भले भावे भरिये पुण्य भंडार
वलि चैत्य प्रवाडी फिरतां लाभ अनन्त
इम पर्व पजुषण सहु में महिमावंत ॥२॥

पुस्तक पूजावी नव वाचनाये वंचाय
श्री कल्पसूत्र जिहाँ सुणतां पाप पुलाय
प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव
इम भवियण प्राणी पर्व पजुषण सेवा ॥३॥

वलि साहमीवच्छल करिये बारम्बार
केई भावना भावे कई तपसी शीलधार
अडदीह पजुषण इम सेवत आणंद
सुयदेवी सानिध कहे जिन लाभ सुरिंद ॥४॥

(२)

पाये पजुपण पुण्य पर्व सुधन घडी धन भाग्य है
जहाँ सत्य शिव सुन्दर गुणो मे भी विशद आरोग्य है।
विभुवीर शासन सघ मे आनन्द अनुपम छा रहा
जहा धर्म सरतरु आज अपने आप ही लहरा गया ॥ १ ॥

जिन चैत्य परिपाटी सुदर्शन दिव्य दर्शन हो गया
निज रूप मे जिनरूप से समभाव पैदा हो गया
निज पूर्व कृत दुष्कृतों का भेद भी होने लगा
पर्युषणा में आतमा सोता हुआ सुख से जगा ॥२ ॥

अतिशान्त कान्त अनन्त गुण कल्याणमय आकार से
प्रभुवीर पद कल्याणकों के भाव भी विस्तार से
इच्छासुरोधन रूप तप जप पूर्ण सच्चे नेम से
श्री कल्प आगम में सुणे पर्युषणा में प्रेम से ॥३ ॥

साधर्मी वत्सलता सरलता पाप की आलोचना
जगजीव से अपराध की सम्यक् क्षमा की याचना
पर्युषणा मे शील सुव्रत साधना परभावना
करते अपर गणनाथ हरि कीरति कथा प्रस्तावना ॥४ ॥

दीपावली पर्व

दीपावली का चैत्यवंदन

श्री सिद्धार्थ नृप कुल तिलक त्रिशला जस मात
हरिलछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥१ ॥

त्रीस बरस गृहवास रही लिधो संयम भार
बार बरस छद्मस्थना, लही केवल सार ॥२ ॥

त्रीस वरस एम सवि मलिए, बहोत्तर आयु प्रमाण
दीपाली दिन शिव गया, कहे नयते गुण खाण ॥३॥

(२)

(शिखरणी छन्द)

अनतात्मा ज्योति प्रकट विभव प्रौढ महिमा
चिदानन्द स्फूर्ति प्रगुण सत्कीर्ति गरिमा
अरागी अद्वेषी परम समता धाम जग मे
महावीर स्वामी, प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥१॥

सुनायें भव्यो को समवसरणे विस्तृततया
सभी सत्तत्वो के विशद विधि से अर्थ कहके
उपादेय ज्ञेय प्रमुख जड हेयादिक अहो।
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥२॥

निजात्मा में ज्ञानादिक गुणमणि ज्योति रहती
मिलेगी खोजोगे नियम उपधान व्रतितया
प्रभो वाणी सच्ची 'हरि' सुन सुखी हो फिर कहो
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥३॥

दीपावली का स्तवन

(१)

मारग देशक मोक्ष नो रे, केवल ज्ञान निधान।
भाव दया सागर प्रभु रे, पर उपकारी प्रधानो रे॥
वीर प्रभु सिद्ध थया सघ सकल आधारो रे।
हवे इण भरत मा कोण करसे उपगारो रे ॥स्थायी॥

नाथ विहूणो सैन्य ज्यू रे वीर विहूणो रे संघ
साधे कोण आधार थीरे, परमानन्द अभंगो रे ॥१॥

नाथ विहूणो बाल ज्यू रे, अरहो परहो अथडाय
वीर विहूणा जीवडा रे आकुल व्याकुल थाय रे ॥२॥

सशय छेदक वीर नो रे, विरह ते केम खमाय
जे दिठे सुख उपजे रे, ते विण केम रहवाय रे ॥३॥

निर्यामिक भव समुद्रनो रे, भव अटवी सथवाह
ते परमेश्वर विण मले रे, किम वाधे उत्साहो रे ॥४॥

वीर थका पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार
हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिन मुद्रा सार रे ॥५॥

इण काले सवि जीव ने रे, आगम थी आनद
ध्यावो, सेवो भविजना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥६॥

गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इण परे सिद्ध
भव भव आगम सघ थी रे, देवचद पद लीधो रे ॥७॥

(२)

(तर्ज - जब तुम्हीं चले परदेश)

हे वीर! प्राण आधार, दया अवतार, ओ त्रिशला दुलारे
मुझको क्यो छोड सिधारे ॥टेर॥

तुमने ही ज्ञान सिखाया था, शुभ मुक्ति मार्ग दिखलाया था
मुझ पर है अगणित उपकार तुम्हारे ॥१॥

गौतम-गौतम यो बुलाते थे, शकाये मन की मिटाते थे
अब कौन मिटाये सशय नाथ हमारे ॥२॥

यदि मुझको छोडकर जाना था, तो दूर न मुझे हटाना था
मै हठ करके नही चलता साथ तुम्हारे ॥३॥

मै केवल दर्शन चाहता था, उसमे ही आनन्द पाता था
तरस रहे ये नयन, अब किसे निहारे ॥४॥

करते विमर्श मोह विलय हुआ, जब दिव्यज्ञान का उदय हुआ
'सज्जन' गौतम भी थे शासन के सितारे ॥५॥

दीपावली की स्तुति

(१)

सिद्धारथ त्राता जगत विख्याता त्रिशला देवी माय
जिहा जग गुरु जनम्या सब दुख विरम्या महावीर जिनराय
प्रभु लेई दीक्षा करी हित शिक्षा देई सवच्छरी दान
सद्दु कर्म खपेवा शिव सुख लेवा कीधो तप शुभ ध्यान ॥१॥

वर केवल पामी अन्तर जामी वदि काति शुभ दीस
अमावस जाते पिछली राते, मुगति गया जगदीश
वलि गौतम गणधर मोटा मुनिवर पाम्या पचम ज्ञान
थया तत्व प्रकाशी शील विलासी पहुच्या मुक्ति निधान ॥२॥

सुरपति संचरिया रतन उद्धरिया रात थई तिहा काली
जन दीवा कीधा कारज सीधा, निशा थई उजवाली
सहुलोके हरखी निजरे निरखी परव कियो दिवाली
वलि भोजन भगते निज-निज शक्ते जीमे सेव सुवाली ॥३॥

सिद्धायिका देवी विघन हरेवी वंछित दे निरधारी
करे सघ ने साता जिन जग माता एहवी शक्ति अपारी
जिन गुण इम गावें शिव सुख पावें सुणजो भविजन प्राणी
जिनचन्द जतीसर महामुनीसर जपे एहवी वाणी ॥४॥

(२)

पापायां पुरि चारू पष्ठ तपसा पर्यंक पर्यासन
क्षमापाल प्रभुहस्तिपाल विपुल श्री शुल्कशालामनु
गोसे कार्तिक दर्शनाग करणे तूर्यारकान्ते शुभे
स्वातौ य शिवमाप पाप रहित संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥१॥

यदगर्भागमनोद्भव व्रतवर ज्ञानाक्षराप्तिक्षणे
संभूयाशु सुपर्व संतति रहो चके महस्तत् क्षणात्

श्री मनूनाभि भवादि वीरचरमास्ते श्री जिनाधीश्वरा
सघाया नघ चेतसे विदधतां श्रेयांस्य नेनांसि च ॥२॥

अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनप श्री वर्धमानाभिध्र
स्तत्पश्चाद्गण नायका विरचयां चक्रस्तरा सूत्रत
श्री मत्तीर्थ समर्थनैक समये सम्यग् दृशा भूस्पृशा
भूयाद्भावुक कारक प्रवचन चेतश्चमत्कारियत् ॥३॥

श्री तीर्थाधिप तीर्थ भावनपरा· सिद्धायिका देवता
चचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायदपायादसौ
अर्हन् श्रीजिन चद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मन प्राणिनो
या चक्रेऽवमाष्ट हस्ति निधने शार्दूल विक्रीडितम् ॥४॥

दीपावली का जाप

रात्रि के प्रथम प्रहर मे १ वजे ॐ श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम·
अर्द्धरात्रि को १२ बजे ॐ श्री महावीर स्वामी पारगताय नम
प्रात ब्रह्म मुहूर्त मे ४ वजे ॐ श्री गौतम स्वामी केवल ज्ञानाय नम

प्रत्येक पद की 20-20 माला गिने।

पखवासा तप विधि

प्रथम शुभ दिन देखकर गुरु महाराज से तप ग्रहण करे। पश्चात् एकम का एक, दूज के दो, तीज के तीन, यावत् अमावस्या पूर्णिमा के 31 उपवास करते हुए यह तप 450 उपवास की आराधना से पूर्ण होता है। जघन्य से एक-एक तिथि को एक-एक उपवास करते हुये 15 उपवास करने से इस तप की आराधना की जाती है। तप पूर्ण होने पर यथाशक्ति उजमणा करे।

क्रिया— उपवास के दिन "श्री मुनि सुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नम" की 20 माला व साथिये, प्रदक्षिणा, खमासमणा, कार्योत्सर्ग

सर्व 12-12 दें। प्रति उपवास को दोनों समय प्रतिक्रमण व देव वन्दनादि सर्व क्रिया करे।

पखवासा तप चैत्यवन्दन

श्री मुनि सुव्रत जिनराज चौविह् धर्म प्रकासे
पखवासा तप करण को बीच परषदा भासे
पन्द्रह दिन तप की विधि सुध मन होय लहिये
प्रतिपद से आरम्भ कर पूर्णिमा तक सरदहिये ॥१॥

हरिवंश कुल में अवतरया राजग्रही नगरी सुहायो
जेठ वदी अष्टमी दिने प्रभु जन्मोत्सव करायो
कच्छप चिन्ह् से शोभते काया धनुष वीस कहायो
सुमित्र नृपित के पट्ट पर मात पद्मावती जायो ॥२॥

फागुन सुदी बारस दिन सयम व्रत बतलायो
अष्ट कर्म कूं नष्टकर केवलज्ञान उपायो
सहस तीस वर्ष आयु से जिनवर सिद्ध पद पायो
श्री रत्न सूरि शिष्य मोतीचन्द बतायो ॥३॥

पखवासा तप स्तवन

(तर्ज - सीमधर । करजो मया)

जम्बू द्वीप सोहामणो दक्षिण भरत मझार
राजगृही नगरी भली अलकापुरी अवतार ॥१॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी समरन्तां सुख थाय
मन वांछित फल पामिये दोहग दूर पुलाय ॥२॥

राज करें तिहां राजियो सुमित्र नरेश्वर नाम
पटराणी पद्मावती शील गुणे अभिराम ॥३॥

श्रावण उज्जवल पूनमें, श्री जिनवर हरिवंश
माता कुक्षि सरोवरे, अवतरियो रायहस ॥४॥

जेठ पढम पक्ष अष्टमी, जायो श्री जिनराज
जन्म महोच्छव सुर करे, त्रिभुवन हरख न माय ॥५॥

सामल वरण सोहामणो, निरुपम रूप निधान
जिनवर लछन काछवो, वीस धनुप तनु मान ॥६॥

परणी नार प्रभावती, भोग पुरदर साम
राज लीला सुख भोगवे पूरे वांछित काम ॥७॥

तव लोकांतिक देवता, आवि जपे जयकार
प्रभु फागुण वदि बारसे, लीधो सयम भार ॥८॥

शुभ फागुन वदि बारसे, मन धरि निर्मल ध्यान
चार करम प्रभु चूरिया, पाम्या केवल ज्ञान ॥९॥

ढ़ाल २.

(तर्ज - सुख कारण भवियण)

ततखिण तिहा मलिया, चलिया सुरनर कोड़ी
प्रभुना पद पकज, प्रणमे बेकर जोडी
बे कर जोडी मच्छर मोडी समवसरण विरचत
माणक हेम रूप्य मय, त्रिगडो छत्र त्रय झलकत
सिहासन बैठा तिहा स्वामी, चौविह धर्म प्रकासे
बारे परषदा बैठी आगली, सुणे (जु) मन उल्लासे ॥१॥

तपने अधिकारे, पखवासो तप धार
पडिवाथी कीजे, पनरह तिथि उदार
पनरहा तिथि कीजे गुरूमुख लीजे, जिस दिन होय उपवास
मुनिसुव्रत स्वामी नाम जपीजे, वादी देव उल्लास
तप ऊजमणे रजत पालणे, सोवन पुतली चग
मोदक थाल देहरे मूको, जिनवर स्नात्र सुरग ॥२॥

तप करिये निरन्तर अहुरव दर्शनी जेम
मन वांछित केरा, फल पामीजे तेम

फल पामीजे कारज सीझे ए तप ने अधिकार
पुत्र ' मित्र परिवार परस्पर अतिवल्लभ भरतार
जस कीरत सौभाग्य वडाई, महियल महिमा जाण
परभवमुगति तणां फल लहिये ए तपने परमाण ॥३॥

थिरयापी चतुर्विध सघ तणों अधिकार
भरूअच्छ प्रमुख नगरादिक करियो विहार
विहार करी प्रतिबोधे खंधक पंचसया परिवार
कार्तिक शेठ जितशत्रु तुरंगम् सुव्रत नाम कुमार
तीस सहस वरस आऊखो पाले जग दया सार
श्री सम्मेतशिखर परमेश्वर पहुँता मुगति मझार ॥४॥

इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन राय
मुनि सुव्रत स्वामी बीसमो जिनवर राय
वीसमो जिनवर जगतगुरु भय भंजण भगवंत
निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत
श्री जिनचंद विनेय शिरोमणि "सकलचंद" गणि सीस
वाचक "समयसुन्दर" इमभणे पूरो मनह् जगीस ॥५॥

पखवासा तप स्तुति

श्री मुनि सुव्रत स्वामी नमूं, त्रिभुवन नायक वीसमूं
जिन पवासो तप उपदेशे, ते तीर्थंकर मन माहि वसे ॥१॥

अतीत अनागत ने वर्तमान, विहरमान वीसे परधान
वली शाश्वता जिनवर चार प्रणमंता लहिये भव पार ॥२॥

अर्थे भाम्या श्री अरिहंत गणधर गूथ्या सूत्र सिद्धान्त
अह निशि ध्यावे जे एकान्त ते नर पामें सुख अभंग ॥३॥

वरण यक्ष नर दत्ता देव श्री मुनिसुव्रत नी सारे सेव
भविकजीवोंतणां भय हरे, ते मनवाञ्छित सुख साधन मिले॥४॥

सहस्रकूट तप विधि

सहस्रकूट तप चैत्यवन्दन

सहस्त्रकूट जिनवर नमू, सहस भवों का पाप
क्षय हो भक्ति प्रभाव से, मिटे भव सताप ॥१॥

अष्ट शताधिक कर्म की, सैना का परिवार
प्रवल मोह सेनापति, भटकाता ससार ॥२॥

सर्वोत्तम सयम ग्रही, किया कर्म सहार
शाश्वत सुख को पा लिया, तार प्रभु मुझ तार ॥३॥

सुखसिन्धु भगवान के, सुवरण दर्शन आज
धन्य घड़ी धन्य भाग्य है, तारण तरण जहाज ॥४॥

(२)

सहस्त्रकूट प्रभु वंदिये, जय जय श्री जिनराज
विभावदशा को छोडकर, पाया शिवपुर राज ॥१॥

रत्नत्रयी आराधना, भवजल तरण जहाज
वन्दू प्रणमु प्रेम से, सारो आतम काज ॥२॥

काल अनतानत मै, भटक्यो श्री भगवान
नमूँ सिद्ध अनत को, मागू आतमज्ञान ॥३॥

स्वर्ग मृत्यु पाताल मे, श्री जिन चैत्यमहान,
भक्त वत्सल तारक विभु, सुखसागर भगवान ॥४॥

पुण्योदय प्रगटा महा, सुवर्ण दर्शन खास
वन्दू विचक्षण भाव से, हरो तिलक भव त्रास॥५॥

सहस्रकूट तप स्तवन

(तर्ज सिद्धाचलनां वासी ..)

अब मोरी नैनां प्यासी तोरे दर्शन के अभिलाषी
प्रभुवर प्यारा सहसकूट के नाथ हमारा ॥टेर॥

भव-भव भटकत भटकत आया, तोरे दर्शन कर आनन्द पाया
अब मोरी अरजी सुनकर नयनो में नेह भरकर
अमृतधारा - सहसकूट के साथ हमारा ॥२॥

अतीत-अनागत और वर्तमाना, क्षेत्र दश की चौबीसी मिलाना
विहरमान श्री जिन वीस उत्कृष्टा और च्यवनादि ईश
शाश्वत चारा - सहसकूट के नाथ हमारा ॥३॥

सिद्धाचल में भी भेंटू उनको और जगवल्लभ में भी तिनको
देख मन हर्ष भरूँ पावन अंग करूँ
जीवन सारा - सहसकूट के नाथ हमारा ॥४॥

मोरी नैया को पार लगाना डूब रही अब भूल न जाना
अब तो दे दो सहारा, मणि गुणरत्न के मन प्यारा
रश्मि का ये नारा - सहस्रकूट के नाथ हमारा ॥५॥

सहस्रकूट स्तुति

प्रह उठी वंदू सहसकूट सुखदाय
अक्षय सुखदाता जिनवर जो नित ध्याय
नित नमन पूजन से कर्म कलंक मल जाय
ध्याता ध्येय अभेदे सहस्रकूट बन जाय ॥१॥

द्रव्य भाव और वर स्थापना नाम जिनराज
चार अतिशय मूल है ओगणीस देव कराय
कर्मों के क्षय से अतिशय ग्यारह सुहाय
चौत्रीश अतिशयवंता प्रणमो श्री जिनराज ॥२॥

आगम पिस्तालिस, छः छेद मूल चार
ग्यारह अग उपाग बारह, दस पयन्ना सार
चूलिका दोय सुत्ता, जिनवर मत सुविचार
गुरु गम से समझो, और वरो भव पार ॥३॥

जिन शासन सेवी, देवी देवता आये
जो सहसकूट जिन, नाम सदा मन ध्याये
सभी सकट भय, सताप दूर हो जाये
गणि श्री गुणरत्न के, सीस कहे शिव पाये ॥४॥

रोहिणी तप विधि

यह तप रोहिणी नक्षत्र मे होता है। यह तप अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र आवे उस दिन से शुरू किया जाता है। यह तप (श्री वासुपूज्य स्वामी की पूजा पूर्वक) सात वरस सत्तावीस मास, या सात मास तक करना चाहिए। जिस जिस मास मे रोहिणी नक्षत्र आता है उसी दिन उपवास, आयंबिल एव एकासना से यह तप करना चाहिए। कदाचित रोहिणी को उपवास करना भूल जायें तब वापस शुरू से करना पड़ता है। देवपूजा, प्रतिक्रमण, देववन्दन, शीलव्रत आदि क्रियाए करनी चाहिये। श्री वासुपूज्य स्वामिने नमः। इस पद की बीस माला फेरे। सत्तावीस साथिया, खमासमणा, काउसग्ग, प्रदक्षिणा आदि सब सत्तावीस-सत्तावीस करे।

रोहिणी तप चैत्यवंदन

(१)

रोहिणी तप महिमा अधिक, पावे सुख सौभाग्य
वैभव और ऐश्वर्य हो, आवे न दुःख दौर्भाग्य ॥१॥

भाग्यशालिनी रोहिणी रोहिणी तप के प्रताप
सदा सुखी पति-सुपुत्रयुत जाना न दुख सन्ताप ॥२॥

क्रमश कर्म विनाश कर, शिवसुख कर सम्प्राप्त
सिद्ध बुद्ध और मुक्त बन, 'सज्जन' बन गयी आप्त ॥३॥

(२)

रोहिणी नक्षत्र दिन कीजिये चउविहार उपवास
वासुपूज्य जिन पूजना द्रव्य भाव विधि जास ॥१॥

अष्टप्रहरी पौषध करे पारणा दिन प्रभु सेव
गुरुभक्ति साधर्मिजन, भक्ति करे स्वयमेव ॥२॥

सप्त वर्ष सप्तमास तक, आराधन अधिकार
'सज्जन' करते भाव से, सुख सम्पत्ति दातार ॥३॥

रोहिणी तप स्तवन

(ढाल पहली)

शासन देवता स्वामिनी मुझ सानिध्य कीजे
भूल्यो अक्षर भगत भणी समझाई दीजे
मोटो तप रोहिणी तणो ए तिणरा गुण गाऊं
जिम सुख सोहग सम्पदा ए, वांछित फल पाऊं ॥१॥

दक्षिण भरते अंग देश छे चंपा नगरी
मघवा राजा राज्य करे तिण जीत्या वयरी
पाट तणी राणी रुवडी ए, लक्ष्मी इण नामे
आठ पुत्र जाया भला ए, मन में सुख पामे ॥२॥

रोहिणी नामे पुत्रिका ए, सबकूं सुखकारी
आठां पुत्र ऊपरे ए, तिण लागे प्यारी।
वाधे चन्द्र तणी कला ए, जिम पख उजवाले
तिम ते कुंवरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥३॥

कुवरी रूपे रुवडी ए, घर आगण बैठी
दीठी राजा खेलती ए, मन चिन्ता पेठी
तीन भुवन माहे एवडी ए, नही कोई दूजी नारी
रम्भापउमागौरीगगा ए, इण आगल हारी ॥४॥

आव्या आगल साल वधे ए, जिम चैन न पावू
इम विचारी चितवे ए, राजा स्वयवर मडाव्यु
देश देशना राजवी ए, तत्क्षण तेडाव्या
सवलसजाई साथ करी, नरपति पिण आव्या॥५॥

वीतशोक राजा तणो ए, छे कुमार सौभागी
कन्या केरी आखडी ए, तिण सेती लागी
ऊभा देखे सकल लोक, चढिया कोई पाला
चित्रसेन ने कठे ठवी, कुवरी वरमाला ॥६॥

देव अने देवाङ्गना ए, जपे जय-जयकार
रलियायत थयो देखीने ए सारो ससार
कर जोडी ने लोक कहे, वर कन्या नो जोड़ो
वीतशोक नो कवर थयो, शिर ऊपर मोडो ॥७॥

इम विवाह थयो भलो ए, दीधा दान अपार
घरे आव्या परणी करी ए, हरख्यो परिवार
वीतशोक राजा पुत्र भणी, आपणो पाटज दीधो
आपणसजम आदरी ए, जग मे जश लीधो ॥८॥

ढाल दूसरी
(तर्ज हवे भवियण रे! पचमी ऊजमणो सुण)

तिण नयरी रे चित्रसेन राजा थयो
सुख माही रे केटलो काल वही गयो
इण अवसर रे आठ पुत्र जाया भला
चढते पख रे चन्द्र जैसी चढती कला ॥१॥

चढती कला हुवे राय वेठो पास वैठी रोहिणी
सातमी भूमि कंत सेती करे क्रीडा अति घणी
आठमो बालक गोद ऊपर रंगसु राणी लियो
पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखता हरखे हियो ॥२॥

एक कामिनी रे गोखे चढी दृष्टि पडी
शिर पीटे रे रोवे रीकें वापडी
वूढा पणे रे मन गमतो वालक मूओ
हूं तो एकज रे तिण अधिकेरो दुःख हुओ ॥३॥

दुःख हुओ देखी रोहिणी इम कहे प्रीतम भणी
एह नार नाचे अने कूदे, कहो किम मोटा घणी
एहवो नाटक आज तांही मै कदी देख्यो नहीं
मुझनेहासो अने तमासो देखता आवे सही ॥४॥

इण वचने रे रीसाणो राजा कहे
तू तो पापिणी रे पर नी पीडा नवि लहे
ए दुःखिणी रे पुत्र मुआ तड फड करे
जव वीते रे वेदना जाणीजे तरे ॥५॥

जाणीजे तरे तू वात दुःखनी गर्वछेली कामिनी
एम कहीं राजा हाथ झाल्यो तेहना बालक भणी
सातमी भूमि थी तले नाख्यो तिसे हाहारव थयो
रोहिणी हसती कहे प्रीतम पुत्र नीचे किम गयो ॥६॥

हुवे राजा रे पुत्र तणे शोके करी
थयो मुर्च्छित रे रोवे आँखे भरी-भरी
पडतो सुत रे शासन देव ते झलियो
कंचनमय रे सिंहासने वेसाडियो ॥७॥

वेसाडियो कर जोडी आगे करे नाटक देवता
गोद खिलावे केई हँसावे पाद पंकज सेवता
उपज्यो भूपति ने अचंभो देखि ए कारण किसो
जो कोई ज्ञानी गुरू पधारे, पूछिये संशय इसो ॥८॥

चितवता रे चारित्रिया आव्या इसे
राजा पिण रे पहोच्यो वन्दन ने तिसे
सुणी देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो
कहो स्वामी। रे पूरव भव वालक तणो ॥९॥

वालक तणो भव भूप पूछे कहे इणी परे केवली
रोहिणी राणी नो भवान्तर अने राजा नो वली
श्री सुगुरु भाखे पाछले भव रोहिणी तप आदर्‌यो
तप तणी सगते साधुं भक्ते, तुमे भवसागर तर्‌यो ॥१०॥

कहे राजा रे किम रोहिणी तप कीजिये
विधि भाखो रे जिस तुम पासे लीजिए
तव मुनिवर रे विधि रोहिणीना तप तणी
इम जपे रे चित्रसेन राजा भणी ॥११॥

राजा भणी विधि एह जपे चन्द्र रोहिणी आवियै
उपवास कीजे लाभ लीजे, भली भावना भावियै
बारमा जिनवर तणी प्रतिमा, पूजिये मन रग सु
एम साढी सात वरसा लगे कीजे, तजी आलस अग सु॥१२॥

ढाल तीसरी

(तर्ज - सहेली ए आवो मोरियो)

तप करिये रोहिणी तणो वली करिए रे
उजमणो एमके, तप करता पातिक टले ॥टेर॥

तिण कीजे हो तप सेती प्रेम के ॥१॥

देव जुहारी देहरे जिन आगे हो कीजे वृक्ष अशोक के
गुणणो बारमा जिन तणो
भला नैवेद्य हो धरिये सहु थोक के ॥२॥

केशर चंदन चरचिये जिन आगे हो आठे
मंगलीक के विधि शुं पुस्तक पूजिये
तो लहिये ओ शिवपुर तहकीक के ॥३॥

सेवा कीजे साधुनी वली दीजे हो
मुँह माग्या दान के सन्तोषी साधर्मी
मन रंगे हो करी पकवान के ॥४॥

पाटी पायी पूंजणी मसी लेखण हो
झिलमिल सुजगीश के नवकार वाली वीटणा
गुरु आगे हो धरो सत्तावीश के ॥५॥

चोथुं व्रत पण तिण दिने इम पाले हो
मन आणी विवेक के इण विधि रोहिणी आदरे
ते पामे हो आनन्द विवेक के ॥६॥

ढाल चौथी

इम महिमा रोहिणी तणी श्री ज्ञानी गुरु प्रकाशे रे
चित्रसेन ने रोहिणी वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे
इम महिमा रोहिणी तणी ॥टेर॥

इणी परे रोहिणी आदरी ऊपर उजमणो कीधो रे
चित्रसेन ने रोहिणी मन शुद्ध संजम लीधो रे
इम महिमा ॥१॥

आठे पुत्र आदरी दीक्षा बारमा जिन आगे रे
वलि नानाविध तप आदरे जिन धर्म तणी मती जागे रे
इम महिमा ॥२॥

करी अनशन आराधना लही केवल शिवपद पायो रे
जिन वाणी आणी हिए, प्रभुचरणे चित्त लायो रे
इम महिमा ॥३॥

मन मोहन महिमा निलौ, मै स्तवियो शिवपुर गामी रे
मन मान्या साहिब तणी, हवे पुण्ये सेवा पामी रे
इम महिमा .... ॥४॥

कलश

इम गगन इन्दु मुनिचन्द वरसे, चौथ श्रावण सुदि भली
मै कह्यो रोहिणी तणी महिमा, सुगुरु मुखे जिन सांभली
वासुपूज्य इम थया प्रसन्न, अमने चित्त नी चिन्ता टली
श्री सार जिन गुण गावता हवे, सकल मन आशा फली ॥१॥

रोहिणी तप स्तुति

वासुपूज्य जिनेश्वर वन्दू मन धरि नेह
सुख सपत्ति कारण आराधो गुण गेह
रोहिणी तप करतां पामे भव नो पार
सात वरस सत्ताविस मास जघन्य उत्कृष्ट दिलधार ॥१॥
ए अतीत अनागत, वर्तमान त्रिहु काल
सहु जिनवर प्रणमो आणी भाव विशाल
जिन जन्म महोछव सुरपति करे सुविचार
इम चौवीस जिनवर पूजो विधि प्रकार ॥२॥
चन्द्र रोहिणी दिवसे तप आदरिये सार
गुण नो प्रदक्षिणा, खमासमणा सुविचार
यथाशक्ति करिये चौविहार उपवास
चित्रसेन रोहिणी परे पामे लील विलास ॥३॥
पडिक्कमणो दोय टंके, देव वन्दन तिहुकाल
आठ पोह री पौषध, काउसग्ग सुविशाल
सुय देवी सानिध रोग सोग सहुजाय
जिन कृपाचन्द्रसूरि तप सेव्या सुख थाय ॥४॥

तिलक तप विधि

यह तप 30 उपवास से पूरा होता है उसमें श्री ऋषभदेव स्वामी निमित्त 6 उपवास करना पीछे अजितनाथ आदि 22 तीर्थंकरो के निमित्त एक एक उपवास करना। श्री महावीर स्वामी सम्बन्धी दो उपवास करना। जिन तीर्थंकरों के निमित्त उपवास होता है उस नाम का जाप करना, 20 माला 12 साथिया आदि करना देव वन्दनादि सर्व क्रिया करें।

गुणणा

१ श्री ऋषभदेव सर्वज्ञाय नम	२ श्री अजितनाथ सर्वज्ञाय नम
३ श्री सभवनाथ सर्वज्ञाय नम	४ श्री अभिनन्दन सर्वज्ञाय नम
५ श्री सुमतिनाथ सर्वज्ञाय नम	६ श्री पद्मप्रभु सर्वज्ञाय नम
७ श्री सुपार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नम	८ श्री चन्द्रप्रभु सर्वज्ञाय नम
९ श्री सुविधिनाथ सर्वज्ञाय नम	१० श्री शीतलनाथ सर्वज्ञाय नम
११ श्री श्रेयासनाथ सर्वज्ञाय नम	१२ श्री वासुपूज्य सर्वज्ञाय नम
१३ श्री विमलनाथ सर्वज्ञाय नम	१४ श्री अनंतनाथ सर्वनाय नम
१५ श्री धर्मनाथ सर्वज्ञाय नम	१६ श्री शान्तिनाथ सर्वज्ञाय नम
१७ श्री कुंथुनाथ सर्वज्ञाय नम	१८ श्री अरनाथ सर्वज्ञाय नम
१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नम	२० श्री मुनिसुव्रत सर्वज्ञाय नम
२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नम	२२ श्री नेमिनाथ सर्वज्ञाय नम
२३ श्री पार्श्वनाथ सर्वज्ञाय नम	२४ श्री महावीर सर्वज्ञाय नम

पैंतालिस आगम तप विधि

यह तप 45 उपवास से पूरा होता है। इस तप के उपवास एकातर या ज्ञानादि तिथि से छुटे-छुटे होते है। जिस सूत्र का नाम चलता हो उस सूत्र की 20 माला फेरनी चाहिए, साथिया आदि कोष्ठक प्रमाण से जानना—

प्रथम 11 अंग का गुणणा

	साथिये	खमा	लोगस्स	माला
श्री आचारांग सूत्राय नम	25	25	25	20
श्री सुयगडाग सूत्राय नम	23	23	23	20
श्री ठाणाग सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री समवायाग सूत्राय नम	104	104	104	20
श्री भगवती सूत्राय नम	42	42	42	20
श्री ज्ञाताग सूत्राय नम	19	19	19	20
श्री उपासकदशाग सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री अतगडदशाग सूत्राय नम	19	19	19	20
श्री अणुत्तरोववाई सूत्राय नम	23	23	23	20
श्री प्रश्न व्याकरणाग सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री विपाक सूत्राय नम	20	20	20	20

बारह उपांग

श्री उववाई सूत्राय नम	23	23	23	20
श्री रायपसेणी सूत्राय नम	42	42	42	20
श्री जीवाभिगम सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री पन्नवणा सूत्राय नम	160	160	160	20
श्री जम्बूदीव पन्नती सूत्राय नमः	50	50	50	20

श्री चन्द्रपन्नति सूत्राय नम	50	50	50	20
श्री सूरपन्नति सूत्राय नम	57	57	57	20
श्री कप्पया सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री कप्पवडिमिया सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री पुष्फिया सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री पुष्फिचूलिया सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री वन्हिदशा सूत्राय नम	10	10	10	20

छः छेद सूत्र

श्री व्यवहार सूत्राय नम	20	20	20	20
श्री बृहत्कल्प सूत्राय नम	3	3	3	20
श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्राय नम	19	19	19	20
श्री निशीथ सूत्राय नम	16	16	16	20
श्री महानिशीथ सूत्राय नम	42	42	42	20
श्री जीतकल्प सूत्राय नम	35	35	35	20

10 पयन्ना

श्री चाउसरण पयन्ना सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री संथारापयन्ना सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री तन्दुलपयन्ना सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री चन्द्राविज्झा सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री गणिविज्जा सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री देविंदथुओ सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री वीरथुओ सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री गच्छाचार पयन्ना सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री जोइसकरंडक सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री महापच्चक्खाण सूत्राय नम	10	10	10	20

छः मूलसूत्र

श्री आवश्यक सूत्राय नम	32	32	32	20
श्री उत्तराध्यायन सूत्राय नम	36	36	36	20
श्री ओघ निर्युक्ति सूत्राय नम	10	10	10	20
श्री दशवैकालिक सूत्राय नम	14	14	14	20
श्री अनुयोगद्वार सूत्राय नम	62	62	62	20
श्री नदी सूत्राय नम	51	51	51	20

पौष दशमी तप विधि

पौष कृष्णा (वदी) दशमी को श्री पार्श्वनाथ भगवान का जन्म कल्याणक दिन है। आराधक जघन्य रूप से एकासना करके इस पर्व की आराधना करे। उत्कृष्ट रूप से चतुर्थ भक्त अर्थात् - नवमी के दिन मिसरी का पानी पीकर एकल ठाणा करे। दशमी को खीर का एकासना करे तथा ग्यारस को भरिये भोजन अर्थात् पूर्ण रूप से एकासना करे। यह तप प्रतिवर्ष पौषद दशमी को उपर्युक्त विधि से एकासना करते हुए दशवर्ष मे पूरा किया जाता है तथा प्रतिमाह की वदी दशमी को एकासना करके भी यह तप किया जाता है।

क्रिया उस दिन दोनो समय प्रतिकमण, दोपहर मे देव वदन तथा अरिर्हन्त पद के 12 खमासमणा दे। 12 लोगस्स के कायोत्सर्ग करे ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अर्हते नम" इस पद की 20 माला गिने तथा 12 प्रदक्षिणा व 12 ही साथिये करें। तप पूर्ण होने पर यथाशक्ति उद्यापन करे।

सोलिया (कषायजय) तप विधि

क्रोध मान, माया लोभ इन चार कषाया के अनन्तानुबधी अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी और सज्वलन के 16 भेद होते है। इन कषायो को जीतने के लिए चार ओली के रूप मे 16 दिन तक यह तप किया जाता है यथा-प्रथम दिन एकासना द्वितीय दिन नीवी तीसरे दिन आयम्बिल और चौथे दिन उपवास। इस प्रकार करते हुए 16 दिन मे यह तप पूर्ण होता है। तप सम्पूर्ण होने पर ज्ञान पूजा पूर्वक 16 मोदक फल फूल आदि आठ द्रव्यो द्वारा जिनेश्वर भगवान की पूजा करनी चाहिए।

क्रिया "सर्व कषाय जय तपसे नम" की 20 माला प्रतिदिन साथिया प्रदक्षिणा खमासमणा कायोत्सर्ग आदि सर्व 16-16 करे। दोनों समय प्रतिक्रमण देववदन आदि सर्व क्रिया बराबर करे।

28 लब्धि तप विधि

लब्धियां अट्ठाईस होती है। एक एक लब्धि का एक-एक उपवास करने से 28 उपवास करते हुए यह तप पूर्ण होता है। जिस लब्धि का उपवास हो उसी लब्धि के नाम से 20 माला फेरनी चाहिए। लब्धि के नाम की अट्ठाईस प्रदक्षिणा सहित खमासमण व कायोत्सर्ग करने चाहिए। दोनो समय प्रतिकमण व देववन्दनादि करते हुए इस तप की आराधना करनी चाहिए।

लब्धि का गुणना व खमासमणे

1 श्री आमोसही लब्धये नम
2 श्री विप्पोसही लब्धये नम
3 श्री खेलो सही लब्धये नम
4 श्री जल्लोसही लब्धये नम

5	श्री सव्वोसही लब्धये नमः	6	श्री संभिन्नश्रोतो लब्धये नमः
7	श्री अवधि लब्धये नमः	8	श्री ऋजुमति लब्धये नमः
9	श्री विपुलमति लब्धये नमः	10	श्री चारण लब्धये नमः
11	श्री आशीविष लब्धये नमः	12	श्री केवल लब्धये नमः
13	श्री गणधर लब्धये नमः	14	श्री पूर्वधर लब्धये नमः
15	श्री अरिहन्त लब्धये नमः	16	श्री चक्रवर्ती लब्धये नमः
17	श्री बलदेव लब्धये नमः	18	श्री वासुदेव लब्धये नमः
19.	श्री अमृताश्रव लब्धये नमः	20	श्री कुष्ठबुद्धि लब्धये नमः
21	श्री पदानुसारि लब्धये नमः	22	श्री बीजबुद्धि लब्धये नमः
23	श्री तेजोलेश्या लब्धये नमः	24	श्री आहारक लब्धये नमः
25	श्री शीतलेश्या लब्धये नमः	26	श्री वैक्रिय लब्धये नमः
27	श्री अक्षीणमहानसी लब्धये नमः	28	श्री पुलाक लब्धये नमः

14 पूर्व तप विधि

यह तप सुदि चौदस से प्रारम्भ करके एकान्तर 14 उपवास करते हुए पूर्ण करते हैं। जिस पूर्व का उपवास हो उस दिन उसी पूर्व के नाम की 20 माला गिनें। साथिये, कायोत्सर्ग, प्रदक्षिणा व खमासमणे नीचे कोष्ठक में लिखे अनुसार करने चाहिए। प्रतिक्रमण देववन्दनादि सर्व क्रिया यथावत् करनी चाहिए।

14 पूर्व का गुणणा आदि

		साथिये	खमा.	लोगस्स	माला
1	श्री उत्पाद पूर्वाय नमः	14	14	14	20
2	श्री आग्रायणी पूर्वाय नमः	26	26	26	20

3	श्री वीर्य प्रवाद पूर्वाय नम	16	16	16	20
4	श्री अस्तिप्रवाद पूर्वाय नम	28	28	28	20
5	श्री ज्ञान प्रवाद पूर्वाय नम	12	12	12	20
6	श्री सत्य प्रवाद पूर्वाय नम	21	21	21	20
7	श्री आत्मप्रवाद पूर्वाय नम	16	16	16	20
8	श्री कर्म प्रवाद पूर्वाय नम	30	30	30	20
9	श्री प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्वाय नम	20	20	20	20
10	श्री विद्या प्रवाद पूर्वाय नम	15	15	15	20
11	श्री कल्याण प्रवाद पूर्वाय नम	12	12	12	20
12	श्री प्राणायाम प्रवाद पूर्वाय नम	12	12	12	20
13	श्री क्रिया प्रवाद पूर्वाय नम	13	13	13	20
14	श्री लोकबिन्दुसार पूर्वाय नम	25	25	25	20

इग्यारह गणधर तप विधि

इस तप में एक एक गणधर का एक एक उपवास अथवा आयम्बिल करना चाहिए। जिस दिन जिस गणधर के नाम का उपवास आये उस दिन उन्हीं गणधर का जाप अर्थात् 20 माला फेरनी चाहियें। साथिये कायोत्सर्ग प्रदक्षिणा व खमासमणा ग्यारह करने चाहियें। प्रतिक्रमण देववन्दनादि सर्व क्रिया यथावत् करनी चाहिये –

1 श्री इन्द्रभूति गणधराय नम
2 श्री अग्निभूति गणधराय नम
3 श्री वायुभूति गणधराय नम
4 श्री व्यक्त गणधराय नम
5 श्री सुधर्मा स्वामी गणधराय नम
6 श्री मंडितपुत्र गणधराय नम
7 श्री मौर्यपुत्र गणधराय नम
8 श्री अकंपित गणधराय नम
9 श्री अचल गणधराय नम
10 श्री मेतार्य गणधराय नम

11. श्री प्रभास गणधराय नम.

श्री नवकार तप विधि

इस तप मे नवकार के जितने अक्षर होते है उतने उपवास करने पडते है। जिस दिन जिस पद का उपवास होता है उसी पद की 20 माला फेरना। सव पदो के 68 उपवास होते है। साथिया आदि पद के जितने अक्षर होते हे उतने ही समझना।

	गुणणा	उपवास
1	नमो अरिहताण	7
2	नमो सिद्धाण	5
3	नमो आयरियाण	7
4	नमो उवज्झायाण	7
5	नमो लोए सव्वसाहूणं	9
6	एसो पच नमुक्कारो	8
7	सव्व पावपणासणो	8
8	मगलाण च सव्वेसि	8
9	पढम हवई मगल	9
	योग	68

इन्द्रियजय तप विधि

प्रथम पुरिमड्ढ, वियासण या एकासण, नीवी, आयविल और उपवास, इस प्रकार पाँच दिन करने से एक इन्द्रियजय तप की ओली होती है। इसी प्रकार पाच इन्द्रियो की जय के लिए पाँच ओली करनी पडती है। 25 दिन मे यह तप पूरा होता है। जिस दिन जिस इन्द्रिय का तप होता है उसी तप का जाप करना चाहिए।

	साथिये	खमा	लोगस्स	माला
1 स्पर्शनेन्द्रिय जय तपसे नम	8	8	8	20
2 रसनेन्द्रिय जय तपसे नम	5	5	5	20
3 घ्राणेन्द्रिय जय तपसे नम	2	2	2	20
4 चक्षुरिन्द्रिय जय तपसे नम	5	5	5	20
5 श्रोतेन्द्रिय जय तपसे नम	5	5	5	20

कर्मसूदन तप विधि

इस तप में प्रथम दिन उपवास दूसरे दिन एकासणा, तीसरे दिन ठाम चौविहार एकासणा अथवा आयंबिल करना। चौथे दिन (एकलठाण) चौविहार एकासणा करना। पांचवे दिन ठाम चौविहार एक दत्ती (एक बार जितना भोजन थाली में आवे उतना ही खाना वापस नहीं लेना) ऐसा एकासणा। छठे दिन विगय टाल कर लूखी नीवी सातवें दिन आयंबिल। आठवें दिन आठ कंवल का एकासणा। इस प्रकार यह तप आठ दिन में पूरा होता है। साथिया आदि जितनी जिस कर्म की प्रकृतियां होती हैं उतने ही करना चाहिये। माला 20 फेरना। जिस दिन जिस कर्म का तप चलता हो उसी दिन उसी तप का गुणणा आदि करें।

गुणणा	खमा	लोगस्स	साथिये	माला
श्री अनंतज्ञान गुण धराय नम	5	5	5	20
श्री अनंतदर्शन गुण धराय नम	9	9	9	20
श्री अव्याबाध गुण धराय नम	2	2	2	20
श्री क्षायिकसम्यक्त्व गुण धराय नम	28	28	28	20
श्री अक्षयस्थिति गुण धराय नम	4	4	4	20
श्री अमूर्त गुण धराय नम	103	103	103	20

श्री अगुरुलघु गुण धराय नम	2	2	2	20
श्री अनतवीर्य गुण धराय नम	5	5	5	20

मेरु तेरस तप की विधि

यह तप माघ वदि 13 (तेरस) को होता है। यह दिन ऋषभदेव भगवान् का निर्वाण कल्याणक माना जाता है। चौविहार उपवास करना होता है। रत्नो के, सोने के, चादी के अथवा घी के एक-एक मेरु चारो दिशाओ मे रखे व बीच में एक मोटा मेरु रखें। यदि सारे शहर मे गाजा-बाजा सहित फेरना हो तो उन पाच मेरु को एक थाली मे रखकर सारे शहर मे घूमे, तत्पश्चात् मंदिर मे जाकर चारों दिशा मे व एक बीच मे नदावर्त्त गहुली करके पाच मेरु उसके ऊपर रख दे और दीप, धूप आदि से पूजा करे। यह तप तेरह वर्ष तेरह मास तक किया जाता हे। दोनो समय प्रतिक्रमण, देववन्दन आदि यथा समय करे।

'ऋषभदेव पारगताय नम' इस पद की 20 माला फेरनी चाहिये। साथिया, खमासमणा, प्रदक्षिणा, काउस्सग्ग आदि 12-12 करना।

वर्द्धमान तप की विधि

यह तप एक आयंबिल करके उपवास, दो आयंबिल करके उपवास, तीन आयम्बिल करके उपवास। इस प्रकार 100 आयम्बिल तक चढा जाता है। यह तप 14 वर्ष 3 मास 20 दिन तक होता है। इस तप को शुरू करते समय पाँच ओली लगातार करनी पड़ती है। 'णमो अरिहताण' की 20 माला फेरनी चाहिये। साथिया, खमासमणा, प्रदक्षिणा आदि 12-12 करना।

श्री सौभाग्य कल्पवृक्ष तप विधि

यह तप चैत्र मास की शुक्ल एकम से और चंद्रादि शुभ योग होने पर एकान्तर पारणवाला 15 उपवास करने से तीस दिन में पूरा होता है।

उद्यापन में बडी स्नात्र विधिपूर्वक स्वर्ण अथवा चाँदी का कल्पवृक्ष बनवाकर देव के पास रखना। इस तप के फल से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। यह श्रावक के करने का अगाढ तप है।

'ॐ णमो अरिहंताणं' पद की बीस माला साथिया, खमासमणा आदि 12-12 करना।

श्री निगोद आयुक्षय तप विधि

साधारण वनस्पतिकाय को निगोद कहते हैं। सूक्ष्मसाधारण वनस्पतिकाय को सूक्ष्म निगोद कहते हैं। इस विश्व में असंख्यात गोले हैं, एक-एक गोले में असंख्यात निगोद हैं और एक-एक निगोद में अनंत जीव है। ये जीवन अनादिकाल से सूक्ष्म निगोद में ही रहते आए हैं। ये अव्यवहार राशि के जीव कहलाते हैं। जो जीव सूक्ष्म निगोद से बाहर निकल चुके हैं वे व्यवहार राशि के जीव कहलाते है। निगोद के जीवों का आयुष्य अन्तर्मुहूर्त होता है। अन्तर्मुहूर्त दो घडी के भीतर का समय। ऐसे निगोद सम्बन्धी आयु के क्षय होने के लिए यह तप किया जाता है।

प्रथम विधि

प्रथम एक उपवास पर एकासना फिर दो उपवास पर एकासना फिर तीन उपवास पर एकासना फिर दो उपवास पर एकासना फिर

एक उपवास पर एकासना। इस तरह यह तप चौदह दिन मे पूरा किया जाता है। उद्यापन मे चौदह मोदक रखना। इस तप से निगोद के आयुष्य का क्षय होता है।

'णमो अरिहताण' पद की बीस माला, साथिया आदि 12-12 करना।

दूसरी विधि

प्रथम एक उपवास पर एकासना, फिर दो उपवास पर एकासना, फिर तीन उपवास पर एकासना, फिर चार उपवास पर एकासना, फिर पाच उपवास पर एकासना, फिर चार उपवास पर एकासना, फिर तीन उपवास पर एकासना, फिर दो उपवास पर एकासना, फिर एक उपवास पर एकासना। इस प्रकार 34 दिन मे यह तप पूरा होता है।

प्रतिदिन 'नमोवाणस्स' की 20 माला काउसग्ग, प्रदक्षिणा, साथिये आदि सब ५१ करे। देव वन्दन, प्रतिक्रमण आदि यथावत करे।

तेरह काठिया तप-विधि

काठिया यानि लुटेरे। मार्ग मे चलते प्राणियो को रोक कर जैसे लुटेरे लूट लेते है वैसे ही धर्म सम्मुख हुए प्राणियों को बीच मे अटकाकर आलस्य आदि दुर्गुण धर्म रूपी धन को लूट लेते है। इसीलिए इन्हे काठिया की उपमा दी गई है। ये काठिये तेरह प्रकार के होते है। जिनकी साधना 13 अट्ठम या 13 उपवास करके की जाती है। इसमे सिद्ध पद की आराधना होती है। साथिये, प्रदक्षिणा, काउसग्ग आदि 8-8 करने चाहिए। प्रत्येक काठिये की 20 माला फेरनी चाहिए। दोनो समय प्रतिक्रमण तथा देववदन आदि यथा विधि करने चाहिए।

काठिये की गणना

1	आलस काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
2	मोह् काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
3	अवज्ञा काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
4	मान काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
5	क्रोघ काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
6	प्रमाद काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
7	कृपण काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
8	भय काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
9	शोक काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
10	अज्ञान काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
11	व्याक्षेप काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
12	कुतुहल काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम
13	विषय काठिया	निवारकाय श्री सिद्धाय नम

श्री मोक्ष-दण्ड तप विधि

जिस तप के माध्यम से मोक्ष तक पहुँचा जाए, उसे मोक्ष-दण्ड तप कहते हैं। इसमें गुरु के दण्ड (डांडे) को मुठ्ठी से नापा जाता है। डांडा जितनी मुठ्ठी प्रमाण हो उतने ही प्रमाण के अकान्तर उपवास अर्थात् एक दिन उपवास व एक दिन बियासना करते हुये यह पूर्ण किया जाता है।

अंतिम दिन गुरु के दण्ड की चन्दन आदि से पूजा करनी चाहिए व दण्ड के सामने तीन ढेरियों एवं सिद्धशिला सहित अक्षत (चावल) का स्वस्तिक बनाकर उस पर (जितने उपवास किये हो उतने ही) फल मिष्ठान्न रुपानाणा आदि रखें।

पारणे के दिन शक्ति के अनुसार सघपूजा व स्वधर्मी वात्सल्य करे।

इस तप मे—"नमो लोए सव्वसाहूणं" की 20 माला, 27 लोगस्स के काउसग्ग, 27 स्वस्तिक व दोनो समय प्रतिक्रमण व देववन्दन आदि सर्व क्रिया विधिवत् करे।

श्री दारिद्र्यहरण तप विधि

यह तप पूर्णिमा से शुरू करना होता है। प्रथम दिन उपवास, दूसरे दिन एकासना, तीसरे दिन नीवी, चौथे दिन आयंबिल, पाचवे दिन बियासना; इस तरह एक ओली होती है। ऐसे ही दो ओली करना। यह तप दस दिन मे पूरा होता है। पारणे के दिन साधु-मुनिराज की भक्ति अवश्य ही करनी चाहिए।

प्रतिदिन "नमो नाणस्स" की 20 माला काउसग्ग, प्रदक्षिणा साथिये आदि सब 51 करे। देव वन्दन प्रतिक्रमण आदि यथावत करे।

श्री चिंतामणि तप विधि

यह तप शुभ दिन शुभ मुहूर्त मे कभी भी कर सकते है। 6 दिन मे यह तप पूरा किया जाता है। छ: दिन मे क्रमशः उपवास,, एकासन, नीवी, उपवास, एकासना और उपवास करना, उद्यापन मे ज्ञान पूजा, रात्रि जागरण करना।

'णमो अरिहंताणं' पद की बीस माला फेरना। साथीया आदि 12-12 करना।

सर्व तप ग्रहण विधि

तप करने की विधि

शुभ दिन शुभ नक्षत्र एवं शुभ समय देखकर उत्तम वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर, तिलक करके हाथ में मोली बांधकर अक्षत (चावल) सुपारी श्रीफल-नैवेद्य-यथाशक्ति रोकड रुपये आदि लेकर गुरु महाराज के पास जावें। वहाँ स्थापनाचार्य के सामने नवकार गिनते हुये तीन प्रदक्षिणा देवें। पश्चात् एक पट्टे पर पांच साथिया करके श्रीफल मिठाई फल आदि चढावें। उसके बाद तप ग्राहक हाथ में वासक्षेप लेकर निम्न गाथायें बोल कर यथाशक्ति रोकड रुपयों से ज्ञान पूजा करें —

गाथा

नमंत सामंत महीवनाह देवाय पूयं सुविहेय पुव्वं।
भत्तिइचित्तं मणिदामएहिं, मंदार पुप्फ पसवेहिं नाणं ॥१॥

तहेव सड्ढा मणि मुत्तिएहिं सुगंध पुप्फेहिं वरंसिएहिं।
पूयंति वंदति नमंति नाणं, नाणस्स लाभाय भवक्खयाय ॥२॥

इसके पश्चात् इरियावहिं पडिक्कमें तस्स उत्तरी अन्नत्थ एक लोगस का काउसग्ग करके प्रकट 'लोगस्स' कहें। बाद में खमासमणा देकर इच्छाकारेण संदि सह अमुक तप ग्रहण करवामुहपत्ति पडिलेहुं, इच्छं" कहकर खडे पैरो से बैठकर मुहपत्ति पडिलेहें दो वांदणा देवें। फिर खमासमणा देकर "इच्छाकारी भगवन्। अमुक तप गह`णत्थंचेइयाइं वंदावेह वासनिक्खेवं करेह।" गुरु वंदावेमो करेमो कहके शिष्य के सिर पर वासक्षेप डालें।

तत्पश्चात् बांयां गोडा ऊंचा करके चैत्यवंदन कहके णमुत्थुणं अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थ आदि कहके चार थुई से देववंदन करें। चौथी

थुई बाद नीचे बैठ कर णमुत्थुणु कहे, पुनः खडे होकर "श्री शान्तिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थ करेमि काउसग्ग" वन्दण वत्तिआए अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स का काउसग्ग करे। पार कर 'नमोऽर्हत्' कहके निम्न स्तुति कहे:—

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥१॥

इसके बाद "शान्तिदेवता आराधनार्थ करेमि काउसग्ग" अन्नत्थ कहकर एक नवकार का काउसग्ग करे। पारकर 'नमोऽर्हत्' कहकर नीचे की स्तुति कहेः—

शांति शांतिकर श्रीमान्, शांति दिशतुमेगुरुः
शांतिरेव सदातेषां, येषा शांति गृहि गृहे ॥२॥

बाद मे अनुक्रम से श्रुत देवता, भुवन देवता और क्षेत्र देवता का नाम लेकर "आराधनार्थ करेमि काउसग्ग" अन्नत्थ कहकर अनुक्रम से ही 'कमलदल, चतुर्वर्णाय,' और 'यस्याक्षेत्र," स्तुतियाँ कहे। बाद मे "शासन देवता आरार्धनार्थ करेमि काउसग्ग" अन्नत्थ कहके एक नवकार का काउसग्ग करे। पारकर "नमोऽर्हत्" कहके नीचे की स्तुति कहे—

या पति शासन जैन, संघ प्रत्यूह नाशिनी।
साऽभिप्रेत समृद्धयर्थ, भूयाच्छासन देवता ॥३॥

पश्चात् समस्त वैयावृत्य कर "देवी देवता आरार्धनार्थ करेमि काउसग्ग" अन्नत्थ कहके एक नवकार का काउसग्ग करके पारकर "नमोऽर्हत्" कहके निम्न स्तुति कहे—

श्री शक्र प्रमुखा यक्षा, जिन शासन संस्थिता।
देवा देव्यस्तदन्येऽपि सघ रक्षन्तवपायतः ॥४॥

अब इसके बाद बांया गोडा ऊंचा करके चैत्यवन्दन की मुद्रा मे बैठकर "णमुत्थुण जावतिचेइयाई जावत केविसाहू" उवसग्गहर जयवीयराय पर्यन्त कहे। खमासमणा देकर "इच्छाकारेणं संदिस्सह भगवन्।" अमुक तप गहणत्थ करेमि काउसग्ग अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स का काउसग्ग करे। पार कर प्रकट लोगस्स कहे। फिर खमासमणा देवें तीन नवकार गिनें। फिर खमासमणा देवे "इच्छकारी भगवन्। पसायकरी-अमुक तप ग्रहण दण्डक उच्चरावोजी।" गुरु उचरावेमो कहके तीन नवकार गिनके नीचे का पाठ तीन बार उच्चरावे –

तप उच्चारण पाठ

अहण्णं भन्ते। तुम्हाण समीवे अमुक तवं उपसपज्जित्ताणं विहरामि तजह्यादव्वओ खित्तओ-कालओ-भावओ। दव्वओणं-अमुक तवं खित्ओणं-इत्थं वा अन्नत्थं वा कालओणं अमुक समयं परिमाणं भावओणं-जाव गहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि जाव सन्निवाएणं नाभि भविज्जामि अण्णेण व केणइ रोगायंकादि परिणामवसेम एसो मे परिणामो न पडिवज्जई ताव मे एस तपो रायाभियोगेणं गणभियोगेणं बलाभियोगेण देवाभियोगेणं गुरु निग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ।

शिष्य कहे - वोसिरामि

तीसरी बार उच्चराने के बाद गुरु महाराज "हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं सम्मं धारणीयं चिरं पालणीयं गुरु गुणेहिं वड्ढाहि नित्थारग पारगा होह।" कहते हुए शिष्य के सिर पर वासक्षेप डालें। पश्चात् तप ग्राहक गुरु को दो वांदणे पूर्वक वन्दन करके जो भी पच्चक्खाण करने हों वो पच्चक्खाण ले। फिर खमासमणा देते हुए

नीचे हाथ रखकर - "क्रिया करते हुए जो भी कोई अविनय आशातना हुई हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कड ऐसा कहे।

तप पारने की विधि

उपाश्रय आकर ज्ञानपूजा करे। इरियावहि पडिक्कमे। एक लोगस्स का काउसग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पश्चात् "अमुक तप पारवा मुहपत्ति पडिलेहु" मुहपत्ति पडिलेहण करके दो वादणा देवे। फिर "इच्छा•सदि•भग• अमुक तप पारावणत्थ काउसग्ग करावेह"। गुरु कहे "करावेमो" फिर खमा• देकर 'इच्छाकारेण तुम्हे अम्हं अमुक तप पारावणत्थ चेइय वदावेह, वासनिक्खेव करेह " ऐसा कहे।

तब गुरु "वदावेमो करेमो" कहते हुये शिष्य के शिर पर वासक्षेप डाले।

फिर तीन खमा•। देकर बाँया गोडा ऊचा करके "णमुत्थुण से जयवीयराय" पर्यन्त चैत्यवन्दन करे फिर 'अमुक तप पारावणत्थ करेमि काउसग्ग अन्नत्थ' कह के एक नवकार का काउसग्ग करे। पार कर कोई सी भी स्तुति कहे। फिर बैठकर "णमुत्थुण" कहे।

अन्त मे नीचे हाथ रखकर "इच्छा•सदि•भग. ! अमुक तप करते हुये जो भी कोई अविनय आशातना हुई हो वह सब मन वचन कायाकरी मिच्छामि दुक्कड। ज्ञान, भक्ति, द्रव्य भाव से की हो वह प्रमाण फलदायक होवे।"

गुरु कहे - "नित्थारगपारगाहोह" फिर यथाशक्ति पच्चक्खाण करे। "अमुक तप आलोयण निमित्त करेमि काउसग्ग-अन्नत्थ" कहके चार लोगस्स का काउसग्ग करे। पारके प्रकट लोगस्स कहे। अतिथिसत्कार करे। यथाशक्ति उद्यापन करे।

पच्चक्खाण पारने की विधि

स्थापनाचार्य के सामने खमा॰ देकर "इरियावहि॰" तस्य अन्नत्थ कह कर एक लोगस्स का काउसग्ग करे, पारकर प्रकट लोगस्स कहे। खमा॰देकर इच्छा॰संदि॰भग॰। चैत्यवन्दन करूं? कह के बाँया गोडा ऊंचा करके चैत्यवन्दन करे - "जयउसामी से जयवीयराय" पर्यन्त करे। फिर खमा॰ देकर "इच्छा॰संदि॰भग॰ पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहु इच्छं" कहके मुंहपत्ति पडिलेह फिर खमा॰ देकर पच्चक्खाण परावेह "यथाशक्ति" फिर खमा॰ देकर 'इच्छा॰संदि॰भगवन्। पच्चक्खाण पारेमि? तहत्ति' कहकर मुट्ठी बाधकर तीन नवकार गिने। पश्चात् पोरिसी साढ पोरिसी पुरिमड्ढ या अवड्ढ जो भी किया हो उसका नाम लेके पच्चक्खाण पारें। जैसे - पोरिसी साढ पोरिसी पुरिमड्ढ अवड्ढ का पच्चक्खाण किया। चौविहार आयम्बिल एकासणा किया तिविहार का पच्चक्खाण पारूं। फासियं पालियं सोहियं, तिरियं कीटियं जं आराहियं, जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कड।

फिर तीन नवकार गिने।

पच्चक्खाण सूत्राणि

1 नवकारसहियं पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

2 पोरिसी - साढपोरिसी पच्चक्खाण

पोरिसी, साड्ढपोरिसी मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असणं, पाण खाइमं, साइयं अण्णत्थणाभोगेण,

सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

3. पुरिमड्ढ - अवड्ढ पच्चक्खाण

सूरे उग्गए पुरिमड्ढ अवड्ढ वा पच्चक्खाइ चउव्विहपि आहार असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

4. एकासण - बिआसण पच्चक्खाण

पोरिसी, साड्ढपोरिसी वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहपि आहार असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण एकासण बिआसण वा पच्चक्खाइ, दुविह, तिविहपि, आहार, असण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारिआगारेण, आउटणपसारेण, गुरू अब्भुट्ठाणेण, परिट्ठावणियागारेण, महात्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

5. एकलठाण - पच्चक्खाण

पोरिसी, साड्ढपोरिसी, वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहपि आहार असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण एकासण एगट्ठाण, पच्चक्खाइ, दुविह, तिविह, चउव्विहपि, आहार, असण, खाइम, साइम, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, सागारिआगारेण, गुरूअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावाणियागारेण, महात्तगारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

6. आयम्बिल - पच्चक्खाण

पोरिसी, साड्ढपोरिसी, वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेण,

पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयम्बिल पच्चखाइ, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेण लेवालेवेण गिहत्थससिट्ठेण, उक्खित्तविवेगेण पारिट्ठावणियागारेण महात्तगारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

तिविहपि आहार, असणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटणपसारेण गुरूअब्भुट्ठाणेण पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

7 निव्विगइय - पच्चक्खाण

पोरिसी साड्ढपोरिसी, वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असणं पाणं, खाइम साइमं, अण त्यणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण निव्विगइय पच्चखाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थससिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेण पारिट्ठावणियागारेण महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्खाइ तिविहपि - आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटणपसारेण गुरूअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

8 चउव्विहार - उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भतट्ठ पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महात्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

9 तिविहार - उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भतट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पाणहार पोरिसि, साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाई,

अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

10. विगइ - पच्चक्खाण

विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थसंसिट्ठेण, उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खिएण, पारिट्ठावणियागारेण, वोसिरइ।

11. देसावगासिक - पच्चक्खाण

देसावगासिय, उवभोगपरिभोग, पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

12. दत्ति - पच्चक्खाण

पोरिसी, साड्ढपोरिसी पुरिमड्ढ अवड्ढ वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहपि आहार - असण, पाण, खाइम, साइम, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण एकासणं एगट्ठाण दत्तिय पच्चक्खाइ तिविहपि, चउव्विहपि आहार - असण, पाण, खाइम, साइम, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारिआगारेण, गुरूअब्भुट्ठाणेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

सन्ध्याकालीन पच्चक्खाण

13. दिवसचरिम - चउव्विहार - पच्चक्खाण

दिवसचरिम पच्चक्खाइ, चउव्विहपि, आहारं, असण, पाण, खाइम, साइम, अण्णत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

14 दिवसचरिम - दुविहार - पच्चक्खाण

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि, आहार असणं खाइम अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महात्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

15 पाणाहार - पच्चक्खाण

पाणाहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महात्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

16 भवचरिमं - पच्चक्खाण

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहार - असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

प्रत्येक तप मे करने की सामान्य विधि

1 दोनों वक्त प्रतिक्रमण करना।
2 काल समय देववंदन विधिपूर्वक करना।
3 दो वक्त पडिलेहण करना।
4 विधिपूर्वक पच्चक्खाण करना और पारना।
5 जिनेश्वर की पूजाभक्ति करना।
6 गुरु वंदन करना और उनसे पच्चक्खाण लेना।
7 ज्ञान की पूजा-भक्ति करना।
8 प्रभु के पास बतलाई संख्या के अक्षत (चावल) से स्वस्तिक कर उस पर यथाशक्ति फल नैवेद्य व नाणा चढाना।
9 प्रत्येक तप में बतलाये अनुसार गिनना। २० नवकारवाली प्रमाण गिनना।
10 बताई संख्या के अनुसार खमासमणा देना।

11. वताई सख्या के अनुसार लोगस्स का कायोत्सर्ग करना।
12 तपस्या के दिन ध्यान विशेप रूप से करना।
13 व्रह्मचर्य का पालन करना, भूमि शयन करना।
14 साधु-साध्वी की वेयावच्च करना।
15 तप के पारणे पर यथाशक्ति स्वामी-वात्सल्य करना।
16 वडे-वडे तप के अत या मध्य मे उसका महोत्सवपूर्वक उद्यापन करना।
17 प्रत्येक तप मे सचित पानी उपयोग मे नही लेना।
18 प्रत्येक तप मे रात्रि को चउव्विहार करना।
19 कोई भी तप सासारिक आशा से नही करना।
20 तपस्या शुरू करने के मुहूर्त, विधि-विधान, तिथि-मिति आदि के सम्वन्ध मे साधु-साध्वी से समझकर करना विशेप लाभदायक है।
21 अच्छा दिन देखकर शुक्लपक्ष मे तपस्या शुरू करनी चाहिए।

गीतिकाए एव उपदेश सज्झाय

1 श्री अतिमुक्तकुमार की सज्झाय

(राग - धन्याश्री)

वन्दूं श्री अतिमुक्त कुमार वन्दूं
शैशव में संयम धर पाया केवलज्ञान श्रीकार वन्दूं ॥स्थायी॥

पोलाशपुर नृप विजय का प्यारा श्री देवी माँ का राजदुलारा,
मृदु वपु रूप अम्बार वन्दूं ॥१॥

शिशु मित्रों संग करता क्रीडा गौतम मुनि लख आई व्रीडा
तज के कन्दुक प्रहार वन्दूं ॥२॥

पूछे आप कौन? कहाँ जाते? इस झोली में क्या है लाते?
देखा है पहली वार वन्दूं ॥३॥

गौतम मुनि कहे आहार को जाता शिशु झोली ग्रह भवन ले जाता,
रानी दे मोदक आहार, वन्दूं ॥४॥

गौतम प्रभु के पास सिधावे अंगुली पकड अतिमुक्त भी जावे
प्रभु को करे नमस्कार, वन्दूं ॥५॥

तद्भव सिद्धिक भव्य यह गौतम! शिष्य तुम्हारा यह सर्वोत्तम,
है गुण गण भण्डार वन्दूं ॥६॥

देखे तीर्थंकर शतश मुनि जन, जग गये पूर्व संस्कार धन,
मै भी बनूँगा अनगार, वन्दूं ॥७॥

माता पिता दे विवश हो आज्ञा, शिशु मुनि बन गये पायी प्रज्ञा
पंच महाव्रत धार, वन्दूं ॥८॥

मुनिजन सह स्थण्डिल भू जावे, जल धारा लघु पात्र तिरावे,
मेरी नैया हो रही पार, वन्दू .... ॥९॥

शिशु मुनि को सव उपालम्भ देते, सचित्त जल मुनि स्पर्श न करते,
इसमे है पाप अपार, वन्दू .. ॥१०॥

मुनि परस्पर वाते करते, वाल्यावस्था मे दीक्षित करते,
जाने न जीव विचार, वन्दू ... ॥११॥

करते इरियावही आलोचन, विकसित हो गये अन्तर्लोचन,
पाया, केवलज्ञान उदार, वन्दू .. ॥१२॥

प्रभु कहे क्यो आशातना करते, निन्दा गर्हा भी क्यो करते,
इसकी, हो गयी नैया पार, वन्दू .. ॥१३॥

षडवर्षी शिशु केवल पाये, सव के मन मे विस्मय आये,
प्रभु दे सशय निवार, वन्दू ... ॥१४॥

वाल केवली अतिमुक्त मुनिवर, कोटिश वन्दन ज्ञान सुदिनकर,
'सज्जन' करे वारवार, वन्दू ... ॥१५॥

२. तपस्वी धन्ना मुनिराज की सज्झाय

(राग : काफी - ऐसे श्याम सलौने)

ऐसे धन्ना तपस्वी, मुनिगण मे सिरदार।
प्रशसा श्री वीर प्रभु करे, धन धन्ना अनगार, ऐसे• ॥स्थायी॥

काकन्दी नगरी अति सुन्दर, जितशत्रु थे नरेश।
भद्रा सार्थवाही श्रेष्ठि नी, विश्रुत देश विदेश, ऐसे• ॥१॥

एक मात्र सुत धन्यकुवर था, विद्या रूप अम्वार।
अप्सरा जैसी आठ पत्नियाँ, शील विनय भण्डार, ऐसे• ॥२॥

वर्द्धमान महावीर पधारे देवे बधाई वनपाल।
राजा प्रजा मिल वन्दन जावे सुने उपदेश रसाल, ऐसे. ॥३॥

धन्य सुने प्रभु की सुदेशना जाने भोग असार।
नासिका मलवत् त्यागे तत्क्षण सर्वविरति ले धार ऐसे. ॥४॥

छट्ठ छट्ठ की तपस्या करना पारणे आयम्बिल आहार।
आजीवन यह अभिग्रह करते धरते ध्यान उदार ऐसे. ॥५॥

राजगृही गुणशील चैत्य में समवसरे वर्द्धमान।
पर्षद् द्वादशविध मिल आवे वचन सुधा करे पान, ऐसे. ॥६॥

वन्दन कर श्रेणिक नृप पूछे मुनिवर चउदह हजार।
सर्वश्रेष्ठ तपधारी कौन है? कहे प्रभु धन्य अनगार ऐसे. ॥७॥

अस्थिशेष तन गमन करे जब, खड खड-ध्वनि विस्तार।
नव महिने कर घोर तपस्या अनशन करे वैभार ऐसे. ॥८॥

श्रेणिक जावे गिरि वैभार पे मुनि को करे नमस्कार।
तप अनुमोदन भावना भावे कहे धन्य अवतार ऐसे. ॥९॥

अनुत्तर सर्वार्थसिद्ध विमाने एकावतारी सुर सार।
धन्य बने सुख शय्यागत करे द्रव्यानुयोग विचार, ऐसे. ॥१०॥

आयु पूर्ण कर महाविदेह में सयम लेगे धन्य।
केवलज्ञान को पायेंगे 'सज्जन' वन्दे भाव अनन्य, ऐसे. ॥११॥

३ पूणिया श्रावक की सज्झाय

(राग - गोपीचंद लडका)

धन्य पूणिया श्रावक जिसकी सामायिक अनमोल थी ॥स्थायी॥

राजगृही मे पूणिया श्रावक शुद्ध सामायिक करता।
पूणी का व्यापार था उसका द्वादश व्रत आचरता रे धन्य ॥१॥

धर्म नीति से रहते दम्पति, साधर्मिवात्सल्य करते।
एक-एक दिन तपस्या करके, राशि पुण्य की भरते रे, धन्य . ॥२॥

प्रभु मुख श्रवण करे श्रेणिक नृप, होगा नरक मे जाना।
पूछे प्रभु से नरक न जाऊ, ऐसा यत्न बताना रे, धन्य . ॥३॥

वीर प्रभु कहे नरक न जाओ, इसके चार उपाय।
कभी न जाओ भद्र! नरक मे, यदि एक बन जाय रे, धन्य ..॥४॥

नित्य करो नवकारसी रे, कपिला देवे दान।
पूणिया एक सामायिक फल दे, तजे कालिया हिंसा विधान रे धन्य. ॥५॥

नवकारसी नहीं होती भगवन्! उठते करू जलपान।
कपिला तो है दासी मेरी, क्यो नही देगी दान रे, धन्य ..॥६॥

पूणिया से सामायिक लेना, नही कठिन कुछ काम।
कालिया को बन्दी कर भेजू, पाताल कूप के धाम रे, धन्य ..॥७॥

बलपूर्वक कपिला से पाचक, दिलवावे जब दान।
कहे दासी देती है कुडछी, मै नही देती दान रे, धन्य ..॥८॥

पूणिया गृह नृपति जावे, माँगे सामायिक एक।
कोटि कनक मुद्राए लेलो, और दूँ ग्राम अनेक रे, धन्य ..॥९॥

पूणिया कहे स्वामिन्! सामायिक बिकती नहीं यह नीति।
करो एक मुहूर्त सामायिक, यही पाने की रीति रे, धन्य . ॥१०॥

कालिया कहता प्रण है पक्का, कैसे रहता अधूरा।
आर्द्र मिट्टी के महिष बनाकर, मैने प्रण किया पूरा रे, धन्य ...॥११॥

सुन भय भ्रान्त हो श्रेणिक नृपति, समवसरण मे आवे।
प्रभुवर कहे मुझ सदृश्य पदवी, होगी क्यो घबरावे रे, धन्य .. ॥१२॥

धन्य, धन्य वह पूणिया श्रावक, धन्य श्रेणिक नरराय।
भावी जिन श्रेणिक है 'सज्जन', ज्ञान से गुणिगुण गाय रे, धन्य .॥१३॥

४ धन्ना-शालिभद्र, धन्य-सुभद्रा सवाद

(तर्ज - यशोमती मैया से)

सुभद्रा से पूछे धन्ना कहो मेरी रानी।
आज क्यो आया आँखों से पानी ॥स्थायी॥

राजगृही नगरी के, मान्य धनी मानी,
नृप के अक में जिनकी काया कुम्हलानी
शालिभद्र सा तेरा ओ शालिभद्र सा तेरा भ्राता है रानी
नहीं दूजा सानी सुभद्रा ॥१॥

मेरे हृदय की तुम हो प्रिय साम्राज्ञी
आठो मे ही हो, तुम महाराज्ञी
क्या दुख है तुम्हे ओ क्या कहो महारानी ?
बोलो जुबानी सुभद्रा ॥२॥

स्वामिन्। भ्राता मेरा बना है वैरागी,
हो जायेगा वह शीघ्र सर्व त्यागी
इक इक नित्य त्यागे ओ इक-इक इक रानी
नहीं बात छानी सुभद्रा ॥३॥

मात्र एकाकी प्रिय। भाई है मेरा,
पितृ-गृह में होगा घोर अधेरा
इसी दुख से स्वामी मेरे ओ इसी-नयनों से पानी
बात जानी मानी, सुभद्रा ॥४॥

धन्ना सेठ कहे कायर तेरा भाई,
इक इक क्या तजे समझ न आई
कैसा वैराग्य उसका ओ कैसा-दिखता अज्ञानी
रीति न जानी सुभद्रा ॥५॥

सरल है स्वामी जग में मुख की यह कथनी,
किन्तु कठिन है करना, वैसी ही करनी

वोले धन्य लो देखो ओ वोले•चला मै भी रानी,
सुन लो सयानी, सुभद्रा ॥६॥

शालिभद्र के आगन, कुवर धन्य आये,
आओ झट प्रिय वन्धु, प्रभु पास जायें,
आत्मकार्य मे सखे! ओ... आ•देर न लगानी,
यही वीर वानी, सुभद्रा .... ॥७॥

शालिभद्र उतरे झट, अपने भवन से,
तोड दिया नाता, धन व स्वजन से,
महावीर प्रभु की ओ.. महा•शरण है सुहानी,
वैभव है फानी, सुभद्रा ..... ॥८॥

साला वहनोई लेते, प्रभुजी से दीक्षा,
ग्रहणी आसेवनी, लेकर के शिक्षा,
वैभार गिरि पै चढ के ओ... वैभार•अनशन ले ज्ञानी,
'सज्जन' की वानी, सुभद्रा .... ॥९॥

५. महासती सीता की सज्झाय

(तर्ज - वोल-वोल आदीश्वर व्हाला)

सुनलो सुनलो रे, थे सती सीता की वात या साँची रे,
शील से राची रे ॥स्थायी॥

मिथिला की थी राजकुमारी, दाशरथी को विवाही रे।
सतियाँ होती आर्य नारियाँ, पतिव्रता सदा ही रे, शील ....॥१॥

राज्याभिषेक रह गया राम का, कैकयी हठ वश भाई रे।
वर्ष चतुर्दश वन मे रहना, पित्राज्ञा सुनाई रे, शील .....॥२॥

भ्रातृ भक्त लक्ष्मण थे सग मे, सती सीता सन्नारी रे।
वना त्रिवेणी सगम अनुपम, पावनकारी रे, शील .....॥३॥

पति सग वन प्रवास करने, सीता वन मे जाती रे।
पति पद का अनुसरण करे वह, सती कहलाती रे, शील ....॥४॥

वन वन विचरण करती सहती कष्ट अनेको भारी रे।
वर्ष त्रयोदश बीत गये यों, सुनो नर नारी रे शील ॥५॥

वर्ष चौदहवें में तीनो ही पंचवटी मे आवे रे।
सन्यासी बन रावण सीता हर ले जावे रे शील ॥६॥

अशोक वाटिका में सीता जी तरू तल बैठी रहती रे।
प्रतिहारिणी राक्षसियाँ वहाँ, पहरा देती रे, शील ॥७॥

रावण आता विनती करता पटरानी बन जाओ रे।
वनवासी के सग भटकती क्यों दुख पाओ रे शील ॥८॥

सती देखे नहीं रावण सम्मुख, रखती नीची दृष्टि रे।
सर्व विश्व में सतियो की यो होती सृष्टि रे, शील ॥९॥

हरण किया था सीता का पर, बलात्कार का त्यागी रे।
रावण भी भावी तीर्थंकर, है बडभागी रे शील ॥१०॥

सती महिला के मनमंदिर में पर-नर को नहीं स्थान रे।
शील रत्न की रक्षा करने, देखी तजती प्राण रे, शील ॥११॥

राम रावण का युद्ध हुआ तब, रावण मृत्यु पाया रे।
सीता को ले रामचन्द्र जी अयोध्या आया रे, शील ॥१२॥

अग्नि परीक्षा हुई सीता की अग्नि कुण्ड बना सरवर रे।
स्वर्ण सिंहासन बैठी सीता नमते सुरवर रे शील ॥१३॥

जय-जयकार सती का बोले सब ही शीश झुकावे रे।
धन धन सीता सती शिरोमणि जग यश गावे रेशील ॥१४॥

सीता राम का नाम सर्वदा जपते भारतवासी रे।
देखो सीता का पद पहले, गौरव प्रकाशी रे शील ॥१५॥

सतियों से नारी जाति की गरिमा जग में छायी रे।
ज्ञान ज्योति में 'सज्जन' ने यह महिमा गायी रे शील ॥१६॥

६. महासती मृगावती की सज्झाय

दोहा

श्री ऋषभादि जिनेन्द्र नमि, पुण्डरीकादि गणेश।
ब्राह्मी आदि पोडश सती, नमते जिन्हे सुरेश ॥१॥

मृगावती स्वबुद्धि से, रखे शील ओर राज।
सयम लेकर महासती, साधे आतम काज ॥२॥

ढाल - १

(तर्ज - नगरी नगरी द्वारे द्वारे)

आओ आओ सतियो का हम, शुभ मन से गुण गान करे।
शीलवान् नरनारी जग मे, स्वपर का कल्याण करे ॥स्थायी॥

वैशालीपति चेटक राजा, महावीर के श्रावक थे, महा॰
महा श्रद्धालु द्वादश व्रत धर, जिन शासन के प्रभावक थे, जिन,
वर्द्धमान महावीर के मामा, धीर वीर वर महिमा धरे, आओ ...॥१॥

पद्मावती मृगावती आदि, सप्त पुत्रियाँ शीलवती, सप्त,॰
कहा वीर ने पर्षद् सम्मुख, सातों ही है सहासती, सातो,
कौशाम्वी पति शतानीक को, मृगावती पति रूप वरे, आओ .. ॥२॥

दैविक वर धर कलाकार इक, शतानीक के यहाँ आया, शता,॰
प्रसन्न हो नरपति ने उससे, चित्रभवन इक बनवाया, चित्र,
दर्शक जन देखे चित्रो को, मुक्त कण्ठ से कीर्ति करे, आओ .. ॥३॥

मृगावती की प्रतिच्छवि भी, राजा ने इक बनवायी, राजा,
चित्रकार ने जघा पर, तिल की अनुकृति भी दिखलायी, तिली
देख कुपित नृप चित्रकार को, दक्षिण हस्त विहीन करे, आओ .... ॥४॥

गया अवन्तिनाथ निकट वहाँ, मृगावती का चित्र रखा, मृगा,
प्रद्योतन कामुक व्यभिचारी, मानो रावण का ही सखा, मानो,
भेजा दूत मृगावती भेजो, नीच परस्त्री वान्च्छा धरे, आओ .. ॥५॥

शतानीक सुन कोपाविष्ट कहे कैसा नीच अधम प्राणी कैसा
परनारी की इच्छा करता भूला नीति और जिनवाणी भूला
निर्भर्त्सना की दूत की वह जा, स्व नृपति के कान भरे, आओ ॥६॥

आया चढ कौशाम्वी पर वह चारो ओर नगर घेरा चारो
मृगावती को भेजो शीघ्र, आदेश यही है बस मेरा आदेश
'सज्जन' रुग्ण थे शतानीक नृप उदयन किशोर वय धरे, ओ ॥७॥

ढाल - २

(तर्ज - आखिर नार परायी है–(गाली मारवाडी)
अथवा–मन मूरख क्यो भरमाया है)

श्री मृगावती सती नारी है अब संकट आया भारी है ॥स्थायी॥
असाध्य रोग पीडित थे राजा, अब आ गया लेने यम राजा
हल चल हो रही भारी है संकट ॥१॥

धर्म संबल जो साथ बंधाती धर्म पत्नी तो वह कहलाती
रानी पति-मृत्यु सुधारी है सकट ॥२॥

अवन्ति पति को यों कहलावे शरणागत हम क्रोध न लावे
कूटनीति दिल धारी है सकट ॥३॥

पुत्र है वालक रक्षक हो तुम राज्य को सुदृढ सवल करो तुम
इतनी विनती हमारी है संकट ॥४॥

प्रद्योतन ने प्रार्थना मानी वत्स राज्य उदयन का जानी
अव मृगावती तो हमारी है संकट ॥५॥

प्राकार पुन दृढतम बनवाया सैन्य चतुर्विध सज्ज कराया
राज्य व्यवस्था सुधारी है संकट ॥६॥

अन्तर्यामी वीर विभु है समवसरे महावीर प्रभु है
धर्म रक्षक पद धारी है संकट ॥७॥

मृगावती प्रभु दर्शन जावे, पुत्र प्रद्योतन अंक बिठावे,
लू दीक्षा यह विचारी है, संकट . ॥८॥

प्रद्योतन प्रभु निकट क्या बोले, लज्जित हो स्व हृदय टटोले,
धिग्धिग् मम मति मारी है, संकट ... ॥९॥

दीक्षा लेकर मृगावती सती, चन्दना शिष्या अति विनयवती,
संकट मिट गया भारी है, संकट . .. ॥१०॥

द्वादश परिषद् समवसरण में, सभी तन्मय प्रभु वचन श्रवण में,
पीते वचन सुधावारी है, संकट .. ॥११॥

विमान सह सूर्य चन्द्र थे आये, सन्ध्या हो गयी जान न पाये,
बैठे सभी नर नारी है, संकट . ॥१२॥

चन्दनबाला आदि आर्या गण उठ गयी सन्ध्या पूर्व ही तत्क्षण,
निज आवास पधारी है, संकट .... ॥१३॥

मृगावती प्रभु वाणी लीना, बैठी रही भक्ति रस पीना,
गये रवि शशि तम भारी है, संकट . ॥१४॥

श्रमणी न देख के सती घबरायी, उठकर द्रुत उपाश्रय आई,
कहे 'सज्जन' भूल की भारी है, संकट ..... ॥१५॥

दोहा

सूर्य चन्द्र आलोक मे, पूज्ये! रहा न भान।
क्षमा करो अपराध यह, अब रहूँगी सावधान ॥१॥

ढाल - ३

(तर्ज - केशरियो कामणगारो)

मृगावती मन चिन्ता करती, मै कैसी अज्ञान रही यों,
मन दुःख धरती रे, सती चित्त चिन्तन करती ॥स्थायी॥

हा। हा। मै हूँ कैसी अभागी, उपालम्भ की बन गयी भागी,
अज्ञानी हो ज्ञान का अभिमान मैं करती रे सती ॥१॥

ओ आत्मन्। तू अनंत ज्ञानी अनत दर्शन शक्ति विधानी
जड संग से जडता बढी सब शक्ति हरती रे सती ॥२॥

गुरु-वर्या पट्टे पर सोती मृगावती स्व पाप को धोती
बाह्य भाव तज स्वभाव में सती सतत विचरती रे सती ॥३॥

तन यह जड मैं चेतन सत्ता स्वरुप भोक्ता स्वभाव कर्त्ता
अष्ट कर्म से पृथक रूप मैं ध्यान यों धरती रे सती ॥४॥

क्षपक श्रेणी में आत्मशुद्धि कर क्षण में केवलज्ञान ज्योति धर
बन सर्वज्ञ मृगावती गुरू सेवा करती रे सती ॥५॥

चन्दना कर था नीचे लटकता समीप आ रहा सर्प सरकता
जान ज्ञान से मृगावती कर ऊपर धरती रे सती ॥६॥

जागृत चन्दना पूछे मेरा हाथ उठाया क्यों है अधेरा
भगवति। नाग था आ रहा कैसे नहीं धरती रे सती ॥७॥

घोर तमिस्त्रा निशा समय में कैसे दिख गया हूँ विस्मय में
पूज्ये। जाना ज्ञान से क्यों विस्मय करती रे सती ॥८॥

प्रतिपाती या अप्रतिपाती बात समझ में कुछ नहीं आती
अप्रतिपाती कहे मृगावती विनय आचरती रे सती ॥९॥

सर्वज्ञा नहीं जाना मैने हा। आशातना करदी मैने
मिथ्यादुष्कृत देती चन्दना केवल वरती रे, सती ॥१०॥

धन्य धन्य वे मुक्तिगामिनि गुरू शिष्या द्वय भाग्यशालिनी
ज्ञान ज्योति में प्रात नित्य 'सज्जनश्री' स्मरती रे सती ॥११॥

७. मनवा वावरा

(तर्ज - पञ्छी! वावरा)

मनवा! वावरा! क्यो धन पर ललचाये,
क्यों धन पर ललचाये - मनवा — ॥स्थायी॥

स्वर्ण रजत कलधौत के पर्वत, मणिरत्न राशि सुहाये।
देख देख अपनी सव सम्पत्ति, फूला नहीं समाये, फूला ... ॥१॥

ऐश्वर्य समृद्धि वढाने, शतश कष्ट उठाये।
निशा दिवस में प्रतिक्षण तेरा, धन चिन्ता मे जाये, धन .. ॥२॥

सुख दुख मानापमान क्षुधा तृड्, निद्रा को ही भूलाये।
कृत्याकृत्य का भान न रहता, धन ग्रह जव लग जाये . . ॥३॥

इसकी रक्षा के चिन्तन मे, सुख की नींद न आये।
व्रत नियम कर्त्तव्य भूलकर, केवल धन को ध्याये, केवल .... ॥४॥

देव दुर्लभ मानव तन की, महिमा समझ न पाये।
मात्र धन चिन्ता मे रहकर, अन्त समय पछताये, अन्त .... ॥५॥

कोटिपति और लक्षपति भी, सुख से नहीं रह पाये।
यह चचल औ चपला लक्ष्मी, नगरवधू कहलाये, नगर .... ॥६॥

भोगान्तराय उदय हो जिसके, वह भोग नहीं पाये।
पुण्य क्षय हो जाये जिसका, वह रक बन जाये, वह .... ॥७॥

पापानुवन्धी पुण्य की लक्ष्मी, पा नर पाप कमाये।
विषय कषायासक्त जीव के, धर्म उदय नहीं आये, धर्म .. ॥८॥

पुण्यवान् नर जन सेवा और, पुण्यार्जन कर पाये।
धन्य धन्य वे 'सज्जन' नर है, सर्व त्यागी वन जाये सर्व .... ॥९॥

८ मन। क्यो जड मे भरमाये

(तर्ज - मेरा मन दर्पण कहलाये)

मन। क्यो जड में भरमाये
जिसको मानता है तू अपना वे सव यहीं रह जाये ॥स्थायी॥
अस्थियों का कंकाल यह तन ऊपर चाम चढाया।
उतर जाय जिस अंग से चमडी घृणा से मुह को फिराया।
वृद्धावस्था के आने पर विकृत सब बन जाये, मन ॥१॥
चन्द्रानन भी वनता अन्त में, तेज हीन मुरझाता।
दन्तविहीन जब मुख हो जाता, इष्ट न खाया जाता।
गन्ध शक्ति गई और नयन की दृष्टि कम हो जाये, मन ॥२॥
हाय कापते पाँव भी ये जब नहीं चलने पाते
चंक्रमण के सारे अरमाँ मन में ही रह जाते,
यौवन में जो धर्म करे नहीं वह पीछे पछताये मन ॥३॥
स्वस्थ और सशक्त है जब तक तेरी नश्वर काया
आत्मा का भी कार्य तूं करले इसको कैसे भुलाया
इसका क्या विश्वास है यह तन व्याधि-सदन कहलाये मन ॥४॥
अमूल्य मानव तन उत्तम कुल महा पुण्य से पाया
स्वर्णावसर मत व्यर्थ खो बन्धु। श्वास आया नहीं आया
ज्ञान-ज्योति में देख ले स्व को 'सज्जन' यों समझाये, मन ॥५॥

९ कोई नही हे तेरा

(तर्ज - पार्श्व चिन्तामणि मेरी)

कोई नही है तेरा हाँ तेरा क्यों करे वन्धु मेरा हाँ मेरा ॥स्थायी॥
आत्मा का तो रूप ज्ञानमय अजर अमर पद तेरा-हाँ तेरा ॥१॥
पुद्‌गल जड तू चेतन राजा जड ने तुझको घेरा-हाँ घेरा ॥२॥
जड सम्बन्ध से स्व को भूला फिरे चतुर्गति फेरा-हाँ फेरा ॥३॥
क्रोध मान माया व लोभ के वश हो किया यहाँ डेरा-हाँ डेरा ॥४॥
कर्म भार शिर ऊपर भारी कैसे कटे पथ मेरा-हाँ मेरा ॥५॥
ज्ञान की ज्योति घट मे जगे जब 'सज्जन' होगा सवेरा-सवेरा ॥६॥

श्री जिन स्तवन

आदिनाथ जिन स्तवन

(१)

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीये, जास सुगधी रे काय,
कल्पवृक्ष परे तास इन्द्राणी नयन जे, भृग परे लपटाय . ॥१॥

रोग उरग तुझ नवि नड़े अमृत जेह आस्वाद,
तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोई नवि करे जगमां तुम शु रे वाद . ॥२॥

वगर धोई तुझ निरमली काया कचन वान
नही प्रस्वेद लगार तारे तु तेहने जे धरे ताहरु ध्यान . ॥३॥

राग गयो तुझ मन थकी तेहमा चित्र न कोय
रुधिर आमिषथी राग गयो तुझ जन्म थी दूध सहोदर होय . ॥४॥

श्वासोश्वास कमल समो तुझ लोकोत्तर वात
देखे न आहार निहार चरम चक्षुधणी अेहवा तुझ अवदात ॥५॥

चार अतिशय मूलथी, ओगणीश देवना कीध
कर्म खप्याथी अगीयार चोत्रीश ईम अतिशयसमवायागे प्रसिद्ध .. ॥६॥

जिन उत्तम गुण गावता गुण आवे निज अग,
पद्म विजय कहे अेह समय प्रभु पालजो, जेम थाउ अक्षय अभग . ॥७॥

(२)

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे ओर न चाहुँ रे कंत,
रीझ्यो साहेब सग न परिहरे, भागे सादि अनत ... ॥१॥

प्रीत सगाई रे जगमा सहु करे रे प्रीत सगाई न कोय
प्रीत सगाई रे निरुपाधिक कही रे सोपाधिक धन खोय ॥२॥

कोई कत कारण काष्ठ भक्षण करे रे मिलशुं कत ने धाय
ऐ मेलो नवी कहिये सभवे रे मेलो ठाम न ठाय ऋषभ ॥३॥

कोई पति रजन अति घणुँ तप करे रे पति रजन तन ताप
ए पति रजन मै नवि चित्त धर्यु रजन धातु मिलाप ॥४॥

कोई कहे लीला रे अलख अलख तणी रे लख पुरे मन आश
दोष रहित ने लीला नवि घटे रे लीला दोष विलास-ऋषभ ॥५॥

चित प्रसन्ने रे पूजन फल कहूँयू रे पूजा अखडित अेह
कपट रहित थई आतम अरपणारे "आनन्दघन" पदरेह ॥६॥

(३)

माँसु मुंडे बोल बोल बोल आदेसर व्हाला
काई थारी मरजी रे मासु मुडे बोल ॥टेर॥

माँ मरु देवी वाट जोवतां इत–रे बधाई आई रे
आज ऋषभजी उतर्या बाग में सुण हरखाई रे ॥१॥

न्हाय धोय ने गज असवारी करी मरुदेवी माता रे,
जाय - बाग में नंदन नीरखी, पाई साता रे ॥२॥

राज छोडी ने नीकल्या रीषभजी आ लीला अद्‌भुति रे
चामर छत्र ने और सिंहासन मोहन मूर्ति रे ॥३॥

दिनभर बैठी बाट जोवती कद मारो रीषभो आवे रे,
"हती भरत ने आदीनाथ की खबरा लावो रे ॥४॥

किस्या देश मे गयो बालेसर तुझ बिना विनीता सूनी रे
बात कहो दिल खोल लालजी क्यू बन्या मुनि रे ॥५॥

रह्या मजामे छे सुखशाता, सूत्र किया दिल चाया रे
अव तो वोल आदिसर मासु कलपे काया रे .. ॥६॥

खैर हुई सो हो गई व्हाला, वात भली नहीं कीनी रे
गया पछे कागज नहि दीनो म्हारी खवर न लीनी रे .. ॥७॥

ओलभो मे देऊ कठा तक पाछो क्यू नहि वोले रे
दुःख जननीनो देख आदेसर हियडे तोले रे .. ॥८॥

अनित्य भावना भाई माता, निज आतम ने तारी रे,
केवल पामी मुगते सिधाव्या ज्याने वदना हमारी रे .. ॥९॥

मुक्ति का दरवाजा खोल्या मोरा देवी माता रे
काल असख्या रह्या उघाडा, जवू जड़ गया ताला रे . . ॥१०॥

साल वोहत्तर तीर्थ ओसिया, घेवर प्रभु गुण गाया रे
मूर्ति मनोहर प्रथम जिणदनी प्रणमु पाया रे ... ॥११॥

अभिनन्दन जिन स्तवन

अभिनदन जिन दरिसण तरसीये दरिसन दुर्लभ देव,
मत मत भेदे रे जोजई पुछीये सहु थापे अहमेव ... ॥१॥

सामन्ये करी दरिसण दोहीलु निर्णयि सकल विशेष
मदमे घेर्यो रे अधो कीम करे, रवि शशी रुप विलेख .... ॥२॥

हेतु विवादे हो चित्तधरी जोईअे अति दुर्गम नयवाद,
आगमवादे हो गुरुगम को नहि, अे सवलो विखवाद ..... ॥३॥

घाती डूगर आडा अति घणा, तुझ दरिसण जगनाथ
धीठाई करी मारग सचरु सेगु कोई न साथ ..... ॥४॥

दरिसण दरिसण रटतो जे फिरु तो रण रोझ समान,
जेहने पिपासा हो अमृतपाननी किम भांजे विषपान .... ॥५॥

तरस न आवे हो मरण जीवन तणो सीझे जो दरसण काज
दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी 'आनन्दघन' महाराज ॥६॥

सुमति जिन स्तवन

सुमतिनाथ गुणशुं मीलीजी वाधे मुझ मन प्रीत
तेलबिंदु जीम विस्तरेजी जलमांहि भली रीत
सोभागी जीनशु लाग्यों अविहड रग ॥१॥

सज्जनशु जे प्रीतडीजी छानी ते न रखाय
परिमल कस्तुरीतणो जी महीमाहे महे–काय ॥२॥

आंगनिये नवि मेरु ढंकाओ, छावडिये रवि तेज
अजलिमाँ जिम गगन माअे मुझ मनतिम प्रभु हेज ॥३॥

हुओ छिपे नहीं अधर अइण जिम खाता पान सुरग
पीवत भरभर प्रभु गुण प्याला तिम मुझ प्रेम अभंग ॥४॥

ढांकी ईंधु परालशुंजी न रहे लही विस्तार
वाचक 'यश' कहे प्रभु तणोजी तिम मुझ प्रेम प्रकार ॥५॥

पद्मप्रभ जिन स्तवन

पद्मप्रभु प्राण से प्यारा छोडावो कर्म की धारा
कर्मफंद तोडवा डोरी प्रभुजी से अर्ज है मोरी ॥१॥

लघुवय अेकथे जिया मुक्ति में वास तुम कीया
न जानी पीर ते मोरी प्रभु अब खेंच लो डोरी ॥२॥

विषय सुख मानीमो मन में गयो सब काल गफलत में
नारक दुख वेदना भारी नीकलवा ना रही बारी ॥३॥

परवश दीनता कीनी पाप की पोट शिर लीनी
भक्ति नही जाणी तुम केरी रह्यो निश दिन दुख घेरी ॥४॥

इसविध विनती तोरी, करु मै दोयकर जोडी
आतम आनद मुझ दीजो वीरनु काज सब्र कीजो . ॥५॥

सुविधि जिन स्तवन

सुविधि जिनेश्वर पाय नमीने, शुभ करणी अेम कीजे रे,
अति घणो उलट अग धरीने, प्रह उठी पूजीजे रे . ॥१॥

द्रव्यभाव शुचि भाव धरीने, हरखे देहरे जइये रे,
दह तिग पण अहिगम साचवता, अेकमना धुरी थइये रे . ॥२॥

कुसुम अक्षतवर वास सुगधि, धूप दीप मन साखी रे,
अग पूजा पण भेद सुणी इम, गुरुमुख आगम भाखी रे ... ॥३॥

अेहनु फल दोय भेद सुणीजे, अनतर ने परपर रे,
आणापालण चित्तप्रसन्ने, मुगति सुगति सुर मंदिर रे . . ॥४॥

फूल अक्षतवर धूप पइवो, गध नैवैद्य फल जलभरीरे,
अग अग्र पूजा मिली अडविधि, भावे भविक शुभ गति वरी रे ... ॥५॥

सत्तरभेद अेकवीश प्रकारे, अष्टोतर शत भेदे रे,
भाव पूजाबहु विध निरधारी, दोहग दुर्गति छेदे रे .. ॥६॥

तुरीय भेद पडिवत्ति पूजा, उपशम खीण सयोगी रे,
चउहा पूजा इम उत्तराझयणे, भाखी केवल भोगी रे .... ॥७॥

इम पूजा बहु भेद सुणीने, सुखदायक शुभकरणी रे,
भविक जीव करशे ते लेशे, आनन्दघन पद धरणी रे .. ॥८॥

विमल जिन स्तवन

दुख दोहग दूरे टल्या रे, सुख सपदशु भेट,
धींग धणी माथे कियो रे, कुण गजे नर खेट
विमलजिन दीठां लोयण आज, मारा सिध्या वांछित काज ... ॥१॥

चरण कमल कमला वसे रे, निरमल थिरपद देख
समल अथिर पद परिहरी रे पकज पामर पेख ॥२॥

मुझ मन तुझ पद पंकजे रे लीनो गुण मकरद
रंक गणे मदरधरा रे इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र ॥३॥

साहेव समरथ तुं धणी रे, पाम्यों परम उदार,
मनन विसरामी वालहो रे आतमचो आधार ॥४॥

दरिसण दीठे जिन तणु रे सशय न रहे वेध
दिनकर करभर पसरतां रे अधकार प्रति पेध ॥५॥

अमीयभरी मूरति रची रे उपमा न घटे कोय
शांत सुधारस झीलती रे निरखत तृप्ति न होय ॥६॥

एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव,
कृपाकरी मुझ दीजिये रे 'आनन्दघन' पद सेव ॥७॥

अनन्तनाथ जिन स्तवन

धार तरवारनी सोहली दोहली चौदमा जितवणी चरण सेवा।
धारपर नाचता देख वाजीगरा सेवना धार पर रहे न देवा ॥टेर॥

एक कहे सेवियै विविध किरिया करी फल अनेकान्त लोचन न देखे
फल अनेकान्त किरिया करी वापडा रडवडे चारगति मां अलेखे ॥१॥

गच्छना भेदवहु नयण निहालतां तत्वनी वात करता न लाजे
उदर भरणादिनिज काज करतां थकां मोह नडियाकलिकालराजे ॥२॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार झूठो कह्यो वचन सापेक्ष व्यवहार साचो
वचन निरपेक्षव्यवहार संसार फल सांभली आदरी कांई रांचो ॥३॥

देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो किम रहे ? केम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ?
शुद्ध श्रद्धा विणसर्व क्रिया करि छार पर लीपणो तेह जाणो ॥४॥

पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिस्यो धर्म नही कोई जग सूत्र सरिखो,
सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करी, तेहनु शुद्ध चारित्र परिखो . ॥५॥

अेह 'उपदेशनो सार सक्षेप थी, जे नरा चित्त मां नित्य ध्यावे
ते नरा दिव्य बहु काल सुख अनुभवी, नियत आनन्दघन राज पावे . . ॥६॥

धर्म जिन स्तवन

हांरे मारे धर्म जिणन्दशु लागी पूरण प्रीत जो
जीवडलो ललचाणो जिनजीनी ओलगे रे लो ॥स्थायी॥

हांरे मने थाशे कोईक समय प्रभु, सुप्रसन्न जो,
वातलडी माहरी रे सवि थाशे वगे रे लो . ॥१॥

हांरे कोई दुर्जन नो भभेर्यो माहरो नाथ जो,
ओलवशे नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो . ॥२॥

हांरे मारा स्वामी सरीखो कुण छे दुनिया माही जो
जइये रे जिम तेहने घर आशा करी रे लो . ॥३॥

हांरे जस सेवा सेती स्वारथनी नहि सिद्धि जो
ठाली रे शी करवी तेहनी गोठडी रे लो .. ॥४॥

हांरे कोई झूठ खाय ते मीठाई ने माटे जो
कोई रे परमारथ विण नही प्रीतडी रे लो . ॥५॥

हांरे प्रभु अतरजामी जीवन प्राण आधार जो
वायो रे नवि जाण्यो कलियुग वायरे लो ॥६॥

हांरे मारे लायक नायक भगत वत्सल भगवान जो,
वारु रे गुण केरो साहिब सायरु रे लो . ॥७॥

शान्ति जिन स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साचो सहिब शान्ति करण
इण काल मे हो जिनजी
तु मेरा मन मे तु मेरा दिल मे
ध्यान धरु पल पल में साहेब जी ॥१॥

भवमा भमता मे दरिशन पायो
आशा पूरो अेक पल मे हो जिनजी ॥२॥

निरमल ज्योत वदन पर सोहे,
निकस्यों ज्यू चद बादल में हो जिनजी ॥३॥

मेरो मन तुम साथे लीनो
मीन बसे ज्यु जल मे हो जिनजी ॥४॥

जिनरग कहे प्रभु शान्ति जिनेश्वर
दीठो जी देव सकल मे हो जिनजी ॥५॥

(२)

म्हारो मुजरो ल्योने राज साहिब शान्ति सलुणा
अचिराजी ना नंदन तोरे दर्शन हेते आव्यों
समकित रीझ करोने स्वामी भक्ति भेटणु लाव्यो ॥१॥

दुख भंजन छे विरुद्ध तुमारो अमने आशा तुमारी
तुमे निरागी थई ने छूटो शी गति होशे अमारी ॥२॥

कहेशे लोक न ताणी कहेणुं अेवडु स्वामी आगे
पण बालक जे बोली न जाणे तो केम व्हालो लागे ॥३॥

म्हारे तो तुं साहिब समरथ तो किम ओछु मानु,
चिन्तामणि जेणे गाठे बाध्यु तेहने काम किश्यानु ॥४॥

अध्यातम रवि ऊग्यो मुझ घट, मोह तिमिर हर्युं जुगते
विमलविजय वाचकनो सेवक, राम कहे शुभ भक्ते .. ॥५॥

श्री शान्तिनाथ जिन स्तवन

सुणो शान्ति जिणद सोभागी हु तो थयोछुं तम गुण रागी
तुमे निरागी भगवत, जोता किम मलसे तंत .. ॥१॥

हुँ तो क्रोध कषायनो भरियो, तु तो उपशम रसनो दरियो
हुँतो अज्ञाने आवरियो, तु तो केवल कमला वरियो .. ॥२॥

हु तो विषया रसनो आसी, ते तो विषया कीधी निराशी,
हुँ तो कर्मना भारे भरियो, तू तो प्रभु पार उतरियो .... ॥३॥

हुँ तो मोह तणे वश पडीयो, तु तो सबला मोहने नडीयो,
हुँ तो भव समुद्रमा खुतो, तु तो शिव मंदिरे पहोतो . ॥४॥

म्हारे जन्ममरणनो जोरो, ते तो तोड्यो तेहनो डोरो
म्हारो पास न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग . . ॥५॥

मने मायाअे मुक्यो पाशी, तु तो निरबधन अविनाशी,
हुँ तो समकित थी अधूरो, तु तो सकल पदारथे पूरो . . . ॥६॥

म्हारे छ तुंहि प्रभु अेक, त्हारे मुझ सरीखा अनेक
हुँ तो मनथी न मुकुमान, तू तो मान रहित भगवान . ॥७॥

म्हारु कीधु ते शु थाय, तु तो रंक ने करे राय,
अेक करो मुझ महेरबानी, म्हारो मुजरो लेजो मानी .. . ॥८॥

एक बार जो नजरे निरखो, तो करो मुझने तुम सरिखो
जो सेवक तुम सरिखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे ..... ॥९॥

भवोभव तुम चरणों नी सेवा, हुँ तो मागु छु देवाधिदेवा
सामु जुओने सेवक जाणी, अेवी उदयरतनी वाणी .. ॥१०॥

(२)

भविभावे देरासर आवो जिणदवर जय बोलो,
पछी पूजन करी शुभ भावे, हृदय पट खो—लोने ॥टेर॥

शिवपुर जिनथी मागजो भागी भवनो अत,
लाख चौरासी वारवा, क्यारे थइशु अमे प्रभुसत ॥१॥

मोंघी मानव जिन्दगी मोघो प्रभुनो जाप
जपी चित्तथी दूर करो, तमे कोटी जनमना पाप रे ॥२॥

तुं छे मारो साहिबो ने हुँ छू तारो दास,
दीनानाथ मुझ पालीने प्रभु आपो शिवपुरवास

छाणी गामनो राजीयो नामे शान्ति जिणन्द
आत्म कमलमां ध्यावतां शुभ मले लब्धिनो वृन्द ॥३॥

श्री कुन्थु जिन स्तवन

मनडुं किम ही न बाजे हो कुन्थुजिन मनडुं किम ही न बाजे,
जिम जिम जतन करीने राखुं तिम तिम अलगुं भाजे हो कुन्थु ॥टेर॥

रजनी वासर वसति उज्जड गयण पायले जाय
सांप खाय ने मुखडु थोथुं अेह उखाणो न्याय हो ॥१॥

मुक्ति तणां अभिलाषी तपिया ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे
वैरीडु काई अेहवुं चिते नाखे अवले पासे हो ॥२॥

आगम आगमधरने हाथे नावे किण विध आकू
किहां कणे जो हठ करी हटकुं तो व्याल तणी परे वाकुंहो ॥३॥

जोठग कहुं तो ठगतोन देखुं साहुकार पण नाँही
सर्व मांहे ने सहुथी अलगु ए अचरिज मनमाँही हो ॥४॥

जे जे कहु ते कान न धारे, आप मते रहे कालो,
सुरनर पंडितजन समझावे, समझे न मारो सालो हो . . ॥५॥

मै जाण्यू अ लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले,
बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले हो . . ॥६॥

मन साध्यु तेणे सघलु साध्यो, अेह वात नहीं खोटी,
अेम कहे साध्युं ते नवि मानु एक ही वात छे मोटी हो

मनडु दुराराध्य ते वश आण्यु, ते आगमथी मति आणु
'आनन्दघन' प्रभु माहरु आणो तो, साचु करी जाणु हो मनडु . . ॥७॥

श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन

(१)

जिन राजा ताजा मल्लि विराजे, भोयणी गाम मे,
देश देश के जात्रु आवे, पूजा सरस रचावे,
मल्लि जिनेश्वर नाथ सिमरके, मन वांछित फल पावेजी . ॥१॥

चतुर वरण के नर नारी मिल, मंगल गीत करावे,
जय जयकार पंच ध्वनि वाजे, शिर पर छत्र धरावेजी . ॥२॥

हिंसक जन हिंसा तजी पूजे, चरणे शीश नमावे,
तु ब्रह्म तु हरि शिव शंकर, अवर देव नवि भावेजी . . ॥३॥

करुणा रस भरे नयन कटोरे, अमृत रस वरसावे,
वदन चंद्र चकोर ज्यु निरखी, तन मन अति उलसावेजी .... ॥४॥

आतमराजा त्रिभुवन ताजा, चिदानंद मन भावे,
मल्लि जिनेश्वर मनहर स्वामी, तेरा दरश सुहावेजी . . ॥५॥

(२)

सेवक किम अवगणिये हो मल्लिजिन अे अव शोभा सारी
अवर जेहने आदर अति दीये
तेहने मूल निवारी हो मल्लि ॥१॥

ज्ञान स्वरूप अनादि तुमारुं ते लीधुं तमे ताणी
जुओ अज्ञान दशा रीसावी जाता काण न आणी हो मल्लि ॥२॥

निद्रा सुपन जागर उजागरता तुरीय अवस्था भावी
निद्रा सुपन दशा रीसाणी जाणी न नाथ मनावी हो ॥३॥

समकित साथे सगाई कीधी स्वपरिवार शुगाढी
मिथ्या मति अपराधन जाणी घरथी बाहिर काढी हो ॥४॥

हास्य अरति रति शोक दुगछा भय पामर करसाली
नोकषाय श्रेणीराज चढता श्वानतणी गति झाली हो ॥५॥

रागद्वेष अविरतिनी परिणती ए चरण मोहना योद्धा
वीतराग परिणति परिणमतां उठी नाठा बोधा हो ॥६॥

वेदोदय कामा परिणामा, काम्यकर सहु त्यागी
नि कामी करुणारस सागर अनंत चतुष्कपद पागी हो ॥७॥

दान विघन वारी सहुजनने अभयदान पद दाता
लाभ विघन जग विघन निवारक परम लाभ रस माता हो ॥८॥

वीर्य विघन पंडितवीर्ये हणी पूरण पदवी योगी
भोगापभोग होय विघन निवारी पूरण भोग सुभोगी हो ॥९॥

अेम अढार दुपण वर्जित तनु मुनिजन वृन्दे गाया
अविरति रुपक दोप निरुपण निर्दूषण मन भाया हो ॥१०॥

इणविध परखी मन विसरामी, जिनवर गुण जे गावे,
दीनवन्धुनी मेहर नजरथी, आनन्दघन पद पावे हो ॥११॥

नेमनाथ का स्तवन

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो, पूरण जन आश,
पूरण दृष्टि निहालिये, चित्त धरिये हो अमची अरदास .. ॥१॥

सर्व देश घाती सहु, अघाती हो करी घात दयाल
वास कीयो शिव मंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो जगजाल . ॥२॥

जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार,
तात कहो मोहे तारता, किम कीनी, हो ईण अवसर वार ... ॥३॥

मोह महामद छाक थी हू छकीयो हो नहिं शुद्धि लगार,
उचित सही इण अवसरे, सेवकनी हो करवी सभाल . .. ॥४॥

मोह गये जो तारशे तीण वेला हो कहा तुम उपगार,
सुखण वेला स्वजन घणा, दु ख वेला हो विरला ससार ॥५॥

पण तुम दरिशन योग थी, थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश
अनुभवं अभ्यासी करे, दु:ख दायी हो सहुकर्म विनाश .... ॥६॥

कर्म कलक निवारीने, निजरुपे हो रमे रमता राम,
लहत अपुरव भाव थी, इण रीते हो तुम पद विशराम ... ॥७॥

त्रिकरण योगे विनवु, सुखदायी हो शिवा देवीनानद
चिदानद मनमे सदा, तुमे आपो हो प्रभु नाण दिणद .... ॥८॥

शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तवन

नित्य समरु साहिब सयणा, नाम सुणता शीतल श्रवणा,
जिनदर्शने विकसे नयणा, गुण गाता उलसे वयणा रे
शंखेश्वर साहेब साचो, बीजानो आशरो काचो रे ... ॥१॥

द्रव्यथी देव दानव पूजे गुण शान्त रुचिपणु वीजे
अरिहापद पज्जव छाजे मुद्रा पद्मासन राजे रे ॥२॥

संवेगे तजी घरासो प्रभु पार्श्वना गणधर थासो
तव मुक्तिपुरीमां जाशो गुनी लोक मां वयणे गवासो रे ॥३॥

अेम दामोदर जिनवाणी, आषाढी श्रावके जाणी
जिनवंदी निजघर आवे प्रभु पार्श्व नी प्रतिमा भरावे रे ॥४॥

त्रणकाल ते धूप उखेवे उपकारी श्री जिन सेवे,
पछी तेह वैमानिक थावे ते प्रतिमा तिहां लावेरे ॥५॥

घणां काल पूजी वहुमाने वली सूरज चन्द्रं विमाने
नाग लोकनां कष्ट निवार्यां ज्यारे पार्श्व प्रभुजी पधार्यां रे ॥६॥

यदु सैन्य रह्यो रणघेरी जीत्या नवि जाये वैरी
जरासंघे जरा तव मेली हरिवल विना सघले फैलीरे ॥७॥

नेमीश्वर चोकी विशाली अठ्ठम तप करे वनमाली
त्रुठी पद्मावती बाली आपे प्रतिमा झाक झमाली रे ॥८॥

शंखपुरी सहुने जगावे शंखेश्वर गाव वसावे
मन्दिरमां प्राण पधरावे शंखेश्वर नाम धरावेरे ॥१०॥

रहे जे जिनराज हजुरे सेवक मनवांछित पूरे
अे प्रभूजी ने भेटण काजे शेठ मोती भाई राजे रे ॥११॥

नाना माणेक केरा नंद संघवी प्रेमचंद वीरचंद
राजनगरथी संघ चलावे गामोगामना संघ मिलावे रे ॥१२॥

अठारे अठ्ठोतर वरसे, फागण वदी तेरस दिवसे
जिन वंदी आनन्द पावे शुभवीर वचन रस गावे रे ॥१३॥

(२)

पास शखेश्वरा सार कर सेवका, देव ! का अेवडी वार लागे,
कोडी कर जोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान भागे .. ॥१॥

प्रगट थाया पासजी, मेली पडदो परो मोड असुराण ने आप छोडो
मुजमहिराण मजूषमा पेसीने खलकना नाथ जी वध्र खोलो .... ॥२॥

जगतमा देव! जगदीश तु जागतो, अेम शुं आज जिनराज उघे ?
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीये दान दे जेह जगकाल मुघे ..... ॥३॥

भीड जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रिकमे तुझ सभार्यो
प्रगटाया तलथी पलक माते प्रभु भक्त जन तेहनोभय निवार्यो .... ॥४॥

आदि अनादि अरिहत तु अेक छे, दीनदयाल छे कोण दूजे।
उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पास जी पामी भयभजनो अेहपूजे ..... ॥५॥

स्तवन

कोयल टहुकी रही मधुवन मे, पार्श्व सावरिया वसो मेरे मन मे,

काशी देश वनारसी नगरी, जन्म लियो प्रभु क्षत्रीय कुल मे . ..॥१॥

बालपणा मा प्रभु अद्‌भुत ज्ञानी, कमठ को मान हर्यो अेक पल मे ॥२॥

नाग निकाला काष्ठ चीराकर, नागकु कियो सुरपति अेक छीन मे ॥३॥

सयम लई प्रभु विचरवा लाग्या, सयम भीज गये अेक रंग मे ॥४॥

सम्मेतशिखर प्रभु मोक्षे सिधाव्या, पार्श्व जी की महिमा त्रण भुवन मे ॥५॥

उदयरत्न की अेही अरज है, दिल अटको तोरा चरण कमल मे ॥६॥

चौमासी पारणा स्तवन

चउमासी पारणु आवे करी विनति निज घर जावे
प्रिया पुत्र ने वात जणावे पटकुल जरी पथरावे रे
महावीर प्रभु घेर आवे जीरण सेठजी भावना भावे रे ॥१॥

उभी शेरीये जल छटकावे जाइ केतकी फूल विछावे
निज घर तोरण बधावे, मेवा मिठाई थाल भरावे रे ॥२॥

अरिहाने दानज दीजे, देता जे देखीने रीझे
षट् मासी रोग हरीजे सीजे दायक भव तीजे रे ॥३॥

ते जिनवर सनमुख जाउं मुझ मंदिरअे पधरावु
पारणु भली भाते करावु जुगते जिनपूजा रचावु रे ॥४॥

पछी प्रभूजी ने बोलावा जईशुं कर जोडी ने सनमुख रहीशु
नमी वंदी पावन थइशु विरति अति रंगे वहीशुं रे ॥५॥

दया दान क्षमा शील धरशुं उपदेश सज्जन ने करशु
सत्य ज्ञानदशा अनुसरशुं अनुकम्पा लक्षण वरशुं रे ॥६॥

अेम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारे चढता
श्रावकनी सीमें ठंरता, देव दुन्दुभि नाद सुणंता रे ॥७॥

करी आयु पुरण शुभ भावे सुरलोक अच्युते जावे
शातावेदनी सुख ते पावे शुभवीर वचन रस गावे ॥८॥

महावीर जिन स्तवन

तार हो तार प्रभु मुझ सेवक भणी
जगतमां अेटलु सुजश लीजे
दास अवगुण भर्यो जाणी पोता तणो
दयानिधि दीन पर दाय कीजे ॥१॥

राग द्वेषे भर्यो मोह वैरी नजड्यो
लोकनी रीतिमा घणुअे रातो,
क्रोधवश धमधम्यों शुद्ध गुण नवि रम्यो
भम्यो भवमाही हु विषय मातो .. ॥२॥

आदर्यु आचरण लोक उपचार थी
शास्त्र अभ्यास पण कौंई न कीधो
शुद्ध श्रद्वान वली आत्म अवलबन विनु
तेहवो कार्य तेणे को न सीधो ॥३॥

स्वामी दरिसण समो निमित्त लही निर्मलो
जे उपादन अे शुचि न थाशे,
दोष को वस्तुनो अहवा उद्यम तणो,
स्वामी सेवा सही निकट लाशे . ॥४॥

स्वामी गुण ओलखी स्वामिने जे भजे
दरिसण शुद्धता तेह पामे,
ज्ञान चरित्र तपवीर्य उल्लास थी,
कर्म जीपी वसे मुक्ति धामें, ... ॥५॥

जगतवत्सल महावीर जिनवर सुणी,
चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यों
तारजो बापजी विरूद्ध निज राखवा,
दासनी सेवना रखे जोशो ... ॥६॥

विनति ए मानजो शक्ति मुझ आपजो,
भाव स्याद् वादता शुद्ध भासे,
साधी साधक दशा सिद्धता अनुभवी,
"देवचन्द्र" विमल प्रभुता प्रकाशे. . ॥७॥

स्तवन

गिरूआरे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिन राया रे,
सुणता श्रवणे अमी झरे, म्हारी निर्मल काया रे, ... ॥१॥

तुम गुण गण गंगाजल ले, हु झीलीने निर्मल थाउ रे,
अवर न घंघो आदरुं निशदिन तोरा गुण गाऊं रे, ॥२॥

झील्या जे गंगाजल ले ते छिल्लर जल नवि पेसेंरे,
जे मालती फूले मोहिया, ते बावल जई नवि बेसेंरे ॥३॥

अेम अमे तुमगुण गोठशु रंगे राच्याने वली माच्यारे,
ते केम? परसुर आदरे? जे पर नारी वश राच्यारे ॥४॥

तु गति तु मति आशरो, तु आलंबन प्यारो रे
वाचक यश कहे माहरे, तु जीव जीवन आधारो रे, ॥५॥

ज्ञान पचमी का स्तवन

पंचमी तप तमे करो रे प्राणी, जेम होय निर्मल ज्ञान रे
पहेलुं ज्ञान ने पछी किरिया नहि कोई ज्ञान समान रे ॥१॥

नंदी सुत्रमां ज्ञान बखाण्युं ज्ञाननां पांच प्रकार रे,
मति श्रुत अवधि ने मनपर्यव केवल अेक उदार रे ॥२॥

मति अट्ठावीस श्रुत चउदह बीश अवधि छ असंख्य प्रकार रे,
दोय भेदे मन पर्यव दाख्युं केवल एक उदार रे ॥३॥

सूर्य चन्द्रग्रह नक्षत्र तारा, अेकथी एक अपार रे
केवल ज्ञान समो नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥४॥

पारसनाथ पसाय करीने पूरजो अमारी उमेद रे
समय सुन्दर कहे हुँ पण पामु ज्ञाननो पांचमो भेद रे, ॥५॥

सीमधर जिन स्तवन

मनडु ते माहरू मोकले मारा वालाजी रे
शशधर साथे संदेश जईने कहेजो मारा वालाजी रे ॥टेर॥

भरतना भक्त ने तार मारा, अेक वार आवोने आदेश ॥जई॥ . .॥१॥
प्रभुजी वसे पुष्कलावती मारा, महाविदेह क्षेत्र मझार . ॥२॥
पुरी राजे पुंडरिगिणी मारा, जिहाँ प्रभुनो अवतार .॥३॥
श्री सीमधर साहिबा मारा, व विचरता वीतराग . ॥४॥
पडिवोहे वहु प्राणी ने मारा, तेहनो पामे कुण नाग .॥५॥
मन जाणे उडी मिलु मारा, पण पोताने नही पान्व . ॥६॥
भगवत तुम जोवा भाणी मारा, अल जो घरे छे वे आन्व ॥७॥
दुर्गम मोटा डूँगरा मारा, नदी नालानो नहीं पार .. ॥८॥
घाटीनी आटी घणी मारा, अटवी पत्र अपार . ॥९॥
कोडी सौनैया काशी दु मारा, करनारा नही कोई ॥१०॥
कागलियो केम मोकलु मारा, होश तो नित्य नवली होय .॥११॥
लखु जे जे लेखमा मारा लाखो गमे अभिलाप . ॥१२॥
ते ल्हेजामा तमे लहो मारा, जगमा तुमे छो जाण . ॥१४॥
जाण आगलशु जणाविये मारा; आखर अमे अजाण ..॥१५॥
"वाचकउदयनी" विनती मारा, शशधर कहयोरे सदेश . ॥१६॥
मानी लीजो 'वन्दना' मारा, वसता दूर विदेश . ॥१७॥

सीमन्धर जिन स्तवन

धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहेजी, धन्य पुडरीगिणी गाम,
धन्य तिहाँना मानवीजी, नित्य उठी करू रे प्रणाम .॥टेर॥

सीमन्धर स्वामी कहीअे रे हुँ महाविदेह आवीश,
जयवन्ता जिनवर। कहीअे रे हूँ तमने वांदीश .॥ १ ॥

चादलिया! सदेशडोजी, कहेजे सीमधर स्वाम,
भरत क्षेत्रना मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥सी. ॥२॥

समवसरण देवे रच्यु तिहा, चौसठ इन्द्र नरेश,
सोनातणे सिहासन वेठा, चामर छत्र धरेश, . .॥ ३ ॥

इन्द्राणी काढे गहुलीजी मोतीना चौक पुरेश
लली लली लीये लूछाणांजी जिनवर दिये उपदेश ॥४॥

अेहवें समे मै साभल्युं जी हवे करवा पच्चकूखाण
पोथी ठवणी तिहा नहि कणे जी अमृतवाणी वखाण ॥५॥

राय ने व्हाला घोडलाजी वेपारी ने व्हाला छे दाम
अमने वाला सीमधर स्वामी जेम सीता ने श्रीराम ॥६॥

नहीं मागु प्रभु राजऋद्धि जी नहीं मांगु ग्रथ भडार
हु मागु प्रभु अेटलूजी तुम पासे अवतार ॥७॥

दैवें न दीधी पाखडी जी कैम करी आंवु हजूर?
मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर ॥८॥

"समयसुन्दरनी" विनती जी मानजो बारबार
बे कर जोडी विनवुजी विनतडी अवधार ॥९॥

श्री सिद्धाचलजी का स्तवन

जावा नवाणुं करीये विमलगिरि जात्रा नवाणु करीये
पुरव नवाणुं वार शेत्रुंजागिरि, ऋषभजिनन्द समोसरीये ॥१॥
कोडी साहस भव पातक त्रुटे शत्रुजय सामो डग भरीये ॥२॥
सात छट्ठ दोय अट्ठम तपस्या करी चडीये गिरिवरीये ॥३॥
पुंडरी पद जपीने मन हरखे अध्यवसाय शुभ धरीये ॥४॥
पापी अभव्य तो नजरे न देखे हिंसक पण उद्धरीये ॥५॥
भूमि संथारो ने नारी तणो संग दूर थकी परिहरीये ॥६॥
सचित परिहारि ने एकल आहारी गुरु साथे पद चरीये ॥७॥
पडिक्कमणां दोय विधिशु करीये पाप पडल विखरीये ॥८॥
कलिकाले अे तीरथ 'मोटु' प्रवहण जिम भव दरीये ॥९॥
उतम अे गिरिर सेवता पद्म कहे भव तरीये ॥१०॥

सामान्य जिन स्तवन

जिणदा प्यारा मुणिदा प्यारा, देखोरे जिणदा भगवान,
देखो रे जिनन्दा प्यारा, मुणिंदा प्यारा ॥१॥

सुन्दर रूप स्वरुप विराजे, स्वरुप विराजे,
जग नायक भगवान देखो रे ..॥२॥

दरश फरश निरख्यो जिनजी को नि
दायक चतुर सुजाण देखो रे ...॥३॥

शोक सताप मिट्यो अब मेरो, . नि
पायो अविचल भाण .॥४॥

सफल भई मेरी आयुकी घटीया .आयु
सफल भये नयन प्राण ॥५॥

दरिसण देख मिट्यो दुख मेरो मिट्यो
"आनन्दघन" अवतार देखो रे, जिणन्दा प्यारा . ॥६॥

—x—x—x—x—x—